मार्च-अप्रैल, 2024 | वर्ष: 09 | अंक : 01-02
BIHBIL/2015/60354/RNI, GOVT. OF INDIA

विज्ञानमेव जयते
VIGYANMEV JAYATE

भारत का राष्ट्रीय हिन्दी-अंग्रेजी वैज्ञानिक मासिक पत्रिका
(national hindi-english monthly scientific magazine of india)

₹60/-

मुख्य बातें

- लोकसभा चुनाव 2024 एवं भारत के प्रधानमंत्री
- भारत रत्न सम्मान 2024, सर्वोचय नागरिक सम्मान के महान व्यक्तित्व
- भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता
- स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री
- स्वतंत्र भारत के लोकसभा अध्यक्ष
- 500 बर्ष पुराना ममला का हल एवं अयोघ्या राम मंदिर
- पृथ्वी पर मानव की उत्पति
- सेटेलाइट फोन क्या है
- विश्व बैंक का भारत पर कितना कर्ज है।
- जिलाधिकारी पूर्वी चम्पारण और लोकसभा निर्वाचन 2024 की तैयारी

Dr. Basudeo Kumar Sharma

वैज्ञानिक धर्म अपनाइये! *Follow Scientific Religion*   वैज्ञानिक भारत बनाइये! *Make Scientific India*

विज्ञानमेव जयते

"वैज्ञानिक बुनियाद पर भारत का भविष्य लिखते है हम"
We write the future of India on the basis of scientific

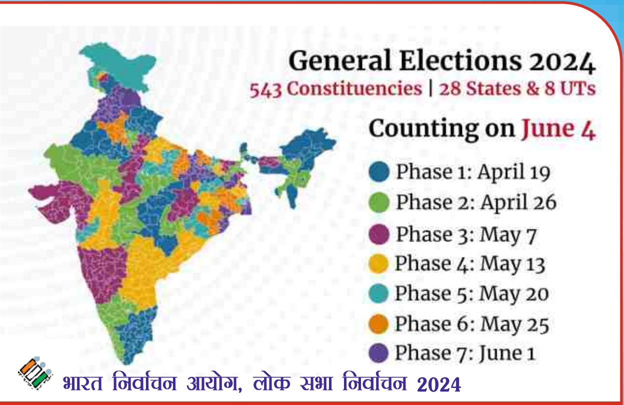

PM attends the commemoration ceremony of 90 years of the Reserve Bank of India at Mumbai, in Maharashtra on April 01, 2024.

लोक सभा निर्वाचन 2024 की तैयारियों को लेकर जिलाअधिकारी सौरव जोरवाल, D.D.C समीर सौरव जी, पुलिस अधीक्षक कान्तेश कु. मिश्रा, एसडीएम श्रेष्ठ अनुपम जी, जिला के सभी पत्रकारों के साथ प्रेस वार्ता करते हुए। दिनांक 29-4-2024 'स्थान : डा. राजेन्द्र प्रसाद भवन, समाहारणालय, मोतिहारी।'

विज्ञानमेव जयते की सभी संपत्तियां चल एवं अचल भारत सरकार की होगी, इसका कोई मालिक नहीं है।

विज्ञानमेव जयते के प्रकाशक को सर्वाधिकार सुरक्षित है।

1. वैज्ञानिक बाल / युवा पत्रकारों का राष्ट्रस्तर से लेकर ग्राम राजस्व स्तर तक मानव शक्ति श्रृंखला बनाना ।
2. 'विज्ञानमेव जयते' वैज्ञानिक धारावाहिक का निर्माण कार्य प्रगतिपथ पर पूर्ण रूपेण विज्ञान पर आधारित, रामानंद सागर द्वारा निर्मित रामायण एवं महाभारत जैसा रोचक, वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित वैज्ञानिक धारावाहिक है।
3. बाल / युवा विज्ञानी डाक्यूमेंटरी फिल्म, चलचित्र का निर्माण कार्य करना।
4. विज्ञानमेव जयते पुस्तकालय, वाचनालय, नृत्यालय, संगीतालय, रचनालय, शिलापट अभिलेख निर्माण, भविष्यवाणी भवन, रेडियो, दूरदर्शन चैनल की स्थापना एवं बाल / युवा कलाकारों को सम्मिलित करना, रोजगार उत्पन्न कर, बेरोजगारी दूर करना।
5. पत्र / पत्रिका / समाचार पत्र, उपन्यास, बाल पत्रिका का रचना करना, प्रेस क्लब की स्थापना कर, वैज्ञानिक पत्रकारिता का प्रसार कर, युवाओं को रोजगार से जोड़कर सक्षम भारतीय नागरिक बनाना।
6. 20 फरवरी से 28 फरवरी तक राष्ट्रीय विज्ञान सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन कर भारत के संपूर्ण क्षेत्रों में, राजस्व ग्राम, पंचायत स्तर, नगर पंचायत प्रखंड, अनुमंडल, जिला प्रमंडल, राज्य, विधानसभा, लोकसभा, केन्द्र शासित प्रदेशों एवं महानगरों में नियुक्त समाचार ब्यूरो संवाददाता, समाचार संपादक, प्रेस क्लब के अध्यक्ष / सचिव के नेतृत्व में विश्व स्तर पर वैज्ञानिक जागृति उत्पन्न हेतु तथा वैज्ञानिक मानव दर्शन को जन–जन तक पहुंचाने के लिए विज्ञानमेव जयते वचनबद्ध है।
7. विज्ञानमेव जयते भारतीय नागरिकों से अपील करता है कि 1947–2047 तक वैज्ञानिक चेतना वाला भारत बनाने एवं बाल / युवा पत्रकार तथा अन्य विधाओं से परिपूर्ण भारतीय छात्र / छात्राओं, अब चयनकर्ताओं (14–17 वर्ष) एवं (18–35 वर्ष) के युवाओं को मार्गदर्शित करने, प्रेत्साहित करने, मानव शक्ति का असाधारण अद्भुत वैज्ञानिक, सोच विकसित करने में सहयोग–सहायता सुरक्षा प्रदान करेंगे। हमें भारत पर भरोसा है।
8. राष्ट्रीय बाल / युवा पत्रकार चयन प्रतियोगिता परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रा–छात्राओं को 250 / – रूपये से लेकर 1500 / –पन्द्रह सौ रूपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी।
9. समाचार ब्यूरो संवाददाता, अन्य पद पर कार्यरत व्यक्तियों को 5000 / – पांच हजार मासिक से लेकर उनके श्रेणी के अनुसार 50,000 / – पचास हजार तक छात्रवृत्ति / प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। स्थायी सेवा देने वाले व्यक्तियों को भारत सरकार के पत्रकारिता अधिनियम के अन्तर्गत प्रतिमाह वेतन / मानदेय होगा। लक्ष्य न पुरा करने वाले पदाधिकारियों सामाचार ब्यूरो को किसी प्रकार की सुविधाएं एवं मानदय प्रदान नहीं किया जाएगा।

राष्ट्रिय अध्यक्ष
नेशनल वैज्ञानिक पत्रकारिता मीडिया महा संगठन (भारत)
राष्ट्रीय सामान्य कार्यकारिणी समिति
विज्ञानमेव जयते
RNI भारत सरकार, नई दिल्ली–110066

डॉ बासुदेव कुमार शर्मा

राष्ट्रीय प्रधान सम्पादक

विज्ञानमेव जयते

प्रधान संपादक की कलम से

संपादकीय/Editorial

आज भारत गणराज्य के महामहीम राष्ट्रपति आदरणीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी एवं यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हैं। मोदी सरकार की नाम लेते ही जम्मू- कश्मीर का केंद्र शासित प्रदेश होना एवं लगभग 500 वर्ष पुराना मामला राम जन्मभूमि, अयोध्या का रामलला का मंदिर बनना सनातन हिंदुओं के लिए 'गर्व' की बात है। भारत मोदीमय हो गया है, और भारतीय संविधान को लागू होते हुए 75 वर्ष पूर्ण हुए,भारत सरकार ने आजादी का अमृत महोत्सव भी बड़े धुम-धाम से मान चुका है। विदेशों में भी भारत को सक्षम भारत, शक्तिशाली भारत का गुणगान होने लगा है,भारतीयों का मानना है कि मोदी है तो सब कुछ मुमकिन है।

अब हम सभी भारतीय मोदी सरकार के नेतृत्व में 10 वर्ष बिता चुके हैं, इसके पहले 65 वर्षों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्षम सरकार रही है। आजादी दिलाने से लेकर चीन और पाकिस्तान से यु भी लड़ी कांग्रेस सरकार ने भारतीय मंत्रलयों की स्थापना से लेकर वैज्ञानिक प्रौद्योगिकरण तक का कार्य कांग्रेस सरकार ने की है, इसमें कहीं से दो राय नहीं है। आजाद भारत की बुनियाद कांग्रेस ही है, लेकिन कांग्रेस को वंशवाद ही समाप्ती के कगार पर पहुंचाया है, अब कांग्रेस का उदय होना मील का पत्थर साबित होगा- कारण है कि क्षेत्रेय पार्टियों का अपने-अपने राज्यों में अपना पकड़ होना तथा देश की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस को गठबंधान में चुनाव लड़ना निरंतर महंगा पड़ता रहेगा कारण कि सभी राजनैतिक पार्टियां 'उदय का सूरज' बनने के चक्कर में राजनीतिक सिद्धान्त खो दिया है। यदि आपको आगे बढ़ाना है, तो धार्म को धांधाा से, धंधा को राजनीति से जोड़ दीजिए, फिर एकक्षत्र शासन आपका ही होता हीं रहेगा। भारत में मोदी सरकार है, भाजपा, कांग्रेस, कम्यूनिस्ट राजद, जदयू एक राजनैतिक पार्टी है। श्री मोदी जी के नेतृत्व में 'इसरो' ने चांद पर पहुंचा, फिर चांद के पार, सूरज के अक्ष में एसएल-1 को भेज कर 'इसरो' के वैज्ञानिकों ने चांद से लेकर सूरज के अक्षीय वायु रेखा तक तिरंगा फहराया है, इसरो के वैज्ञानिकों को नमन है। भारत के प्रधानमंत्री का विज्ञान के क्षेत्र में अहम भुमिका है। वैज्ञानिकों को प्रधानमंत्री जी का पूर्ण सर्मथन प्राप्त है।

भारत में 18वीं लोकसभा चुनाव 2024 के अप्रैल और मई में होना है। लोकसभा चुनाव के लिए मतदान कुल सात चरणों में होगी। संविधाान में व्यवस्था है कि लोकसभा सदन के अधिकतम सदस्य संख्या 550 होगी लेकिन 530 सदस्य राज्यों का प्रतिनिधाित्व करेंगे,20 सदस्य संघ शाषित प्रदेशों का प्रतिनिधाित्व करेंगे, वर्तमान में सदन की सदस्य संख्या 543 है। फिर से मोदी सरकार ही बनेगी लेकिन विपक्ष भी मजबूत होगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 30 मार्च 2024 को बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर, पूर्व प्रधानमंत्री चौधारी चरण सिंह, भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री श्री लालख्रष्ण आडवाणी, पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव एवं एम. एस. स्वामीनाथन को भारत का 'सर्वोच्च नागरिक सम्मान' 'भारत रत्न' प्रदान कर एक नया इतिहास श्री मोदी जी ने लिखा है। इसके अलावे बिहार के जननायक कर्पूरी साहब को भारत रत्न प्रदान कर बिहार के राजनैतिक माहौल को अपनी तरफ खींच लिया है। ऐसा लगता है कि बिहार में लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा और राजद ही दिखाई देंगें अन्य पार्टियों के लिए कठिन से कठिन मेहनत कर आम मतदाता तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। आम मतदाता भी असमंजस में पड़े हुए हैं। एक तरफ सभी पार्टियों का दलदल है तो दूसरे तरफ निर्दलीयों का जनदल है। आखिर इस देश में क्या चाहती है आम जनता। क्या चाहिए इस देश को, नरेंद्र मोदी चाहिए या राहुल गांधाी चाहिए। लेकिन समय का मांग नरेंद्र मोदी ही है। राज्य स्तरीय क्षेत्रीये पार्टियों का पूरा शक्ति के साथ अपनी अपनी मजबूत सरकारे भी हो, लेकिन भारत के वर्चस्व एवं अखंडता के लिए एवं सनातन रक्षार्थ हेतु नरेंद्र मोदी ही विकल्प है। जैसा कि आमतौर पर भी देखा जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिष्ठा बढ़ा है। 480 साल पुरानी अयोध्या में राम मंदिर स्थापित करना, 1917 से लेकर 1947 तक अधिकृत जम्मू कश्मीर को अनुच्छेद 370 (34 **'A'**) को हटाकर भारत का अभिन्न अंग जम्मू कश्मीर को केंद्र शासित प्रदेश बनाना, ऐसे अदम्भय साहस के लिए श्री नरेन्द्र मोदी एवं गृहमंत्री अमित शाह जी को नमन करना आवश्यक है । भले ही हम आर्थिक संकट के घेरे में आ गए हैं लेकिन मामला वतन के सुरक्षा का है।

ऐसे में आप भी वैज्ञानिक धर्म अपनाइए , वैज्ञानिक भारत बनाईए ।।

BIHBIL/2015/60354/RNI, GOVT. OF INDIA

OUR BUREAU DETAILS

विज्ञानमेव जयते
भारत का राष्ट्रीय हिन्दी-अंग्रेजी वैज्ञानिक मासिक पत्रिका
(National Hindi-English Monthly Scientific Magazine of India)
मार्च-अप्रैल, 2024 | वर्ष: 09 | अंक : 1-2

NATIONAL GENERAL ASSEMBLY

DR.BASUDEO KUMAR SHARMA
PRIME EDITOR
NATIONAL PRESIDENT

MONIKA KUMARI
NEWS EDITOR
NATIONAL VICE PRESIDENT

MR. G.K. SHARMA
NATIONAL CHIF ADVISOR

SRI. BABALU SRIVASTAVA
NATIONAL NEWS ADVISOR

SRI. KRISHNA NANDAN
NATIONAL GENERAL SECRETARY

MR. SATYA PRAKASH JOHARI
NATIONAL NEWS EDITOR

RAJ KISHORE PD THAKUR
STATE PRESIDENT (BIHAR)

GIRDHARI LAL THAKUR
STATE PRESIDENT(JAMMU AND KASHMIR)

SARMILA JOHARI
STATE PRESIDENT (PUNJAB- CHANDIGARH)

KAMINI SEN
STATE PRESIDENT (MADHYA PRADESH)

RATNA PANDEY
STATE PRESIDENT (GUJRAT PRADESH)

Printed By :
Dr. Basudev Kumar Sharma
Vigyanmevajayete **Printus India,** Patna-3

Design By :
Sikandar Sah
Website : www.printusindia.com

Shatrughan Mahato
State News Bureau
(Bihar Pradesh)
Jagdish PD. Sahu
State news bureau
(madhya pradesh)
Hemant Kumar
State news bureau
(Jharkhand)
Josuwa Wijonamai
State news bureau
(Nagaland)
Roshan adhenmu lepcha
State news bureau
(uttarakhand)
Balram Sharma
State news bureau(Uttar Pradesh)

Sunita Bhatt
State news bureau
(odissa)
Simran Singh Swaraj
State news bureau
(Himachal Pradesh)
Deepa Pauldhals
State News bureau
(Tamilnadu)
Aakash Nandey
State news bureau (West Bengal)
Rohit Gautam
State News bureau
(Assam)
Rekha Kumari Thakur
State news bureau
(Sikkim)

Adv. Gajendra Singh
National Legal Advisor
(Supreme Court Delhi)
Adv. Ashok Sharma
Legal Advisor (Supreme Court Delhi)
Adv. Rameshwar Thakur
Legal Advisor (High court Patna Bihar)
Adv. Pawan Paswan
Legal Advisor (High court patna Bihar)
Adv. Nisha Thakur Legal Advisor (High court Delhi)
Adv. Nagendra Sahani
Legal Advisor (Civil court motihari, East Champaran Bihar)

Adv. Ved Prakash Sharma
Legal Advisor (Civil court khagariya Bihar)
Adv. Upendra Baitha
Legal Advisor (Civil court Motihari Bihar)
Adv. Krishna Thakur
Legal Advisor (Civil court Motihari Bihar)
Md. Shekh Hassim
Political Advisor (Bihar)
Ajay Bhushan Diwakar
Political Advisor (Bihar)
DR.Mantosh Kr. Sahani
Political Advisor Bihar.
Pappu Singh Nishad
Political Advisor Bihar
Rajesh Pal
Political Advisor (Bihar)

Registered Office :
The Prime Editor
Science House, Science Research & Education Centre
At. + P.o. : Bakhari, W.No.-12, P.s. : Kalyanpur, Via : Bakarpur,
Jagat, Distt. : East Champaran- 845413 Bihar (India)
Website: vigyanmevajayate.org
Email :L vigyanmevajayateworld@gmail.com
Mobile : +91-9470880005
All India : 9939073125 Delhi NCR

Delhi Office :
Om Basudeo Krishna Divine Foundation
Building No.-207, Officer Colony, Maidan Gadhi
Chhatarpur New Delhi- 110068
News Editor Office :
C-3/639B, Gali no 5 Near shiv chawk Nangli Vihar
extension part 3New delhi 110043

Bihar Level Committee
Sardar Kanhaiya Bhai Patel
District President,
West Champaran.
Deepak Kumar Satya
District President
East Champaran
Manish Raj
District advertisment
Incharge East Champaran
Ashok Prasad
Life member Magazine
West Champaran
Rajan Kumar
District Secretary,Reporter
West Champaran
Renu Kumari
District office Incharge
East Champaran
Ravina Kumari
District News Anchor
East Champaran
Ashok Kumar Ram
District News bureau
Muzaffarpur

Rohit Kumar Yadav
District President
Arah - Bhojpur
Mangal Kumar Mahato
District President
Bhagalpur
Sunita Pandey
District President Shivhar
Rakesh Kundaliya
District President
Sitamadhi
DR. Sunil Pd Thakur
District President
Chhapra (Saran)
Pawan Kumar
District President
Bodh Gaya
Priya Singh
News Anchor Allahabad
Khushboo Gupta
District News bureau
Kushinagar (UP)
Gaurangi Mishra
Science Films Actress
Indore Bhopal

WEST CHAMPARAN

Shailesh Mishra
Life Member
Jaikishor Sharma
Life Member
Avinash Kushwaha
Life Member

EAST CHAMPARAN
Sanjay Kumar Mehta
News bureau Incharge
Baibhav Kumar Pandey
Block President, Areraj
Mukesh Paswan
News bureau,
Sangrampur
Anshu Kumar Pandey
News bureau Raxoul
Devashish Ranjan
News bureau, addapur
Md. Wazul Alam
News bureau, Piprakothi
Mausam Kumari
News bureau, Kesariya
Raushan Raj
News bureau, Chakia.
Raja Kumar Sharma
News bureau, Kalyanpur
Balindra KR. Yadav
News Reporter
Kalyanpur.
Chanchal Kr. Ram
News Reporter, Kotawa

MUZAFFARPUR
Manisha Kumari
Block President,
sahebganj
Nazeem Hussain
Block President, Saraiya
Sanjana Kumari
Block President, Marwan
Saniya
Panchayat News bureau
Md. Tajuddin
Panchayat News bureau
Golub Kumar
Panchayat News bureau
Niddhi Kumari
Panchayat News bureau

प्रकाशक के पास सर्वाधिकार / सुरक्षित / PUBLISHER'S ALL RIGHT@ RESERVED-
''विज्ञानमेव जयते'' भारत का राष्ट्रीय हिंदी अंग्रेजी वैज्ञानिक मासिक पत्रिका ,भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के अधीन निबंधित है। विज्ञानमेव जयते की सभी चल अचल संपत्तियां भारत सरकार की है इसका कोई मालिक नहीं है। इस पत्रिका में कार्यरत राष्ट्रीय स्तर, राज्य, प्रमंडल, जिला, अनुमंडल, प्रखंड, पंचायत समाचार ब्यूरो,प्रेस क्लब के सदस्य जो आजीवन सदस्य हैं, उन्हें उपलब्ध संसाधन एवं उनके उपलब्धियों, किए गए कार्यों के मूल्यांकन तथा पत्रिका द्वारा दिए गए लक्ष्य को पूरा करने के आधार पर सभी प्रकार का भत्ता, मानदेय ,वेतन दिया होगा। कार्य नहीं करने, लक्ष्य पूरा नहीं करने तथा किसी प्रकार की लापरवाही व्रतने पर विज्ञानमेव जयते द्वारा समाचार ब्यूरो या अन्य सदस्यों को किसी प्रकार की सुविधा प्रदान नहीं की जाएगी। विज्ञानमेव जयते के नियमावली के विरुद्ध कार्य करने पर एवं गलत आचरण करने पर बिना सूचना के किसी भी व्यक्ति को निष्कासित कर दिया जाएगा। / डॉ वासुदेव कुमार शर्मा राष्ट्रीय प्रधान संपादक , प्रकाशक, मुद्रक एवं विज्ञानमेव जयते डिजिटल ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस कंपनी लिमिटेड नई दिल्ली 110066. द्वारा मुद्रित एवं संपूर्ण भारत में प्रकाशित।/ विज्ञानमेव जयतेमें प्रकाशित सभी लेखों एवं कविताओं की जिम्मेवारी प्रकाशक, मुद्रक,संपादक पर नहीं होगी, इसमें प्रकाशित कोई भी आलेखध्कहानी किसी व्यक्ति के जीवन चरित्र से मिलता है तो यह संयोगवश है। इसमें प्रकाशित सभी समाचार एवं आलेख विज्ञानमेव जयते एवं सत्यमेव जयते पर आधारित है।ष वैज्ञानिक बुनियाद पर भारत का भविष्य लिखते हैं हमष सचाई ही मेरा प्रथम प्राथमिकता है। प्रकाशित तथ्य एवं सदस्यों की एवं आम नागरिक के समस्याओंधविवादों की निष्पादन एवं कानूनी कार्रवाई ,कानूनी सहायता , पूर्वी चंपारण बिहार के न्यायालय के समक्ष होगा।पत्राचारिता अधिनियम की संवैधानिक धारा सभी को मान्य होगा। **प्रकाशक**

“वैज्ञानिक बुनियाद पर भारत का भविष्य लिखते है हम”
We write the future of India on the basis of scientific

सेवा में,

सम्मानीय पाठक महोदय, नमस्ते

पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख, लेखक, कवि एवं समाचार ब्यूरो द्वारा लिखित होता है। इनके द्वारा दिए गए रचना, कहानी हम प्रकाशित करने हेतु सेवारत हैं, किसी व्यक्ति एवं विभाग को जीवन चरित्र या अभिलेख से संयोग से मिलान कर सकता है, इसमें प्रकाशक, मुद्रक संपादक की कोई जिम्मेदारी नहीं है, हम तथ्यों को प्रकाशित करने हेतु वचनबद्ध हैं, अपना लेख हमें लिखकर ईमेल कर सकते हैं।

हम निःशुल्क प्रकाशित करने का वचन देते हैं।

प्रधान संपादक

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
समूद्र कैसे बना? यह कितना गहरा है?	02
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो	03-04
बौद्ध धर्म के पतन का कारण	05
‘मुसलमान धर्म में खतना की प्रथा ‘कब’ से और ‘क्यों’ शुरू हुई?	06
स्तन कैंसर एक गंभीर समस्या	07-08
सैटेलाइट फोन क्या है?	09-10
धर्म और विज्ञान	12
पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति कब और कैसे हुई?	13-17
भारतीय पुलिस का इतिहास	18
भारत और चीन की तुलना करने के लिए 13 पैरामीटर	19-21
एक नजर में भारत	22-23
व्यावहारिक प्रेम	24
‘जन सुराज अभियान’ बिहार में एक नई क्रांति की लहर	25-26
‘जिन्दगी’	27
सदस्यता का नियम एवं विज्ञापन	28
लोकसभा निर्वाचन की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने की प्रेस वार्ता	29
प्रसिद्ध आधुनिक भारतीय वैज्ञानिक और उनकी उपलब्धियाँ	30
राम मंदिर उद्घाटन और उत्साह	31
आजाद भारत के प्रधान मंत्री की सूची	32-33
आजाद भारत के राष्ट्रपति	34-35
भारत रत्न पुरस्कार	36-37
भारत के नोबेल पुरस्कार विजेता	38-39
भारत के लोक सभा अध्यक्ष	40
पैकिंग आटा में क्या मिलाया जाता है, जिससे वह ज्यादा दिन खराब नहीं होता?	41
सभी धर्म बंधुओं को नमो बुद्धाय, जय भीम!!	42
पत्रकार एवं पत्रकारिता	43
फोटो हैलरी	44
सद गुरू : 2015 में, मैं दिल्ली था	45

समूद्र कैसे बना? यह कितना गहरा है?

आज भी धरती पर ऐसी बहुत सी चीजे है जो हमारे लिए रहस्यमय है उनमे समुन्द्रें(मं) भी शामिल है। हम यह भी नहीं जानते की ये कितने पुराने है। पर ये पृथ्वी के शुरुआती दौर में नहीं थे।
वैज्ञानिको का मानना है की आज से लगभग 50 से 100 करोड़ साल पहलें मं की उत्पति हुई थी। जब पृथ्वी का जन्म हुआ तो पृथ्वी एक आग का गोला थी। और जैसे ही पृथ्वी ठंडी होना शुरू हुई इसके चारो तरफ गैस के ठंडे बादल फैलने लगे। ठंडे होने की वजह से इस बादलो में काफी मात्रा में पानी भर गए। जिसके कारण कई सालो तक बारिश हुई जिसकी वजह से पृथ्वी पर बने विशाल गड्ढे पानी से भर गए। जिसे समुद्रें(मं) कहते है।'

—**मनिषा कुमारी** अध्यक्ष, विज्ञानमेव जयते प्रेसक्लब साहेबगंज, मुजफ्फरपुर बिहार।

'पृथ्वी पर मौसम क्यों बदलते है' (Why does the weather change on earth)

हमारी पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है जिसका अक्षीय झुकाव 23.44 डिग्री है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है तो कुछ झुकी होने के कारण सूर्य की किरणे कुछ स्थानों पर सीधी और कुछ स्थानों पर तिरछी पड़ती है जिसके कारण मौसमॅ(मंजीमत) बदलते रहते है। जिस जगह सूर्य की किरणे सीधी पड़ती है वहा मौसम गर्म होता है और जहा सूर्य की किरणे तिरछी पड़ती है वहा मौसम ठंडा या नम रहता है। यह प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है।

सबसे ज्यादा गर्मी कहाँ पड़ती है
(Which is the hottest place in the world)

'डानाकिल डिप्रेशन' जो उत्तरी अफीका देश के इथियोपिया में स्थित है यहाँ सबसे ज्यादा गर्मी पड़ती है। इसका एक पड़ोसी देश इरिट्रिया भी सामिल है। डानाकिल डिप्रेशन' इथोपिया के अफार इलाके में पड़ता है। यह दुनिया का सबसे गर्म ,सुखा और धरती पर सबसे नीची जगह है। यहाँ मौसम बेहद गर्म होता है।
इसको दुनिया का सबसे गर्म जगह इस लिए कहा जाता है क्योकि यहाँ साल भर का औसतन तपमान 34.4 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रहता है। धरती पर जो और भी गर्म जगहे है वहा औसतन तापमान इतना नहीं रहता है कभी कभी बहुत ज्यादा गर्मी पड़ती है। मगर डानाकिल डिप्रेशन में औसतन तापमान 34.4 डिग्री सेल्सियस के आस पास रहता है। यहाँ बारिश भी बहुत कम होती है।
सबसे ज्यादा ठंडी कहा पड़ती है(ूमितम पे जीम बवसकमेज चसंबम पद ूवतसक)
'ओइमयाकॉन' जो की रूस में पड़ता है यहाँ पर सबसे ज्यादा ठंडी पड़ती है। रूस के साइबेरिया इलाके में यह गावं स्थित है।
ओइमयाकॉन गावं रूस की राजधानी मास्को से 3000 मील दूर स्थित है। 500 की आबादी वाले इस गावं का औसतन तापमान —50 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। अब तक इस जगह का सबसे ठंडा तापमान —67 डिग्री सेल्सियस रहा है।ॽ

राजा कुमार शर्मा
प्रखण्ड समाचार व्यूरो कल्याणपुर
(विज्ञानमेव जयते प्रेसक्लब, पूर्वी चम्पारण बिहार)

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो
(INDIA SPACE RESEARCH ORGANIZATION) ISRO

चन्द्रयान–3 ने 23 अगस्त शाम 6रू04 पर सफलतापूर्वक चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करी। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि चंद्रयान–3 मिशन की अवधि 14 दिन है, जो एक चंद्र दिवस के बराबर है।1

मिनी–एसएआर नामक एक अन्य पेलोड ने दक्षिणी ध्रुव के निकट क्रेटरों के भीतर स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों में पानी–बर्फ के उपसतह जमा का पता लगाने में मदद की। नासा द्वारा विकसित एक तीसरा पेलोड जिसे मून मिनरलॉजी मैपर या एम3 कहा जाता है, ने भी चंद्रमा की सतह पर इन अणुओं का पता लगाने में मदद की।1 दिन पहले चंद्रयान–3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में, विशेष रूप से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट एक क्षेत्र में उतरा है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण अत्यधिक वैज्ञानिक रुचि का है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र का एक प्रमुख पहलू स्थायी रूप से छाया वाले गड्ढों की उपस्थिति है।2 दिन पहले मिनी–एसएआर नामक एक अन्य पेलोड ने दक्षिणी ध्रुव के निकट क्रेटरों के भीतर स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों में पानी–बर्फ के उपसतह जमा का पता लगाने में मदद की। नासा द्वारा विकसित एक तीसरा पेलोड जिसे मून मिनरलॉजी मैपर या एम3 कहा जाता है, ने भी चंद्रमा की सतह पर इन अणुओं का पता लगाने में मदद की।

चंद्रयान–3 का विक्रम लैंडर स्थानीय समयानुसार 18रू04 बजे (12रू34 ळडज) योजना के अनुसार सफलतापूर्वक नीचे उतर गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के यह कहने पर कि ष्भारत अब चंद्रमा पर हैष्, पूरे देश में जश्न मनाया जा रहा है। ष्हम वहां पहुंच गए हैं जहां कोई अन्य देश नहीं पहुंच सका।

मिशन के महत्वपूर्ण फ्लाइट ऑपरेशन के दौरान, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) द्वारा संचालित यूरोपीय अंतरिक्ष ट्रैकिंग (एस्ट्रैक) एक अनुबंध के अंतर्गत इस मिशन को सपोर्ट प्रदान करेगी। चंद्रयान–3 को 14 जुलाई 2023 शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से दोपहर 2रू35 मिनट पर लॉन्च किया गया।

यह मिशन चंद्रयान–2 की अगली कड़ी है, क्योंकि पिछला मिशन सफलता पूर्वक चाँद की कक्षा में प्रवेश करने के बाद अंतिम समय में मार्गदर्शन सॉफ्टवेयर में गड़बड़ी के कारण सॉफ्ट लैंडिंग में विफल हो गया था, सॉफ्ट लैंडिंग का पुनः सफल प्रयास करने हेतु इस नए चंद्र मिशन को प्रस्तावित किया गया था। चंद्रयान–3 का लॉन्च सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (शार), श्रीहरिकोटा से 14 जुलाई, 2023 शुक्रवार को भारतीय समय अनुसार दोपहर 2रू35 बजे हुआ था। यह यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास की सतह पर 23 अगस्त 2023 को भारतीय समय अनुसार सायं 06रू04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतर चुका है।इसी के साथ भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला पहला और चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बन गया।

चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की काबिलियत प्रदर्शित करने के लिए चंद्रयान कार्यक्रम के दूसरे चरण में, इसरो ने एक ऑर्बिटर, एक लैंडर और एक रोवर से युक्त लॉन्च वाहन मार्क –3 (एलवीएम 3) नामक लॉन्च वाहन पर चंद्रयान–2 लॉन्च किया। प्रज्ञान रोवर को तैनात करने के लिए लैंडर को सितंबर, 2019 को चंद्र सतह पर टचडाउन करना था।इससे पहले चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर एक मिशन पर जापान के साथ सहयोग के बारे में रिपोर्टें सामने आई थीं, जहां भारत लैंडर प्रदान करता जबकि जापान लॉन्चर और रोवर दोनों प्रदान करने वाला था। मिशन में साइट सैंपलिंग और चाँद पर रात के समय सर्वाइव करने की टेक्नोलॉजी शामिल करने की भी संभावनाएँ थीं। विक्रम लैंडर की बाद की विफलता के कारण 2025 के लिए जापान के साथ साझेदारी में प्रस्तावित चंद्र ध्रुवीय खोजबीन मिशन (स्न्च्म्) के लिए आवश्यक लैंडिंग क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए एक और मिशन (चंद्रयान–3) करने का प्रस्ताव दिया गया। मिशन के महत्वपूर्ण फ्लाइट ऑपरेशन के दौरान, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) द्वारा संचालित यूरोपीय अंतरिक्ष ट्रैकिंग (एस्ट्रैक) एक अनुबंध के अंतर्गत इस मिशन को सपोर्ट प्रदान करेगी।

चंद्रयान–3 को 14 जुलाई 2023 शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से दोपहर 2रू35 मिनट

पर लॉन्च किया गया।

उद्देश्य

इसरो ने चंद्रयान–3 मिशन के लिए तीन मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए हैं, जिनमें शामिल हैंरू

1.लैंडर की चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग कराना।

2.चंद्रमा पर रोवर की विचरण क्षमताओं का अवलोकन और प्रदर्शन।

3.चंद्रमा की संरचना को बेहतर ढंग से समझने और उसके विज्ञान को अभ्यास में लाने के लिए चंद्रमा की सतह पर उपलब्ध रासायनिक और प्राकृतिक तत्वों, मिट्टी, पानी आदि पर वैज्ञानिक प्रयोग करना।

वित्तपोषण

दिसंबर 2019 में, यह बताया गया कि इसरो ने परियोजना की प्रारंभिक फंडिंग के लिए 75 करोड़ (₹+10.95 मिलियन) का अनुरोध किया था, जिसमें से 60 करोड़ (₹+8.76 मिलियन) मशीनरी, उपकरण और अन्य पूंजीगत व्यय की पूर्ति के लिए होगा, जबकि शेष 15 करोड़ (₹+2.19 मिलियन) राजस्व व्यय मद में माँगा गया है।

परियोजना के अस्तित्व की पुष्टि करते हुए, इसरो के पूर्व अध्यक्ष के. सिवन ने कहा कि अनुमानित लागत लगभग 615 करोड़ (₹+89.79 मिलियन) होगी।

चन्द्रयान (अथवा चंद्रयान–१) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम के अंतर्गत द्वारा चंद्रमा की तरफ कूच करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष यान था। इस अभियान के अन्तर्गत एक मानवरहित यान को २२ अक्टूबर, २००८ को चन्द्रमा पर भेजा गया और यह ३० अगस्त, २००९ तक सक्रिय रहा। यह यान ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचन यान (पोलर सेटलाईट लांच वेहिकल, पी एस एल वी) के एक संशोधित संस्करण वाले राकेट की सहायता से सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से प्रक्षेपित किया गया। इसे चन्द्रमा तक पहुँचने में ५ दिन लगे पर चन्द्रमा की कक्षा में स्थापित करने में १५ दिनों का समय लग गया। चंद्रयान ऑर्बिटर का मून इम्पैक्ट प्रोब (डप्च) 14 नवंबर 2008 को चंद्र सतह पर उतरा, जिससे भारत चंद्रमा पर अपना झंडा लगाने वाला चौथा देश बन गया।

चंद्रयान–२ या चंद्रयान द्वितीय, चंद्रयान–1 के बाद चन्द्रमा पर खोजबीन करने वाला दूसरा अभियान है, जिसे इसरो ने विकसित किया है।अभियान को जीएसएलवी मार्क 3 प्रक्षेपण यान द्वारा प्रक्षेपित (लॉन्च) किया गया। इस अभियान में भारत में निर्मित एक चंद्र ऑरबिटर, एक रोवर एवं एक लैंडर शामिल हैं। इन सब का विकास इसरो द्वारा किया गया है। भारत ने चंद्रयान–2 को 22 जुलाई 2019 को श्रीहरिकोटा रेंज से भारतीय समयानुसार दोपहर 02रू43 बजे सफलता पूर्वक प्रक्षेपित किया।

लूना 25 रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोस्मोस द्वारा चांद पर भेजा गया लैंडर मिशन था। जो चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास बोगुस्लाव्स्की क्रेटर पर उतरने वाला था। प्रारंभ में इसे लूना–ग्लोब लैंडर कहा गया था परंतु 1970 के दशक में शुरू हुए सोवियत लूना कार्यक्रम की निरंतरता को दर्शाने के लिए इसका नाम बदलकर लूना 25 कर दिया गया, हालांकि यह अभी भी लूना–ग्लोब चंद्र अन्वेषण (एक्सप्लोरेशन) कार्यक्रम का हिस्सा है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद यह पहला चंद्र खोजबीन अभियान है जिसे रूसी अंतरिक्ष एजेंसी रोस्कोसमोस ने चंद्रमा पर भेजा गया था। अगर यह सॉफ्ट लैन्डिंग में सफल होता तो यह चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला अंतरिक्ष यान हो सकता था।

चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण मिशन (स्नदंत च्वसंत म्•चसवतंजपवद डपेेपवद) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और जापान एयरोस्पेस अन्वेषण एजेंसी (जाक्सा) द्वारा एक रोबोट चंद्र मिशन अवधारणा है जो 2024 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र के लिए एक चंद्र रोवर और लैंडर भेजेगा।जाक्सा द्वारा एच3 रॉकेट और रोवर प्रदान करने की संभावना है जबकि इसरो लैंडर के लिए जिम्मेदार होगा।

इसरो का इतिहास

इसरो ने प्री–फेज ए, फेज ए अध्ययन के लिए दिसंबर 2017 में एक कार्यान्वयन व्यवस्था (आईए) पर हस्ताक्षर किए और पानी के लिए चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्रों का पता लगाने के लिए जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (जेएक्सए) के साथ मार्च 2018 में व्यवहार्यता रिपोर्ट पूरी की। एक संयुक्त चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण मिशन (स्न्च्म्) के साथ जिसे 2025 से पहले लॉन्च नहीं किया जाएगा। इसरो और श्र।ग्। ने दिसंबर 2018 में संयुक्त मिशन परिभाषा समीक्षा (श्रडक्त) आयोजित की। 2019 के अंत तक, श्र।ग्। ने अपनी आंतरिक परियोजना तैयारी समीक्षा समाप्त की।

चूंकि चंद्रयान –2 का लैंडर सितंबर 2019 में अपने लैंडिंग प्रयास के दौरान चंद्रमा पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, इसलिए भारत ने स्न्च्म् के लिए आवश्यक लैंडिंग क्षमताओं को प्रदर्शित करने के एक दोहरा प्रयास के रूप में चंद्रयान –3 नामक एक नए चंद्र मिशन का अध्ययन करना शुरू कर दिया।

24 सितंबर 2019 को, श्र।ग्। और छ।ै। के एक संयुक्त बयान में छ।ै। की भागीदारी की संभावना पर भी चर्चा की गई।

श्र।ग्। ने 2021 की शुरुआत में अपना घरेलू सिस्टम रिक्वायरमेंट रिव्यू (त्त्) पूरा किया। अप्रैल 2023 में, स्न्च्म् वर्किंग ग्रुप 1 वादा किए गए उम्मीदवार साइटों पर लैंडिंग साइट विश्लेषण की जानकारी, चंद्रमा पर लैंडर और रोवर की स्थिति का अनुमान लगाने के तरीकों, कमांड और टेलीमेट्री के लिए ग्राउंड एंटेना की जानकारी साझा करने के लिए भारत आया।

दल

इसरो अध्यक्षः एस. सोमनाथ , मिशन निदेशकः एस. मोहनकुमार, सहायक मिशन निदेशकः जी. नारायणन, परियोजना निदेशकः पी. वीरमुथुवेल, उप परियोजना निदेशकः कल्पना. के के , वाहन निदेशकः बीजू सी. थॉमस।

बौद्ध धर्म के पतन का कारण

भारत के बौद्ध धर्म के पतन का कारण भी बना। व्यक्तिगत धर्म के तौर पर बौद्ध धर्म के सिद्धांत बहुत अच्छे हैं। मेरा मानना है कि इसे धर्म मानने से भारत का सामूहिक पतन हुआ।

बाकी बौद्ध धर्म धीरे–धीरे रूढ़ीवादी हिंदू धर्म का हो गया। जहां चमत्कार के लिए कोई जगह नहीं थी, वहां तंत्र मंत्र वाली अलग शाखा ने बौद्ध धर्म में जन्म ले लिया।

स्त्रियों के संघ में प्रवेश पर महात्मा बुद्ध ने पाबंदी लगाई थी, मगर उनके ही जीवनकार में इतना विरोध हुआ कि उनको स्त्री प्रवेश की अनुमति देनी पड़ी

बौद्ध धर्म कालातंर में राजनीतिक षड्यंत्रों में लिप्त हो गया। उसके खुद के कई टुकड़े हो गई।

बौद्ध धर्म में हिंदू धर्म वाली सारी कमियां दिखने लगी। उसी दौरान आदि गुरु शंकराचार्य ने हिंदू धर्म की कमियों को दूर करने का बीड़ा उठा लिया। सारे देश में घूम–घूम कर उन्होंने शास्त्रार्थ में हर विद्वान को परास्त करके हिंदू धर्म को रूढियों से मुक्त करने का सफल प्रयास किया।

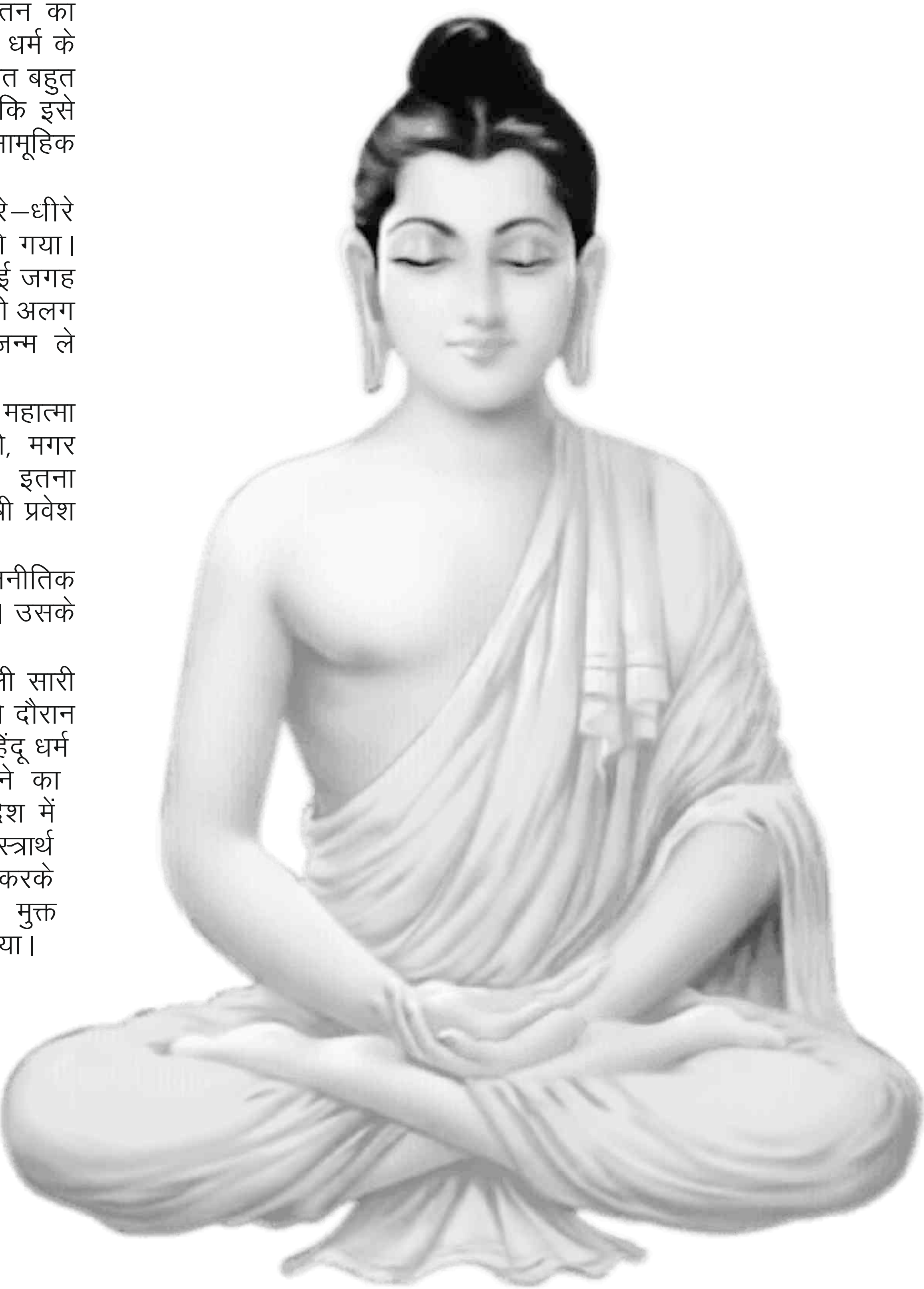

'मुसलमान धर्म में खतना की प्रथा 'कब' से और 'क्यों' शुरू हुई?

खतना पर कोरा पर कम से पचास बार जवाब दिया जा चुका है। लेकिन खतना पर लोगों की जिज्ञासा अभी भी बनी हुई है।

खतना मुसलमानों इसाईयों (सीमित) और यहूदियों में प्रचलित एक धार्मिक अनुष्ठान है जिसमें पुरुष के शिश्न के अग्र भाग के ऊपर की त्वचा शल्यक्रिया के बाद हटा दी जाती है। ऊपर का चित्र देखें।

कुछ रोचक बातें खतना के बारे में:–

खतना सिपाहियों के द्वारा भी करवाया जाता है कुछ विशिष्ट सुरक्षा समूहों में । स्वच्छता की दृष्टि से।

खतना करवाये हुए पुरुषों में सिर्फ68: ही मुसलमान हैं।

खतना करवाने से एड्स से बचने की संभावना 5: बढ़ जाती है।

खतना करवाने से स्वच्छता 20: बेहतर हो जाती है।

शारीरिक संबंधों मे आवश्यक संवेदनशीलता में 25: की कमी आ जाती है। यह प्रकृति के विरुद्ध है।

यह मानवाधिकार उलंघन का मामला है लेकिन उठाये कौन?

अफ्रीका के कुछ भागों में, अग्र–त्वचा ब्राण्डी में डुबोकर मरीज द्वारा व खतना करने वाले व्यक्ति द्वारा खाई जा सकती है या पशुओं को खिलाई जा सकती है।

यहूदी कानून के अनुसार, ब्रिट मिलाह (ठतपज उपसी) के बाद अग्र–त्वचा को दफना दिया जाना चाहिये।

कुछ अफ्रीकी देशों में कटी हुई त्वचा से धार्मिक उपयोग में आने वाली थैलियां भी बनाई जाती हैं।

क्या मनुष्य के गुणसूत्रों में कुछ बदलाव करके यह संभव है कि अनावश्यक त्वचा शरीर द्वारा बनाई ही न जाय? इस पर भी रिसर्च हो रही है।

खतना करने के नये तरीके भी खोजे गये हैं जिसमें दर्द कम होता है और खून भी नहीं बहता। लेकिन उन्हें पसंद नहीं किया जाता।

पूरी प्रक्रिया वैज्ञानिक है। सऊदी अरबिया के रेगिस्तानों में स्वच्छता के लिए बहुत लाभप्रद ।

कब से खतने की प्रथा आरम्भ हुई? प्रागैतिहासिक काल की गुफा चित्रों में

'आज मैं आपको बताऊंगी दिमाग को काबू करने के कौन-कौन से 5 उपाय हैं?

1.) अपने आप से हमेशा प्यार करें, क्योंकि जब तक आपको खुद से प्यार नहीं होगा तब तक आप किसी भी काम को अच्छे से नहीं कर पाएंगे।

2.) रोज रात को सोने से पहले 20 मिनट तक अपनी पसंद के 2,3 गाने जरूर सुने इससे आपका माइंड फ्रेश होगा और आपको सुबह जल्दी उठने में परेशानी नहीं होगी।

3.) हमेशा खुश रहें इसके लिए आप 30 मिनट तक कॉमेडी वीडियो भी देख सकते हैं। या कोई आप एक अच्छी नॉलेज वाली बुक पढ़ सकते हैं।

4.) रोज 8 घंटे की नींद जरूर ले लें अगर आप ऐसा रोज करते हैं तो आपको किसी भी काम में अगले दिन आलस नहीं आएगा, और आप अपने उस काम को अच्छी तरह से कर पाएंगे।

5.) हमेशा सकारात्मक सोच रखें, कभी भी अपने आप को दूसरे के साथ कंपेयर ना करें कि उसके पास यह सब है मेरे पास नहीं है, जो आपके पास नहीं है उसके प्रति दिल लगाकर किसी एक स्किल्स पर काम करें आपके पास भी वह सब कुछ हो जाएगा जो आज नहीं है।श

स्तन कैंसर एक गंभीर समस्या

स्तन कैंसर के कारण 2022 में वैश्विक स्तर पर 670,000 मौतें हुईं।

लगभग, 'आधे स्तन कैंसर' महिलाओं में होते हैं, जिनमें लिंग और उम्र के अलावा कोई विशिष्ट जोखिम कारक नहीं होता है।

- 2022 में 185 में से 157 देशों में स्तन कैंसर महिलाओं में सबसे आम कैंसर था।
- स्तन कैंसर दुनिया के हर देश में होता है।
- लगभग 0.5–1ः स्तन कैंसर पुरुषों में होते हैं।

स्तन कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसमें असामान्य स्तन कोशिकाएं नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं और ट्यूमर का रूप ले लेती हैं। यदि ध्यान न दिया जाए तो ट्यूमर पूरे शरीर में फैल सकता है और घातक हो सकता है। स्तन कैंसर कोशिकाएं दूध नलिकाओं औरध्या स्तन के दूध पैदा करने वाले लोबूल के अंदर शुरू होती हैं। प्रारंभिक रूप (स्वस्थाने) जीवन के लिए खतरा नहीं है और प्रारंभिक अवस्था में इसका पता लगाया जा सकता है। कैंसर कोशिकाएं आस–पास के स्तन ऊतकों (आक्रमण) में फैल सकती हैं। इससे ट्यूमर बनता है जो गांठ या मोटा होने का कारण बनता है। आक्रामक कैंसर आस–पास के लिम्फ नोड्स या अन्य अंगों (मेटास्टेसिस) में फैल सकता है। मेटास्टेसिस जीवन के लिए खतरा और घातक हो सकता है। उपचार व्यक्ति, कैंसर के प्रकार और उसके फैलाव पर आधारित होता है। उपचार में सर्जरी, विकिरण चिकित्सा और दवाएं शामिल हैं।

समस्या का दायरा

2022 में, वैश्विक स्तर पर 2.3 मिलियन महिलाओं में स्तन कैंसर का पता चला और 670,000 मौतें हुईं। स्तन कैंसर दुनिया के हर देश में महिलाओं में युवावस्था के बाद किसी भी उम्र में होता है, लेकिन बाद के जीवन में इसकी दर बढ़ती है।

वैश्विक अनुमानों से मानव विकास के अनुसार स्तन कैंसर के बोझ में भारी असमानताएं सामने आती हैं। उदाहरण के लिए, बहुत ऊंचे मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) वाले देशों में, 12 में से 1 महिला को अपने जीवनकाल में स्तन कैंसर का पता चलेगा और 71 में से 1 महिला की इससे मृत्यु हो जाती है।

इसके विपरीत, कम एचडीआई वाले देशों मेंय जबकि 27 में से केवल 1 महिला को अपने जीवनकाल में स्तन कैंसर का पता चलता है, 48 में से 1 महिला की इससे मृत्यु हो जाती है।

जोखिम में कौन है ?

महिला लिंग स्तन कैंसर का सबसे मजबूत जोखिम कारक है। लगभग 99ः स्तन कैंसर महिलाओं में होते हैं और 0.5–1ः स्तन कैंसर पुरुषों में होते हैं। पुरुषों में स्तन कैंसर का उपचार महिलाओं के लिए प्रबंधन के समान सिद्धांतों का पालन करता है।

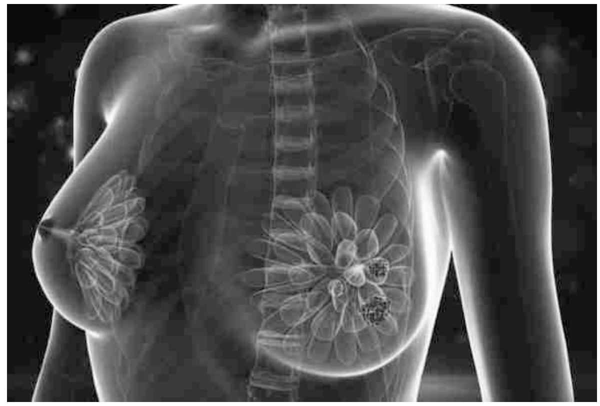

कुछ कारक स्तन कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं जिनमें बढ़ती उम्र, मोटापा, शराब का हानिकारक उपयोग, स्तन कैंसर का पारिवारिक इतिहास, विकिरण जोखिम का इतिहास, प्रजनन इतिहास (जैसे कि मासिक धर्म शुरू होने की उम्र और पहली गर्भावस्था की उम्र), तंबाकू का उपयोग और शामिल हैं। रजोनिवृत्ति के बाद हार्मोन थेरेपी। लगभग आधे स्तन कैंसर उन महिलाओं में विकसित होते हैं जिनमें लिंग (महिला) और उम्र (40 वर्ष से अधिक) के अलावा कोई पहचानने योग्य स्तन कैंसर जोखिम कारक नहीं होता है। स्तन कैंसर के पारिवारिक इतिहास से स्तन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है, लेकिन स्तन कैंसर से पीड़ित अधिकांश महिलाओं में इस बीमारी का पारिवारिक इतिहास ज्ञात नहीं होता है। ज्ञात पारिवारिक इतिहास के अभाव का मतलब यह नहीं है कि महिला को जोखिम कम है। कुछ वंशानुगत उच्च पैठ वाले जीन उत्परिवर्तन स्तन कैंसर के खतरे को बहुत बढ़ा देते हैं, जिनमें सबसे प्रमुख जीन ठत्ब्।1, ठत्ब्।2 और च्।स्ठ–2 में उत्परिवर्तन हैं। जिन महिलाओं में इन प्रमुख जीनों में उत्परिवर्तन पाया जाता है, वे जोखिम कम करने की रणनीतियों पर विचार कर सकती हैं, जैसे कि दोनों स्तनों को सर्जिकल रूप से हटाना या कीमोप्रिवेंशन रणनीतियों को अपना होता है।

संकेत और लक्षण

जब कैंसर अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है तो अधिकांश लोगों को कोई लक्षण अनुभव नहीं होगा, इसलिए शीघ्र पता लगाने का महत्व है। स्तन कैंसर में लक्षणों का संयोजन हो सकता है, खासकर जब यह अधिक उन्नत दर्द हो , या टीशन हो । स्तन कैंसर के लक्षणों में शामिल हो सकते हैंरू स्तन में गांठ या मोटा होना, अक्सर बिना दर्द के स्तन के आकार, आकार या स्वरूप में परिवर्तन त्वचा में गड्ढे, लालिमा, गड्ढे या अन्य परिवर्तन षनिपलष की उपस्थिति या निपल के आसपास की त्वचा में परिवर्तन (एरिओला) निपल से असामान्य या खूनी तरल पदार्थ। असामान्य स्तन गांठ वाले लोगों को चिकित्सा देखभाल लेनी चाहिए, भले ही गांठ में दर्द न हो। अधिकांश स्तन गांठें कैंसर नहीं होती हैं,स्तन का आराम से सहलावें या धीरे–धीरे दबाने से गांठ नहीं बनता है, आराम के लिए यह कार्य अपने पार्टनर से भी करा सकते है, व्यायाम आवश्यक है । कैंसरग्रस्त स्तन गांठों का सफलतापूर्वक इलाज होने की संभावना तब अधिक होती है जब वे छोटी होती हैं और स्तन के आस–पास के षलिम्फ नोड्सष में नहीं फैली होती हैं। स्तन कैंसर शरीर के अन्य क्षेत्रों में फैल सकता है और अन्य लक्षणों को ट्रिगर कर सकता है। अक्सर, फैलने का सबसे आम पहला पता लगाने योग्य स्थान बांह के नीचे लिम्फ नोड्स में होता है, हालांकि कैंसर युक्त लिम्फ नोड्स होना संभव है जिन्हें महसूस नहीं किया जा सकता है। समय के साथ, कैंसर कोशिकाएं फेफड़ों, यकृत, मस्तिष्क और हड्डियों सहित अन्य अंगों में फैल सकती हैं। एक बार जब वे इन स्थानों पर पहुंच जाते हैं, तो हड्डी में दर्द या सिरदर्द जैसे कैंसर से संबंधित नए लक्षण प्रकट हो सकते हैं।

चिकित्सीय इलाज (DOCTORY TREATMENTS)

स्तन कैंसर का उपचार कैंसर के उपप्रकार और यह स्तन के बाहर लिम्फ नोड्स (चरण प्प या प्प्प) या शरीर के अन्य भागों (चरण प्ट) तक कितना फैल गया है, पर निर्भर करता है।डॉक्टर कैंसर के वापस आने (पुनरावृत्ति) की संभावना को कम करने के लिए उपचारों को जोड़ते हैं। इसमे

शामिल हैरू

स्तन ट्यूमर को हटाने के लिए सर्जरी
स्तन और आसपास के ऊतकों में पुनरावृत्ति के जोखिम को कम करने के लिए विकिरण चिकित्सा
कैंसर कोशिकाओं को मारने और फैलने से रोकने के लिए दवाएं, जिनमें हार्मोनल थेरेपी, कीमोथेरेपी या लक्षित जैविक थेरेपी शामिल हैं।
स्तन कैंसर के लिए उपचार अधिक प्रभावी होते हैं और यदि जल्दी शुरू किए जाएं और अंत तक ले जाएं तो बेहतर सहन किए जा सकते हैं। सर्जरी से केवल कैंसरग्रस्त ऊतक (जिसे लम्पेक्टोमी कहा जाता है) या पूरे स्तन (मास्टेक्टॉमी) को हटाया जा सकता है। कैंसर के फैलने की क्षमता का आकलन करने के लिए सर्जरी लिम्फ नोड्स को भी हटा सकती है। विकिरण चिकित्सा ष्स्तन ऊतकष औरध्या षलिम्फ नोड्सष में बचे हुए अवशिष्ट सूक्ष्म कैंसर का इलाज करती है और छाती की दीवार पर कैंसर के दोबारा होने की संभावना को कम करती है। उन्नत कैंसर त्वचा के माध्यम से फैलकर खुले घाव (अल्सरेशन) पैदा कर सकता है लेकिन जरूरी नहीं कि यह दर्दनाक हो। जिन महिलाओं के स्तन में घाव ठीक नहीं होते, उन्हें बायोप्सी कराने के लिए चिकित्सकीय देखभाल लेनी चाहिए। स्तन कैंसर के इलाज के लिए दवाओं का चयन विशेष परीक्षणों (ट्यूमर मार्कर निर्धारण) द्वारा निर्धारित कैंसर के जैविक गुणों के आधार पर किया जाता है। स्तन कैंसर के लिए उपयोग की जाने वाली अधिकांश दवाएं पहले से ही डब्ल्यूएचओ की आवश्यक दवाओं की सूची (ईएमएल) में हैं। आक्रामक कैंसर के लिए कैंसर सर्जरी के समय लिम्फ नोड्स हटा दिए जाते हैं। अतीत में कैंसर के प्रसार को रोकने के लिए बांह के नीचे लिम्फ नोड बिस्तर को पूरी तरह से हटाना (पूर्ण एक्सिलरी विच्छेदन) आवश्यक माना जाता था। अब ष्सेंटिनल नोड बायोप्सीष नामक एक छोटी लिम्फ नोड प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि इसमें कम जटिलताएँ होती हैं। स्तन कैंसर के लिए चिकित्सा उपचार, जो सर्जरी से पहले (षनियोएडज्वंतष) या बाद में (षसहायकष) दिया जा सकता है, कैंसर के जैविक उपप्रकार पर आधारित है। स्तन कैंसर के कुछ उपप्रकार दूसरों की तुलना में अधिक आक्रामक होते हैं जैसे ट्रिपल नेगेटिव (वे जो एस्ट्रोजन रिसेप्टर (ईआर), प्रोजेस्टेरोन रिसेप्टर (पीआर) या एचईआर –2 रिसेप्टर को व्यक्त नहीं करते हैं)। कैंसर जो एस्ट्रोजन रिसेप्टर (ईआर) औरध्या प्रोजेस्टेरोन रिसेप्टर (पीआर) को व्यक्त करता है, वह अंतःस्रावी (हार्मोन) थेरेपी जैसे टैमोक्सीफेन या एरोमाटेज इनहिबिटर पर प्रतिक्रिया करने की संभावना रखता है। इन दवाओं को 5–10 वर्षों तक मौखिक रूप से लिया जाता है और इन 'हार्मोन–पॉजिटिव' कैंसर की पुनरावृत्ति की संभावना लगभग आधी हो जाती है। अंतःस्रावी उपचार रजोनिवृत्ति के लक्षण पैदा कर सकते हैं लेकिन आम तौर पर अच्छी तरह से सहन किए जाते हैं। जो कैंसर ईआर या पीआर को व्यक्त नहीं करते हैं वे 'हार्मोन रिसेप्टर नकारात्मक' होते हैं और जब तक कैंसर बहुत छोटा न हो तब तक कीमोथेरेपी से इलाज की आवश्यकता होती है। आज उपलब्ध कीमोथेरेपी के नियम कैंसर के फैलने या दोबारा होने की संभावना को कम करने में बहुत प्रभावी हैं और आम तौर पर आउट पेशेंट थेरेपी के रूप में दिए जाते हैं। स्तन कैंसर के लिए कीमोथेरेपी के लिए आमतौर पर जटिलताओं के अभाव में अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं होती है। स्तन कैंसर जो स्वतंत्र रूप् से नामक अणु को ओवरएक्सप्रेस करता है, उसका ट्रैस्टुजुमैब जैसे लक्षित जैविक एजेंटों के साथ इलाज किया जा सकता है। जब लक्षित जैविक उपचार दिए जाते हैं, तो उन्हें कैंसर कोशिकाओं को मारने में प्रभावी बनाने के लिए कीमोथेरेपी के साथ जोड़ा जाता है। स्तन कैंसर के इलाज में रेडियोथेरेपी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रारंभिक चरण के स्तन कैंसर में, विकिरण एक महिला को स्तन–उच्छेदन से गुजरने से रोक सकता है। बाद के चरण के कैंसर में, रेडियोथेरेपी कैंसर की पुनरावृत्ति के जोखिम को कम कर सकती है, भले ही मास्टेक्टॉमी की गई हो। स्तन कैंसर के उन्नत चरणों के लिए, कुछ परिस्थितियों में, विकिरण चिकित्सा बीमारी से मरने की संभावना को कम कर सकती है। स्तन कैंसर उपचारों की प्रभावशीलता उपचार के पूर्ण पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है। आंशिक उपचार से सकारात्मक परिणाम मिलने की संभावना कम है।

वैश्विक प्रभाव
उच्च आय वाले देशों में आयु–मानकीकृत स्तन कैंसर मृत्यु दर में 1980 और 2020 के बीच 40: की गिरावट आई है। जो देश स्तन कैंसर की मृत्यु दर को कम करने में सफल रहे हैं वे प्रति वर्ष 2–4: की वार्षिक स्तन कैंसर मृत्यु दर में कमी लाने में सक्षम हुए हैं। स्तन कैंसर के परिणामों में सुधार की रणनीतियाँ उन उपचारों को प्रदान करने के लिए मौलिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने पर निर्भर करती हैं जो पहले से ही काम करने के लिए जाने जाते हैं। ये अन्य कैंसर और अन्य गैर–घातक गैर–संचारी रोगों (एनसीडी) के प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, प्राथमिक देखभाल सुविधाओं से लेकर जिला अस्पतालों से समर्पित कैंसर केंद्रों तक विश्वसनीय रेफरल मार्ग होना। प्राथमिक देखभाल सुविधाओं से लेकर माध्यमिक अस्पतालों से लेकर समर्पित कैंसर केंद्रों तक विश्वसनीय रेफरल मार्गों की स्थापना वही दृष्टिकोण है जो सर्वाइकल कैंसर, फेफड़ों के कैंसर, कोलोरेक्टल कैंसर और प्रोस्टेट कैंसर के प्रबंधन के लिए आवश्यक है। उस अंत तक, स्तन कैंसर एक तथाकथित सूचकांक बीमारी है जिसके तहत ऐसे रास्ते बनाए जाते हैं जिनका अनुसरण अन्य कैंसर के प्रबंधन के लिए किया जा सकता है।

डब्ल्यूएचओ की प्रतिक्रिया

ॅभ्व् ग्लोबल ब्रेस्ट कैंसर इनिशिएटिव (ळठब्प्) का उद्देश्य वैश्विक स्तन कैंसर मृत्यु दर को प्रति वर्ष 2.5: कम करना है, जिससे 2020 और 2040 के बीच वैश्विक स्तर पर 2.5 मिलियन स्तन कैंसर से होने वाली मौतों को रोका जा सके। 2030 तक स्तन कैंसर से 25: मौतें और 2040 तक 40: मौतें 70 साल से कम उम्र की महिलाओं में होंगी। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में तीन स्तंभ हैं।

शीघ्र पता लगाने के लिए स्वास्थ्य संवर्धनय समय पर निदानय और व्यापक स्तन कैंसर प्रबंधन।

स्तन कैंसर के संकेतों और लक्षणों के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने से और, अपने परिवारों के साथ मिलकर, शीघ्र पता लगाने और उपचार के महत्व को समझने से, अधिक महिलाएं स्तन कैंसर का पहली बार संदेह होने पर, और किसी से भी पहले चिकित्सा चिकित्सकों से परामर्श ले सकेंगी। कैंसर का वर्तमान चरण उन्नत है। यह मैमोग्राफिक स्क्रीनिंग के अभाव में भी संभव है जो वर्तमान समय में कई देशों में अव्यावहारिक है। अब दुनिया में कैंसर का इलाज संभव है, नो टेन्शन–प्लीज अटेंशन।

निष्कर्ष : अकसर माँ बनने वाली महिलाओं के स्तन में स्तन कैंसर का शिकायत रहता है। यदि माँ बनने के बाद आपके स्तन से ज्यादा दुध निकलता है। तो बच्चों को फिडिंग कराने के वावजूद भी दुध स्तन में प्रयाप्त मात्रा में है तो आप अपने प्रिय साथी को स्तन फिडिंग कराकर स्तन को आजिवन सुरक्षित रख सकते है। यदि स्तन में दुध सुख जाता है तो स्तन कैंसर का कारण बन जाता है।

सैटेलाइट फोन क्या है?

सैटेलाइट फोन का मैंने काफी उपयोग किया है। रेलवे में आपदा प्रबंधन हेतु दूरस्थ इलाकों में इसका प्रमुखतरू प्रयोग होता है, जिसका मंडल एवं जोनल स्तर पर प्रमुख रहा हूँ। वैसे भी सैटेलाइट फोन की सबसे पुरानी कंपनी प्दउंतेंज की स्थापना वैश्विक समुद्री आपदा से निपटने हेतु 1979 में की गई थीख्1, – **Global Maritime Distress and Safety System (GMDSS)**

सैटेलाइट फोन क्या है ?

सैटेलाइट फोन बातचीत करने के लिए एवं इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए नेटवर्क से कनेक्ट होने के लिए मोबाइल टावर की जगह सैटेलाइट का उपयोग करता है।

सैटेलाइट फोन बहुत महँगा क्यों है ?

यह आम धारणा कि सैटेलाइट फोन बहुत महंगा होता है गलत है बल्कि अमेरिका में भी इसकी कीमत , चचसम और उेनदह के टॉप एंड मोबाइल फोन के लगभग बराबर होती है यानी डेढ़– दो लाख ख्2,। लेकिन भारत में इसकी कीमत 1 लाख के आसपास 2019 में थी जो 2021 में घटकर 90 हजार ही थी – यानी उपरोक्त मोबाइल से भी काफी कम। फिर बताइए सैटेलाइट फोन बहुत महँगा कैसे हुआ ? इसके उलट यह तो हाई एन्ड मोबाइल से भी काफी सस्ता हुआ।

सो इस प्रश्न को इस तरह रूपांतरित करते हैं कि,सैटेलाइट कॉल एवं सब्सक्रिप्शन बहुत महंगे क्यों होते हैं ?

मोबाइल टावर की कीमत चंद करोड़ रुपये होते हैं वहीं सैटेलाइट की कीमत अरबों में होती है। साथ ही सैटेलाइट की सीमित आयु (15 साल) होती है। यदि सैटेलाइट की कीमत 7200 करोड़ है तो 480 करोड़ तो हर साल सैटेलाइट खरीद पर ही खर्च हो गया। मेंटेनेंस का खर्च अलग। इसीलिए सेटेलाइट कॉल व सब्सक्रिप्शन की कीमत काफी ज्यादा होती है। सन 2015 में प्दउंतेंज ने फी सैटेलाइट +30 करोड़ यानी 2400 करोड़ में खरीदा था। कुल 3 **sattelite** की जरूरत पड़ती है .3, सो 7200 करोड़ !

साथ ही अधिकांश सैटेलाइट कॉल में आईएसडी कॉल प्रयुक्त होते हैं इस कारण भी ये अत्यंत महंगे होते हैं।

इसका सब्सक्रिप्शन भी काफी महँगा है।

सैटेलाइट फोन क्या है एवं सेटेलाइट कॉल क्यों महंगे होते हैं , साथ ही इसकी सीमाएं क्या हैं यह समझने के लिए इसकी कार्यविधि जानना जरूरी है।

सैटेलाइट फोन की कार्यविधि हैंडहेल्ड सैटेलाइट फोन ऐन्टेना सहित अपने फोन में प्ड कार्ड डालें।

खुली जगह (बिना छत – कि आसमान दिखे) या खिड़कीध्खुली बालकॉनी में फोन लेकर आएं

सैटेलाइट फोन का ऐन्टेना खोलें एवं ऐन्टेना को ऊपर की ओर करें। ध्यान रखें की जिस सेटेलाइट से आपका फोन कनेक्ट होने जा रहा है वह धरती से 36000 किलोमीटर दूर ऊपर अंतरिक्ष में है। यदि पृथ्वी के ऊपर तीन और पृथ्वी रख दे – यह दूरी उतनी ज्यादा है। सो कनेक्ट होने में 45 सेकंड्स के आसपास लग सकता है।

आपके सैटेलाइट फोन और सैटेलाइट को जोड़ती सीधी रेखा के बीच में कोई बिल्डिंग , पेड़ या अन्य अवरोध नहीं होना चाहिए।

Searching satellite स्क्रीन पर डिस्प्ले होगा और एंटीना आपसे आप सबसे नजदीक के सेटेलाइट के साथ संपर्क स्थापित कर लेगा। तब स्क्रीन पर त्मंकल वित मतअपबम डिस्प्ले होगा।

सिग्नल स्ट्रेंथ पर ध्यान दें । कम से कम दो ठ।तै (ऊर्ध्वाकार रेखा या डंथी) होना जरूरी है। यदि सिग्नल दो ठ।तै से कम हो या त्मंकल वित मतअपबम डिस्प्ले की जगह लाल इंडिकेटर आए तो , खुले आसमान के नीचे आए। सैटेलाइट फोन में मब्वउचें सुविधा होती है, जो आपको ऐन्टेना आसमान में सही दिशा में करने का संकेत देती है, उस दिशा में ऐन्टेना को रखें। उसके बाद त्मंकल वित मतअपबम डिस्प्ले और सिग्नल स्ट्रेंथ भी 2 से 5 ठंत तक पहुँच जाएगी।

इसके बाद जो भी नंबर आपको डायल करना हो उसके 00 आगे लगाकर रिंग करें – जिसके लिए हरा बटन चतमे करना पड़ेगा।
आपका कॉल सबसे पहले उस सैटेलाइट को जाएगा जिससे आपके फोन को सिग्नल मिल रहा है । वह सैटेलाइट उस कॉल के सिग्नल को काफी संवर्द्धित (उचसपलि) कर के पृथ्वी पर स्थित ग्राउंड स्टेशन (ै) या "जमसपजम ।बबमे ेजंजपवद) पर भेजेगा, जहाँ 9 मीटर (30 फीट) से भी बड़े विशाल एंटेना उस सिग्नल को तमबमपअम कर बगल के डेटा सेन्टर के टेलीकॉम उपकरणों को भेज देंगें।
आपका डायल किया हुआ नंबर यदि उसी ग्राउंड स्टेशन से रिंग हो सकता है तो ग्राउंड स्टेशन के उपकरण उस नंबर को तुरन्त डायल करेंगें। ग्राउंड स्टेशन से आपका वाँछित नंबर तक कॉल भूमि आधारित नेटवर्क (ज्मततमेजतपंस दमजूवता) अर्थात सामान्य मोबाइल सर्विस प्रोवाइडर या लैंडलाइन नेटवर्क के जरिये जाएगा।
यदि आपका डायल किया हुआ नंबर उस ग्राउंड स्टेशन की सीमा के बाहर है तो ग्राउंड स्टेशन उस कॉल को उसी सैटेलाइट के जरिए गंतव्य फोन नम्बर हेतु निर्धारित दूसरे सैटेलाइट को भेज देगा, जो दूसरे सैटेलाइट से जुड़े हुए ग्राउंड स्टेशन पर जाएगा जो कि उस नंबर को डायल करेगा।
अर्थात एक या एकाधिक सैटेलाइट एवं ग्राउंड स्टेशन और सामान्य फोन ऑपरेटर – इन तीनों के माध्यम से आपका कॉल जाएगा। तब डायल किए गए नंबर पर रिंग होगा।
जो व्यक्ति आपका सेटेलाइट कॉल उठाएगा उसे तुरंत कुछ भी सुनाई नहीं देगा। वह हेलो बोलेगा जोकि लगभग 1 सेकंड के विलंब से आप को सुनाई पड़ेगा क्योंकि इस दौरान लगभग 1 लाख किलोमीटर का सफर और विभिन्न उपकरणों का प्रोसेसिंग टाइम शामिल है जिसमें आपके फोन सिग्नल को परिवर्तित भी किया जाता है। आप सामान्य तरीके से बातचीत जारी रख सकते हैं, बस यह ध्यान रखें कि दोनों ओर से जो कुछ कहा जाता है उसे पहुंचने में 1 सेकंड का विलंब हमेशा रहेगा। कैसे हो, हाँ, क्या हाल चाल, हूँ, ठीक है, जैसे अत्यंत छोटे वाक्यांशों को बोलकर जवाब का इंतजार नहीं करें बल्कि एक बार में ही जितनी बात करनी है वह कह दे। यानी हर बार लंबे समय तक ज्यादा बोलें । अन्यथा पता चला कि दूसरी तरफ का व्यक्ति बोल रहा है – लोग कहते हैं कि मैं क्रूर हूँ (जो कि गलत है) और आपका बिल्कुल सही –मैं क्रूर हूँ – के ठीक बाद पहुँचा।
सैटेलाइट फोन से बातचीत के दौरान फोन सिग्नल द्वारा तय की गई 1 लाख किलोमीटर की दूरी चंद्रमा की दूरी के एक चौथाई से ज्यादा है – यह ख्याल रखें।
सैटेलाइट फोन पर कॉल तमबमपअम करने के लिए भी त्मंकल वित`मतअपबम डिस्प्ले जरूरी है। साथ ही यदि आप गतिमान हैं तो ळच्े नचकंजपदह भी जरूरी है अर्थात आपके फोन पर ळच्े थ्प• का तमक पबवद नहीं होना चाहिए।
सैटेलाइट कॉल की सामान्य दर अमेरिका में +0.65 से लेकर +1 प्रति मिनट है। 52 – 80 प्रति मिनट। लेकिन भारत में यह काफी कम यानी 25 प्रति मिनट घरेलू कॉल हेतु है। लेकिन **ISD** 260 प्रति मिनट है।
अमेरिका में इसका मासिक सब्सक्रिप्शन तकरीबन 4000 / है। .5, ।भारत में यह लगभग 6000 है।
सैटेलाइट फोन से आप वॉइस कॉल, **SMS** और मउंपस भेज सकते हैं।
इस पूरी प्रक्रिया को आप निम्नलिखित रेखा चित्र से समझ सकते हैं।
ग्राउंड स्टेशन ध्गोटवे का ऐन्टेना .6,
यदि एक सैटेलाइट फोन से दूसरे सैटेलाइट फोन पर बातचीत करते हैं तो ग्राउंड स्टेशन से प्रथम प्रमाणीकरण के बाद आप`जमससपजम जव`जमससपजम ही बातचीत करेंगें – भूमिस्थ या **terrestrial** नेटवर्क की जरूरत नहीं है। ऐसी हालत में आप दूसरे सैटेलाइट फोन नंबर के पहले 870 डायल करेंगें।

कुछ तकनीकी जानकारी

तीन **Geostationary equatorial orbit (GEO)** सैटेलाइट द्वारा पूर्व से पश्चिम पूरी पृथ्वी दायरे (तंदहम) में आ जाती है।

सैटेलाइट फोन का कवरेज तकरीबन पूरी पृथ्वी पर है फिर भी उत्तर और दक्षिण में ये 82 डिग्री अक्षांश तक सीमित है उससे ज्यादा अक्षांशों तक इसकी पहुँच नहीं है। इसका गणितीय कारण है जो बाद में कभी फुर्सत में बतायूँगा।
1हल्का नीलाः अमेरिका 2 हराः अफ्रीका यूरोप 3 गहरा नीलाः भारत सहित एशिया, ओसेनिया

तीनों अलग अलग रंग के क्षेत्र 3 अलग अलग उपग्रहों (**Satellites**) के हैं। रंगीन क्षेत्रों के ऊपर और नीचे का खाली क्षेत्र देखें , जो उपग्रहों **(Satellites)** के रेंज से बाहर हैं – 82 अक्षांश से ज्यादा के क्षेत्र हैं।

सैटेलाइट टेलीफोनी/ब्रॉडबैंड इंटरनेट हेतु **Geostationary equatorial orbit (GEO)** सैटेलाइट का प्रयोग होता है, जो मुनंजवत (विषुवत रेखा) के ऊपर 36 हजार किलोमीटर की ऊँचाई पर पृथ्वी की गति से घूम रहे हैं अतः वे एक ही जगह पर स्थिर (जंजपवदंतल) लगते हैं। **act distance 35786 km** है।

कॉल **sms** और ईमेल हेतु स बैंड (1–2 **GHz**) का प्रयोग होता है जबकि ब्रॉडबैंड इंटरनेट के लिए" इंदक (2–4 **GHZ**) या **Ka** (27–40 **GHz**) बैंड का प्रयोग होता है।

टवपबम कॉल और ब्रॉडबैंड इंटरनेट के लिए अलग अलग सैटेलाइट का प्रयोग होता है। हालाँकि अब कुछ ीलइतपक सैटेलाइट भी आ गए हैं।

वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए प्रयुक्त सैटेलाइट फोन और ब्रॉडबैंड इंटरनेट – **EÛternal Antenn** के साथ आते हैं – जिनका प्रयोग हवाई जहाज , समुद्री जहाज , सेना , दुर्गम अभियान आदि में होता है।

यूरोप में 30 देशों में हवाई जहाजों में इंटरनेट की सुविधा **Inmarsat ds S** बैंड सैटेलाइट से दी जाती है। इसके लिए **I& S EAN** सैटेलाइट 2017 में लॉन्च किया गया जिसे फ्रांस के **Thales elenia space** कंपनी द्वारा बनाया गया। भूमि पर यह **Deutsche Telekom** के साथ पार्टनरशिप में है।

ध्रुवों पर सैटेलाइट फोन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 2 **HEO (Highly Elliptical Orbit)** वाले उपग्रहों को छोड़ने की योजना है।

सैटेलाइट फोन की वैकल्पिक तकनीक – कम ऊँचाई के कृत्रिम उपग्रहों द्वारा

ऊपर भूस्थिर विषुवतीय कक्षा (**GEO**) के कृत्रिम उपग्रह द्वारा सैटेलाइट फोन के बारे में बताया गया – जो कि मुख्यतः **Inmarsat** पर आधारित है । **Inmarsat** और **Thuraya** इस तकनीक का प्रयोग करते हैं। ऐसे उपग्रह काफी महँगे होते हैं।

एक अन्य वैकल्पिक तकनीक में जमीन के काफी नजदीक 780 ाउ से लेकर 1500 किलोमीटर की कक्षा में कम से कम 60 कृत्रिम उपग्रह रखते हैं जिनके द्वारा भी सेटेलाइट टेलीफोन की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है लेकिन इसमें बातचीत के दौरान आपका कॉल एक सेटेलाइट से दूसरे सेटेलाइट में ऑटोमेटिक ट्रांसफर होते रहता है क्योंकि यह सैटेलाइट एक ही जगह पर स्थित नहीं रहते हैं बल्कि घूमते रहते हैं – इन्हें **LEO (Lower Earth Orbit)** सैटेलाइट कहते हैं। **Iridium** और ळसवइंस ैजंत इस तकनीक का प्रयोग करते हैं। इसमें फोन सिग्नल को उचसपलि करने की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती है और संह भी कम होता है।

भारत में सैटेलाइट फोन का प्रयोग.8,
भारत में केवल **Inmarsat** के **Satphone** (सैटेलाइट फोन) की अनुमति है।
Inmarsat का भारतीय **gateway BSNL** का है, जो गाजियाबाद में है। यह **earth interception station** का काम करता है। सो भारत में कहीं भी **Inmarsat** के **Satphone** यदि व्छ भी करते हैं तो तुरंत पता चल जाएगा। सऊदी अरब कंपनी **ARAMCO** (विश्व की दूसरी सबसे अमीर कंपनी) के एक ब्रिटिश नागरिक को तुरन्त उत्तराखंड में जतंबम कर लिया गया और कानूनी कारवाई की गई। .9,
जिस भी व्यक्तिध्संस्था को सैटेलाइट फोन चाहिए वो **BSNL** के माध्यम से ही ले सकते हैं। गृह मंत्रालय (**MHA**) से जरूरी लाइसेंस भी उन्ही के माध्यम से हासिल करना पड़ता है।
अन्य किसी भी तरीके से इसकी खरीद और प्रयोग गैर कानूनी है।
भारत में सैटेलाइट फोन की बढ़ती पैठ तमिलनाडु , गहरे समुद्र में मछुआरों को सैटेलाइट फोन देने वाला पहला राज्य बना। ख10, प्रति फोन कीमत 1 लाख ।
160 सैटेलाइट फोन, गहरे समुद्र (**deep se**) में जानेवाले मछुआरों को मुफ्त बाँटा गया।
500 और सैटेलाइट फोन नए स्कीम के तहत बाँटा जाएगा, जिसमें मात्र 25ः राशि मछुआरों को देना होगा।
सैटेलाइट फोन की सहायता से मछुआरे 200 नॉटिकल मील (यानी 370 **km**) , मछली पकड़ने हेतु जाने में सक्षम होंगे और तूफान आदि की सूचना भी उन्हें तुरंत दी जा सकेगी। साथ ही मछुआरे भी गहरे समुद्र में किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत प्रशासन को दे पाएँगे। समुद्र प्रहरी। यहाँ यह ध्यान देने की जरूरत है कि 200 नॉटिकल मील किसी भी देश का एक्सक्लूसिव इकनोमिक जोन (**EEZ**) होता है जिसके आर्थिक दोहन का पूर्ण अधिकार उस देश का होता है। (**en** 2 –4 का स्रोत .11,)

भारत में सैटेलाइट फोन की कीमत, सब्सक्रिप्शन और कॉल दर (स्रोतः नीचे क्रमांक 19)

सैटेलाइट फोन : 90 हजार

वार्षिक (**WPC**) लाइसेंस मिमः 14, 250

न्यूनतम वार्षिक प्लानः 55 हजार

कुल वार्षिक खर्चः 70 हजार (लगभग)

या मासिक : 6 हजार

घरेलू कॉल दरः 25 प्रति मिनट

घरेलू डै दरः 25

ISD(budfeax/vkmVxksbax)ः 260 / मिनट

अंतरराष्ट्रीय दरः 260

भारत हेतु नया सैटेलाइट

यूरोप में सैटेलाइट फोन की डिमांड बढ़ने और ज्यादा तमसपंइसम सर्विस देने के कारण यूरोप हेतु एक अतिरिक्त सैटेलाइट लॉन्च किया गया है, जिस कारण भारत और शेष एशिया हेतु नया सैटेलाइट **I**–4 थ्2 लगाया गया है – अर्थात अब 3 की जगह 4 सैटेलाइट काम कर रहे हैं। भारत हेतु नए सैटेलाइट की स्थिति हिन्द महासागर में आप नीचे चित्र में देख सकते हैं।
भारत हेतु नया सैटेलाइट का रेंज लाल रंग में है।'

धर्म और विज्ञान

विज्ञान और धर्म दुनिया में दो सबसे आम चर्चा के विषय हैं। जहां विज्ञान बुनियादी तार्किक तथ्यों पर निर्भर करता है, वहीं धर्म आस्था पर निर्भर करता है।

धर्म क्या है?

विज्ञान क्या है?

विज्ञान और धर्म के बीच क्या संबंध है?

धर्म और विज्ञान के बीच संबंध को दुनिया में सबसे अधिक बहस वाले विषयों में से एक माना जा सकता है। विज्ञान और धर्म के बीच संबंधों पर कुछ तर्क संघर्ष पैदा करते हैं, जबकि अन्य सोचते हैं कि यह दो अलग–अलग संस्थाएं हैं जो दो अलग–अलग मानवीय अनुभवों से निपटती हैं। कुछ धार्मिक और वैज्ञानिक संगठनों का कहना है कि धार्मिक आस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच इस तरह के टकराव की कोई आवश्यकता नहीं है। धर्म और विज्ञान जटिल सामाजिक विषय हैं जो विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। यह लेख हमें विज्ञान और धर्म की विभिन्न अवधारणाओं को देखने देता है और वे एक–दूसरे से कैसे संबंधित हैं। विज्ञान और धर्म के बीच संबंध श्सद्भावश, श्जटिलताश और संघर्ष की विशेषता है। समाज में व्यक्ति के विचारों को आकार देने में विज्ञान और धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण है।

धर्म क्या है?

धर्म मान्यताओं, रीति–रिवाजों और परंपराओं का एक संग्रह है। इसे नियंत्रक शक्ति के प्रति पूजा भी कहा जाता है। धर्म सदैव ईश्वर पर केन्द्रित नहीं हो सकता। यह किसी भी प्रकार की शक्ति के प्रति समर्पण हो सकता है। विज्ञान की भाँति मध्यकाल में धर्म शब्द का भी कोई उचित अर्थ नहीं था। मानवविज्ञानी ईबी टेलर के साहित्यिक कार्यों के माध्यम से इसे अपना वर्तमान उद्देश्य प्राप्त हुआ। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दुनिया भर में धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया था। धर्म किसी समाज और व्यक्ति की गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसका असर व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

विज्ञान क्या है?

विज्ञान को ज्ञान की खोज और अनुप्रयोग तथा प्रयोगों, अवलोकनों और उचित साक्ष्यों के माध्यम से दुनिया को समझने के रूप में परिभाषित किया गया है। पुराने काल में विज्ञान का अर्थ प्राकृतिक दर्शन या प्रयोगात्मक दर्शन था। इसका सटीक सन्दर्भ उन्नीसवीं शताब्दी में आया और प्रयोग किया गया। विलियम व्हीवेल ने वैज्ञानिक शब्द का मानकीकरण उन लोगों के रूप में किया जो विज्ञान के अभ्यासकर्ता हैं। संक्षेप में विज्ञान को संसार और उसके व्यवहार के प्रति जिज्ञासा माना जा सकता है। विज्ञान सदैव एक रहस्य है। प्रत्येक परीक्षा और खोज से विज्ञान में अधिक प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

विज्ञान और धर्म के बीच क्या संबंध है?

प्राकृतिक दुनिया, इतिहास, दर्शन और धर्मशास्त्र का विश्लेषण करके विज्ञान और धर्म के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है। विज्ञान प्राकृतिक दुनिया की जांच और विश्लेषण करता है, जबकि धर्म आध्यात्मिक या अलौकिक रूप से दुनिया का विश्लेषण करता है। कई वैज्ञानिकों, धर्मशास्त्रियों, दार्शनिकों आदि ने कहा है कि विज्ञान और धर्म के बीच अन्योन्याश्रयता है । यह भी सच है कि धार्मिक तथ्य कई वैज्ञानिक तथ्यों को प्रभावित करते हैं। सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि कुछ लोग अभी भी प्राकृतिक प्रक्रिया द्वारा विकास के सिद्धांत को अस्वीकार करते हैं और मानव अस्तित्व की धार्मिक मान्यता में विश्वास करते हैं। विज्ञान और धर्म के बीच संबंधों पर चर्चा एक संघर्ष में समाप्त होती है। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, विज्ञान और धर्म शब्द 19वीं शताब्दी में उभरे और इन्हें किसी व्यक्ति के आंतरिक गुण माना जाता था और प्रथाओं या ज्ञान का संदर्भ नहीं दिया जाता था। हमारी समझ, विचारों और यहां तक कि हमारे भविष्य को आकार देने में धर्म और विज्ञान की अलग–अलग भूमिकाएँ हैं। जब धर्म उस भावना में योगदान देता है जिसे मानव मस्तिष्क नहीं पकड़ सकता, तो विज्ञान मन के असीमित विचारों और प्रयोगों के माध्यम से खोज करता है।

विज्ञान और धर्म के बीच क्या अंतर हैं?

समाज में धर्म और विज्ञान की भूमिका प्रभावशाली है। विज्ञान और धर्म के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि पहले का संबंध प्राकृतिक दुनिया से है जबकि दूसरे का संबंध प्राकृतिक और अलौकिक दोनों संस्थाओं से है। विज्ञान तथ्यों की उचित प्रमाण एवं प्रमाण सहित व्याख्या करता है। यह हमेशा सवालों के जवाब देने के लिए तार्किक स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है। धर्म लोगों को शक्ति पर निर्भर बनाता है और यह शक्ति प्राकृतिक या अलौकिक हो सकती है। यह हमेशा विश्वासों और विश्वासों पर निर्भर होता है। धर्म के अनुसार सब कुछ अज्ञात शक्ति के प्रभाव से होता है। जबकि विज्ञान सदैव तार्किक तथ्यों एवं प्रमाणों पर निर्भर रहता है। जब धर्म ने विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया, तो विज्ञान ने खोजों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

वैज्ञानिक आस्तिक होने का मतलब यह नहीं है कि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक नहीं हो सकता। ऐसे कई वैज्ञानिक और धार्मिक लोग हैं जो क्रमशः धर्म और विज्ञान में विश्वास करते हैं। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि विज्ञान और धर्म मानव जीवन के दो आवश्यक पहलू हैं। विज्ञान और धर्म के बीच संबंधों की चर्चा व्यापक है लेकिन अंत में अधूरी रह जायेगी। वास्तव में, हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान और धर्म एक ही समय में पूरक और गतिशील दोनों हो सकते हैं। धर्म की तुलना में विज्ञान को अधिक व्यवस्थित और तार्किक माना जाता है।

निष्कर्ष

विज्ञान एक वस्तुनिष्ठ विचार है, जबकि धर्म एक व्यक्तिपरक विचार है। विज्ञान और धर्म अलग–अलग पहलुओं में बहुत करीब से जुड़े हुए हैं। विज्ञान हमेशा अपने कथनों को प्रदर्शित करने के लिए तथ्यों और तर्क पर निर्भर करता है, जबकि धर्म लोगों की आस्था और शक्ति पर निर्भर करता है। विज्ञान किसी उत्तर को हल करने के लिए प्रयोग और अवलोकन विकसित करने पर केंद्रित है। धर्म उन प्रश्नों को संबोधित करता है जिनका उत्तर सटीक डेटा के साथ नहीं दिया जा सकता है। विज्ञान और धर्म को संसार के दो शासक कारक कहा जा सकता है। श विज्ञान और धर्म श वाक्यांश पहली बार 19वीं शताब्दी में एक साथ संरचित किया गया था। ये दोनों शब्द वास्तविकता की अलग–अलग धारणाओं के रूप में उत्पन्न हुए।

पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ?

मानव की उत्पत्ति अभी भी अनबूझा सवाल है। मनुष्य की उत्पत्ति कहाँ शरू हुई थी, कैसे हुई थी, और कैसे विश्व में फैली? इसके आदिपूर्वज (चतपउंजमे) कौन थे? क्या मनुष्य ऐसा ही आदि में था जैसा आज है? ये सवाल अमानव प्राणियों के लिए भी मनुष्य की उत्पत्ति के बराबर महत्व रखते हैं। गाय, घोड़ा, हाथी, कबूतर, चमगादड़, सर्प, मछली कैसे, कब और कहाँ उत्पन्न हुए? हम मनुष्य हैं इसलिए मनुष्य से संबंधित हर जानकारी के लिए जिज्ञासु, व्याकुल व उत्सुक ज्यादा होते हैं। मेरी उत्पत्ति तो मेरे माता–पिता से हुई, माता–पिता की उत्पत्ति उनके माता–पिता से हुई। उनके माता–पिता की उत्पत्ति३..? यह कथन (उत्तर) अनंत है, कभी न समाप्त होने वाला। फिर भी वैज्ञानिक विमर्श करके ठोस समाधान खोजा जा सकता है।

अब तक जीवविज्ञान में यही पढ़ाया गया कि हजारों वर्ष पूर्व आधुनिक मनुष्य आज जैसा नहीं था। लाखों वर्ष में म्यूटेसन द्वारा शारीरिक परिवर्तन के साथ दो या चार पैर पर चलने वाले अन्य स्तनधारी प्राणियों से उसका धीरे–धीरे विकास हुआ। अब सवाल यह है, कि मनुष्य का कोई तो एक माता–पिता होना चाहिए। नहीं होने चाहिए, क्योंकि कोई भी जीव अपने माता–पिता से ही पैदा होते हैं और शारीरिक व मानसिक गुणरूप से एक समान होते हैं। इसका अर्थ है कि लाखों वर्ष में गुण परिवर्तन होने से हमारे आदिपूर्वज अवश्य ही हमारे जैसे नहीं हो सकते हैं।

ब्रह्मा ने सृष्टि के समय स्त्री–परुष (नारी–नर) अपने जंघों को रगड़ कर योगमाया से पैदा किया, जिससे मनुष्य की सन्तति बढ़ी और भारत में विस्तार किया। ब्रह्मा, वैदिक और पौराणिक मनुष्य पूरी दुनिया के बारे में नहीं जानता था, इसलिए भारत की अनुमानित विचारधारा ठप्प हो गई। जबकि यूरोप के वैज्ञानिक मानते हैं कि पहला मनुष्य मात्र 9000 वर्ष पहले था। वहीं ब्रह्मा ने पुत्री सावित्री व सरस्वती को उत्पन्न करके उन्हें जबरन पत्नी बना कर मनुष्य की सन्तति बढ़ाई और हिदुओं ने उन्हें आदिपुरुष मान लिया। अँधेरे में तीर चलाना नहीं तो और क्या है?

हिन्दू पौराणिकों का मत है कि हर 71वें सतयुग में पृथ्वी जलमग्न होती है जिसमें कुछ मनुष्य हिमालय पर बच जाते हैं जिनसे मनुष्य की जनन होने से जनसंख्या बढ़ती है। दूसरे, हजारों लोग घाटियों में दब (ीलइमतदंजपवद) जाते हैं जो हजारों वर्ष बाद उसी स्थिति में जिन्दा हो जाते हैं। आर्यसमाजी यह भी दावा करते हैं कि मनुष्य जैसा आज है, आदि से ऐसा ही है और अंत तक ऐसा ही रहेगा। तात्पर्य कि मनुष्य का शारीरिक व मानसिक विकास नहीं होता है जो विज्ञान के सिद्धांतों पर गलत है। वैदिक, हिंदूधर्म तथा आर्यसमाज अँधेरे में तीर चलाते हैं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि दुनिया में बिखरे हुए मनुष्य का आदिमाता–आदिपिता (प्रथम मनुष्य) यही थे, जबकि डीएनए परीक्षण से स्पष्ट हो गया है कि आर्य (ब्राह्मण) यूरेशिया से भारत आये थे, तब 71वें युग या हिमालय में दबने–बचने का सिद्धांत अमान्य हो जाता है।

स्पेनार्ड मॉसेस डि लियोन 13वीं शताब्दी में अपनी पुस्तक ”जेम ठववा व िचसमदकवनत” में लिखता है कि जेहोवा ने एक ही वक्त में एक पुरुष ”एडम” व एक स्त्री ”लिलिथ” को उत्पन्न किया जो पति–पत्नी बनाये। निर्दयी व शैतानी स्वभाव के कारण वह एडम को छोड़ कर चली गई। एडम विक्षुप्त हो ईश्वर से प्रार्थना करता है तो वह ईव को पैदा करके पत्नी के रूप में प्रदान करता है और आदेश देता है कि तुम लोग पृथ्वी पर मनुष्य की सन्तति बढ़ाओ।

बाईबिल के अनुसार 2 लाख 9 हजार वर्ष पहले ईसू ने एडम–ईव को सजा–बतौर पृथ्वी पर भेजा था जिनसे मनुष्य की उत्पत्ति होकर वह हर भूभाग में फैलता गया। जीसस येरूशलम में थे, इसलिए वहीं मनुष्य के आदिमाता–पिता आदम–ईव थे। इसे सच मानें तो पूरी दुनिया में येरुशलम की संस्कृति और भाषा होनी चाहिए थी, जो नहीं है। दूसरे, इटली का ईसाई क्रिस्टोफर कोलंबस 14वीं शताब्दी के अंत में भारत आया था, तत्पश्चात् ईसाई भारत आने लगे, परंतु उनके आदिपूर्वज नहीं। आज करीब 1 करोड़ से ज्यादा ईसाई भारत में हैं, न उन्होंने अपनी संस्कृति त्यागी, न ही भारतीय संस्कृति अपनाई, न ही अपनी संस्कृति भारतीयों लादी, तमाम हिन्दुओं ने धर्मपरिवर्तन करके ईसाई हुए जिनका आदिपूर्वजों से कोई संबंध नहीं है। इसी प्रकार मुसलमान अपनी संस्कृति लेकर आये, जिसे न तो त्यागी और न ही भारतीय संस्कृति अपनाई। इससे स्पष्ट है कि विश्व की हर सभ्यता के लोग अपने–आप में स्वतंत्र रही तथा अपनी पहचान कायम रखने में भी सफल रही। अतरू विश्व के सभी

मनुष्यों के आदिपूर्वज एक नहीं हैं और एक ही स्थान पर आधुनिक मनुष्य की उत्पत्ति नहीं हुई। अँधेरे में तीर चलाने से वैज्ञानिक सत्य नहीं बदलते हैं। ईसाईध्इस्लाम धर्म की उत्पत्ति या विकास 1400 वर्ष पूर्व होने से 2 लाख 9 हजार वर्ष पूर्व एडमईव की कथा का चश्मदीद गवाह कौन हैदृयहून्ना, जेहोवा, ईसू या कोई पैगम्बर? कोई नहीं। हिन्दुओं में भी कौन है जो ब्रह्मा–सरस्वतीध्सावित्री या शिव के काल का ब्यौरा प्रमाणित करे। सब अँधेरे में तीर चलाते हैं।

बात उस मनुष्य की है जो पृथ्वी पर सबसे पहले जन्मा और जिससे पूरी पृथ्वी पर विस्तृत हुआ। प्राणी अपने जैसा ही प्राणी (सन्तान) पैदा करता है, कबूतर से शेर की बात क्या करें पक्षियों में कौआ तक पैदा नहीं हो सकता है, चीता से बिल्ली, खरगोश से चूहा पैदा नहीं हो सकता। फिर अवश्य ही मनुष्य सिर्फ मनुष्य से ही पैदा होता आया। लेकिन पहला मनुष्य भी तो मनुष्य से पैदा हुआ होगा! यही सत्य नहीं है, क्योंकि आज का प्रत्येक प्राणी अपने–अपने पूर्वजों से पैदा होता आया और कई लाखों वर्ष में म्यूटेसन से प्रभावित होकर अलग–अलग प्राणियों में रूपांतरित हुआ। इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य एक स्थान पर एक माता–पिता से पैदा नहीं हुए होंगे, क्योंकि नीग्रो, द्रविण, भील, एंग्लोइंडियन, रेडइंडियन, जापानी, चीनी, अफ्रीकन, आदिवासी एवं वनमानुष जैसी मनुष्य की विभिन्न प्रजातियाँ अपने–अपने स्थान पर अपने–अपने आदिपूर्वजों से रूपांतरित होते आये।

विश्व में जितनी भी सभ्यताएं हैं, 9—10 हजार वर्ष ही पुरानी हैं जिनमें मनुष्य द्वारा निर्मित मकान, वस्त्र, बर्तन, हथियार, सामाजिक संरचना आदि की पहचान से समय व सभ्यता का अनुमान लगाया गया है। हम मान लेते हैं कि हम स्थानीय सभ्यताओं में मिले फॉसिल मनुष्यों की संतानें हैं, इससे यह प्रमाणित नहीं हो जाता है कि वही पहले मनुष्य थे, क्योंकि तब फिर एक स्थान पर नहीं, हर देश या हर महाद्वीप या भूखंड पर खोजी गई सभ्यताओं के लोग पहले मनुष्य थे। प्रश्न है कि पहला मनुष्य विश्व में कहाँ जन्मा? सभ्यताओं से भी तो इस नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता, क्योंकि यूरोप की सभ्यता का मानव हड़प्पा की सभ्यता में 10—15 लाख वर्ष पूर्व नहीं आ सकता था, तब असभ्य होने, वैज्ञानिक सोच व साधन–संसाधन के बिना वह हजारों मील दूर नहीं जा सकता था। इसके लिए हमें जीव विज्ञान की शोध पर आधारित होना पड़ेगा।

मानव का सृष्टिस्थान :

1. मैक्समुलर आदि भाषा षास्त्रियों के अनुसार आदिमानव का सृष्टिस्थान मध्य एशिया है।
2. बंगला के प्रसिद्ध विद्वान बाबू उमेश चन्द्र 'विद्यारत्न' "मानवरे आदि जन्मभूमि" पुस्तक में मंगोलिया बताते हैं।
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती 'आर्य' ने "सत्यार्थप्रकाश" में आर्यावर्त (तिब्बत व हिमालय का निचला भाग) बताया।
4. शतपथ ब्राह्मण में "तेषां कुरुक्षेत्रे देव यजनं आस तस्मादाहुरू कुरुक्षेत्रं देवानां देव यजनम्" प्राचीन देवता कुरुक्षेत्र में यज्ञ करते थे, और वे वहीं पैदा हुए थे, अतरू आदिमानव वे ही हैं।
5. बाइबिल व कुरआन के अनुसार मनुष्य का आदि जन्मस्थान "बाग अदन" (बंदरों का देश) है। ईश्वर ने चौथे आसमान (स्वर्ग) पर बगीचे में अपने जैसा पुतला "आदम" बनाया, उसके कान में फूंक कर जीवन डाल छोड़ दिया। घूमते–घूमते वह सो गया, उसकी पसली निकाल कर नारी "हव्वा" को रचा। दोनों के प्यार की जलन से शैतान ने हव्वा को निषेध पेड़ के फल को तोड़ने–खाने के लिए पटाया। दोनों ने ऐसा ही किया जिससे ईश्वर नाराज होकर उन्हें पृथ्वी पर फेंकते हुए मनुष्य की सन्तति पैदा करने के आदेश देता है, जिनसे ही विश्व में मनुष्य की योनि स्थापित हुई।

हिमालय में आदिमनुष्य की योनि होने की कसौटियां रू

1. हिमालय संसार में सर्वोच्च व पुरातन पर्वत श्रृंखला है।
2. पृथ्वी के जलमग्न होने पर ऊंचा होने के कारण हिमालय ही मनुष्य के बचने व पुनरोत्पन्न होने की सम्भावना है।
3. गर्म पृथ्वी हिमालय पर ही सबसे पहले ठंडी होने से वहां सबसे पहले मनुष्य के जीवन के लिए उपयुक्त जलवायु व भोजन की उपलब्धता की सम्भावना थी।
4. समशीतोष्ण जलवायु मनुष्य की सन्तति के लिए सबसे उपयुक्त है जो सबसे पहले

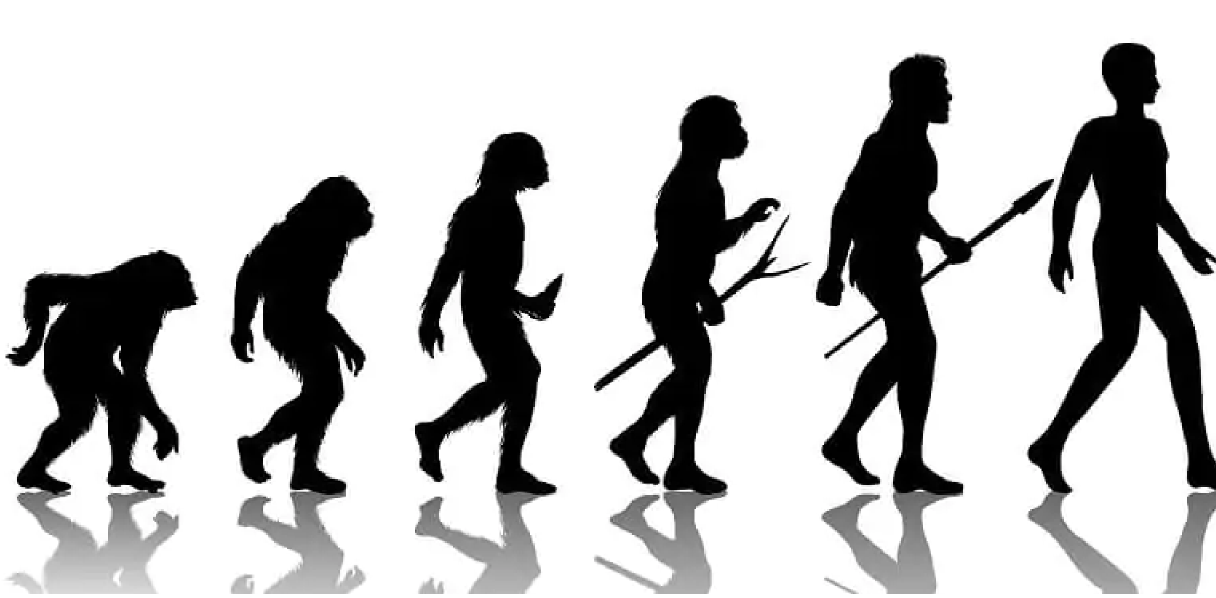

हिमालय पर ही पैदा हुई होगी।

5. यहाँ अभी भी प्रमाणस्वरूप मूलमानव रहते हैं।

6. हिमालय पर सभी रंग के विकास व विस्तार की परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं।

7. भारतीय आर्यों और ईरानियों के साहित्य से स्पष्ट है कि मनुष्य की उत्पत्ति हिमालय क्षेत्र में ही हुई थी, क्योंकि इस क्षेत्र को विश्व की हर प्रजाति के मनुष्य जानते हैं।

8. हिमालय पर आदिमानव की उत्पत्ति की धारणा से पूरा विश्व सहमत है।

9. डेविड "हारमोनिया" पुस्तक में लिखता है कि हिमालय सबसे ऊंचा है जिसे संस्कृत में 'मेरु' पर्वत कहते हैं। मेरु को ईरानी लोग मौरू, यूनानी मेरोस, दक्षिणी तुर्की मेरुवा, मिस्र वाले मेरई और असीरियाई मोरख कहते हैं।

10. शतपथ ब्राह्मण में "देविका पश्चिमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितं, तदप्पेदूतराच गृहे मनोरवसर्पर्णम्।" अर्थात् हिमालय में मानस नामक स्थान में मनुष्य की आदिसृष्टि हुई। देविका नदी के निकास के पश्चिमी किनारे पर मानस झील है, यह नाम अमैथुनीय सृष्टि के कारण पड़ा है।

11. हिमालय पर ही मनु का अवसर्पण (ज्लप्लवन) हुआ था।

12. महाभारत में "अस्मिन् हिमवतरू श्रृंगे नसवं बधनेतं आचरे" अर्थात् मनु ने तब प्रलय की स्थिति में शीघ्रता से जलप्लवन नाव को बाँधा था।

13. विश्वकर्मा ने भी इसी काल में विमान व नावें आदि निर्मित किये थे।

14. आयुर्वेद में चरक प्रसंग में "ऋषया खलुरू कदाचित् क्षात्रीना प्राणावराश्च" से लगता है कि ऋषि लोग पहले हिमालय पर ही रहते थे, जो हरिद्वार के मार्ग से दक्षिणभूमि में आये थे।

15. आर्यों की जन्मभूमि जर्मनी के विद्वान जर्मन व रूस बताते हैं। यूरोपियन मध्यएशिया एवं लोकमान्य तिलक उत्तरी ध्रुव, फारसी ईरान बताते हैं। नाना पावजी ने 'आर्यावर्तान्तील आर्यांचि जन्मभूमि' में लिखा है कि हिमालय में आर्य देवताओं का आदिकालिक जन्मस्थान है।

जीवाश्म (Bio-metrics):

आदिमानव के जीवाश्म विश्व में सबसे अधिक पूर्व अफ्रीका की रिफ्ट घाटी में सुरक्षित अवस्था में प्राप्त हुए हैं। यह घाटी इथियोपिया, केन्या व तंजानिया की सीमाओं को लांघती है। प्राप्त जीवाश्मों के अध्ययन से पता चला कि मानववंश का उद्भव कम से कम 25 लाख वर्ष पूर्व हुआ था। मानववंश के जनकों या कपिमानवों (चम) का उद्भव उनसे भी 25–30 लाख वर्ष (वर्तमान से 50–60 लाख वर्ष) पूर्व हो चुका था जबकि आधुनिक मानव की उत्पत्ति केवल 2–3 लाख वर्ष पूर्व ही हुई है। आस्ट्रैलोपिथैकस वंश को होमो वंश के जनक की मान्यता दी गई है। उपलब्ध प्रमाणों से पता चला है कि आस्ट्रैलोपिथैकस की एफोरेंसिस प्रजाति 40 लाख वर्ष पूर्व पूर्वी अफ्रीका की रिफ्ट घाटी में विद्यमान थी। दोनों में 3 अंतर हैं–मस्तिष्क कपिमानव की अपेक्षा आस्ट्रैलोपिथैकस का छोटा व होमो का अधिक चौड़ा था। दांत बड़े (चबाने वाले) व होमो के दांत छोटे (संशोधित खाद्य पदार्थ लेते थे), प्रथम चलते थे व पेड़ों पर भी चढ़ते थे, होमो सिर्फ दो पैरों पर ही चलते थे। लगभग 15–20 लाख वर्ष पूर्व के होमो हैनिलस, होमो रूडोल्फेंसिस तथा होमो एरगास्टर की जानकारी हो चुकी है।

नये वंश व प्रजातियों के उद्भव के लिए आनुवंशिकी भिन्नता चाहिए जो उत्परिवर्तन (डनजंजपवद) तथा पुनर्योजन द्वारा उत्पन्न होती है। उनमें से फिर प्रकृति सबसे सफल आनुवंशिक रूपों को चुनती है। इस प्रकार पुराने वंशों से नये वंश बनते हैं तथा उनकी नई प्रजातियों का उदय होता है। जलवायु परिवर्तन में ढलते–ढालते होमो एरगास्टर से होमो एरेक्टस व फिर होमो सेपियेंस विकसित हुआ माना गया। होमो एरेक्टस के जीवाश्म अफ्रीका के अलावा विश्व में भी फैले हुए हैं।

आधुनिक मानव (होमो सेपियेंस) 2 लाख वर्ष पूर्व संभवतरू अफ्रीका में विकसित हुआ और संसार में फैलता गया। मानव कोशिका का माइटोकांड्रिया (सूत्र कणिका) के डीएनए के अध्ययन से पता चला कि 2 लाख वर्ष पूर्व अफ्रीकी जमीन पर एक किसी महिला में आधुनिक डीएनए की माइटोकांड्रिया विकसित हुई जो उससे पूर्व मानव के माइटोकांड्रिया से ज्यादा सक्षम थी एवं उसकी संतानों से वंशज पर वंशजों में पहुंचते रहे और अनुकूलन क्षमता अधिक थी। फिर भी अभी मतभेद है कि होमो सेपियेंस अफ्रीका से फैला था या विश्व में कई जगह विकसित हुआ था।

प्रायरू 25 हजार वर्ष पूर्व मनुष्य की एक प्रजाति होमो नियण्डरथेंटेसिस लुप्त हो गई। मध्य पाषाण युग के औजार इसी मानव की कृति हैं, और नियण्डरथल व आधुनिक प्रजाति का विकास एक ही प्रजाति पिथैकेन्थोपाइन मानव (होमो एरेक्टस) से होना समझा जाता है। मानव कुल का प्रारंभिक सदस्य आस्ट्रैलोपिथैसाइन मानव माना जाता है जिससे पिथैकेन्थोपाइन मानव विकसित हुआ। मानव वैज्ञानिक डार्ट की राय में यह आदिम मानव अन्य प्राणियों की हड्डियों, दांतों व सींगों का उपयोग बिना रूपान्तरण के ही औजारों के रूप में प्रयोग करता था। एक गुफा में आस्ट्रैलोपिथैकस मानव के जीवाश्म के साथ बबून बन्दर व एन्टीलोप हिरन के कई जीवाश्म उपलब्ध हुए। दोनों पशुओं के सिर

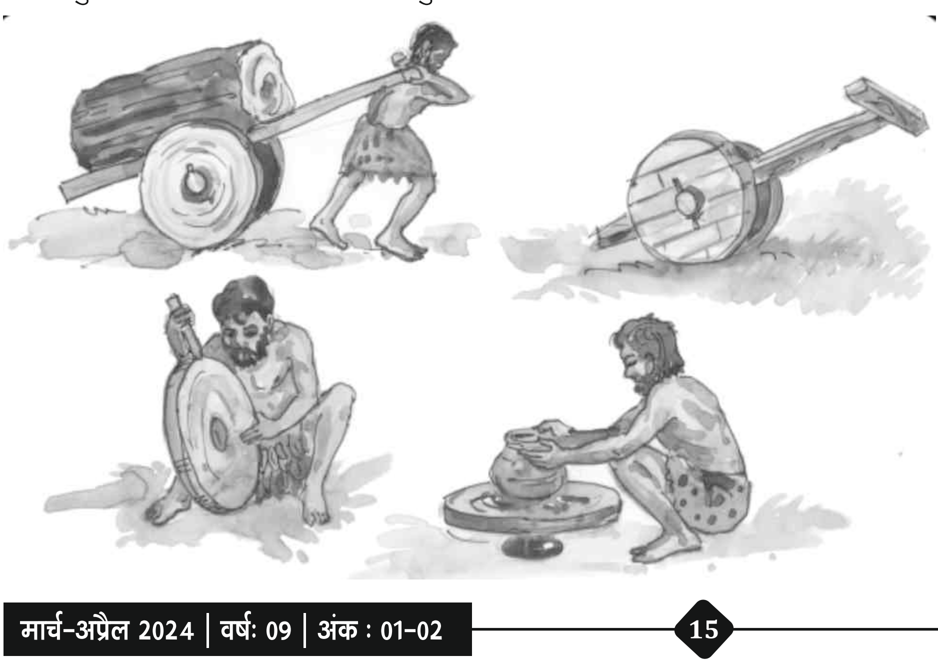

आदि पर चोटों के निशान थे जो जिन्दा पर ही बनाये गये थे, ऐसे निशान जीवाश्म में नहीं बनते।

यद्यपि लेवेंटाइन में रह रहे मानव 12 हजार वर्ष पूर्व गेहूं तथा जौ का खाद्यानों के रूप में प्रयोग कर चुके थे, परन्तु अफ्रीका में रह रहे मानव को इन खाद्यानों का ज्ञान नहीं था। मानव के कुछ समुदाय लगभग 10,000 से 12,000 वर्ष पूर्व गेहूं, जौ, मटर व मसूर का भोजन में प्रयोग करने लगे थे।

पूना से 100 किमी दूर कुकड़ी नदी के किनारे "बोरी" गाँव के पास ज्वालामुखी से निकली सफेद मिट्टी "ट्रेफा" प्राप्त हुई थी, जिस पर पुरातन पाषाण हथियार मिले। राख के नीचे 6–8 मीटर तक लाल मिट्टी है जिसके नीचे मानवी हथियार मिले थे। ज्वालामुखी राख में पोटेशियम होता है। कुछ पोटेशियम किरणोत्सारी होता है जिसका रूपांतरित निर्धारित समय के बाद आरगॉन गैस में हो जाता है। विस्फोट के समय यह हल्की गैस वायुमंडल में चली जाती है। अतरू इस समय राख में आरगॉन होती है। इसीलिए राख की आयु के लिए पोटेशियम व आरगॉन की मात्रा में तुलना की जाती है। बोरी गाँव की वह राख 14 लाख वर्ष की आंकी गई थी। तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सुमात्रा स्थित "टोबा" ज्वालामुखी की राख का गुणधर्म इस राख के गुणधर्म के समान है, जबकि दोनों के बीच 2000 किमी की दूरी है। बोरी की काली व लाल मिट्टियों के चुम्बकीय अध्ययन से उनकी आयु 7 लाख वर्ष है। बोरी में राख की बौछार का समय 'अश्युलीयन' कहा जाता है। अफ्रीका में इसी काल के मानवीय अवशेष मिले हैं। हड्डियों के आधार पर उन्हें होमो एरेक्टस कहा गया।

चार्ल्स राबर्ट का निष्कर्ष था कि प्रकृति में जीवों की एक जाति एक ही बार किसी क्षेत्र विशेष में उत्पन्न होती है। जैसे–जैसे उनकी आबादी बढ़ती है, उनका क्षेत्रीय विस्तार होता जाता है। विभिन्न भूभागों में पहुंच कर नई भौगोलिक परिस्थितियों में उनके लक्षणों में परिवर्तन आने लगते हैं जिनसे नई प्रजातियाँ बनती हैं। थामस माल्थस के आबादी के सिद्धांत के प्रभाव में डार्विन (1842) ने प्राकृतिक वरण (छंजनतंस ैमसमबजपवद) का सिद्धांत निश्चय कियादृअपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जीव आपस में संघर्ष करते हैं जो भ्रूण से लेकर जीवनपर्यंत तक चलता है। इसे जीवन–संघर्ष ;ैजतनहहसम वित सपमि) कहते हैं। जीवन–संघर्ष से प्रकृति को किसी जाति के ऐसे सदस्यों के वरण (चुनाव) में मदद मिलती है जो उसी जाति के अन्य सदस्यों से अधिक ताकतवर, योग्य व सहनशील होते हैं। इस प्रकार जातियों का प्राकृतिक वरण होता है। इसे सविस्तार लिख कर डार्विन ने अपने मित्र वनस्पति वैज्ञानिक जोसेफ डाल्टन हुकर को दिखाया था।

आल्फ्रेड रसेल वालेस का प्राकृतिक वैज्ञानिक आलेख डार्विन ने 18.06.1858 को पढ़ा तो आश्चर्य में पड़ गया। परन्तु उससे मिल कर लन्दन की लीनियस सोसाइटी में 01.07.1858 को डार्विन व वालेस का संयुक्त शोधपत्र पढ़ा गया। फिर 24.11.1859 को 'ऑन दी ओरीजिन ऑफ स्पिसीज बाय मीन्स ऑफ नेचुरल सेलेक्शन' डार्विन के नाम से प्रकाशित पुस्तक के कारण धर्मावलंबियों ने डार्विन को नास्तिक कहा, फिर भी दूसरी पुस्तक 'दी वेरिएसन ऑफ एनिमल्स एंड प्लांट्स अंडर डोमेस्टिकेसन' 1868 में और तीसरी पुस्तक 'दी डीसेंट ऑफ मैंन एंड सेलेक्सन इन् रिलेशन टू सेक्श' 1871 में छपी व काफी हद तक इसे शिक्षित वर्ग ने सराहा।

लगभग 6 करोड़ वर्ष पूर्व आधुनिक सीनोजोइक युग का प्रारंभ हुआ था जिसमें प्रकृति ने विशेषतरू स्तनधारी प्राणियों पर ध्यान दिया जो सफल रहे। ये प्राइमेट वर्ग के प्राणी थे। मनुष्य भी इसी वर्ग का सुविकसित प्राणी है। प्रकृति ने बुद्धि और कौशल के धनी मानव होमो सेपियेंस को लगभग एक लाख वर्ष पूर्व अर्द्धविकसित रूप में छोड़ दिया जिसने शनैरूशनैरू यह आधुनिक अवस्था प्राप्त की है।

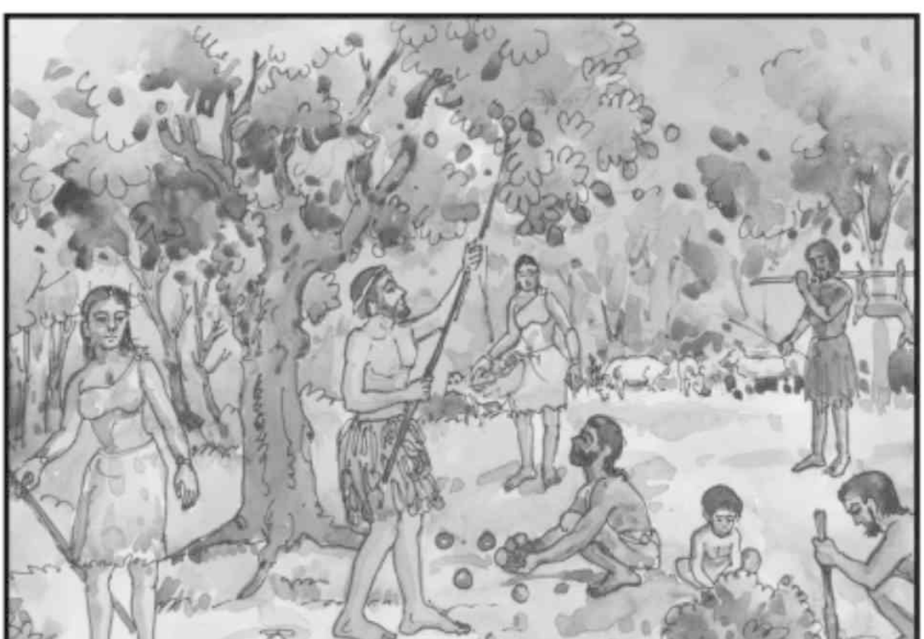

किसी भी प्राणी का उद्भव (Evolution – क्रमागत विकास) हमें सिखाता है कि मनुष्य छोटे व सरल जीव (स्तनधारी जैसे एप, चिम्पांजी, गोरिल्ला, गिब्बन, आदि) से धीरे–धीरे कई लाखों वर्षों में उत्परिवर्तन द्वारा विकसित हुआ है। अतरू मनुष्य जीवश्रेष्ठ व सर्वोच्च से अधिक नहीं है। यदि मनुष्य का आधुनिक विकास इन पशुओं से हुआ होता तो आज ये कुछ समानता रखने वाले पशु तब पशु। नहीं रह जाते, सभी मनुष्य हो जाते। इसका तात्पर्य कि मानव के आदिपूर्वज ये प्राणी नहीं हो सकते। जिस प्रकार पृथ्वी सूर्य के एक गर्म पिंड से करोड़ों वर्षों में धीरे–धीरे आज की अवस्था या जैविक सम्पदा के उद्भव की स्थिति में विकास कर पाई है, वह आदि से ऐसी ही नहीं थी। इसे स्पष्टतरू जानने के लिए "ओपेरिन थियुरी" को समझना होगा।

ओपेरिन थियुरी (अतिसंक्षिप्त) :

रूसी वैज्ञानिक अलेक्जेण्डर इवानोविच ओपेरिन (**AleÛander Ivanovich Oparin**) ने 1924 में "जीव की उत्पत्ति" नाम से निर्जीव पदार्थों से जीवन की उत्पत्ति का सर्वप्रथम सिद्धान्त प्रतिपादित किया था। ओपेरिन ने लुई पाश्चर के कथन "जीव की उत्पत्ति जीव से ही होती है" को सच बताते हुए कहा कि रसायनिक पदार्थों के जटिल संयोजन से ही जीवन का विकास हुआ है। विभिन्न खगोलीय पिण्डों पर मीथेन की उपस्थिति इस बात का संकेत है कि पृथ्वी का प्रारम्भिक वायुमण्डल मीथेन, अमोनिया, हाइड्रोजन तथा जलवाष्प से बना होने के कारण अत्यन्त अपचायक रहा होगा। इन तत्वों के संयोग से बने यौगिकों ने आगे संयोग कर और जटिल यौगिकों का निर्माण किया होगा। इन जटिल यौगिकों के विभिन्न विन्यासों के फलस्वरूप उत्पन्न नए गुणों ने जीवन की नियमितता की नींव रखी होगी। एक बार प्रारम्भ हुए जैविक लक्षण ने स्पर्धा व संघर्ष के मार्ग पर चल कर वर्तमान सजीव सृष्टि का निर्माण किया होगा।

गर्म पृथ्वी ठंडी होती गई। बर्षाजल के वाष्प से कार्बनिक व अकार्बनिक लवण, खनिज तत्व निचले स्थलों (वर्तमान समुद्र) में एकत्र होते गये। ईथेन, मीथेन, ब्यूटौन, एथिलीन, एसिटिलीन जैसे कार्बनिक यौगिक बने, जिनकी परस्पर प्रतिक्रिया के फलस्वरूप मिथाइल एल्कोहल, इथाइल एल्कोहल, ऑक्सी–हाइड्रो यौगिक, अमोनिया व जल की संयुक्त प्रतिक्रिया से जटिल कार्बनिक यौगिक बने। कालान्तर में पराबैंगनी किरणों (एक्सरेध्ध्थण्डरवोल्ट) के होते तमाम शर्करायें बनीं। ग्लिसरीन, वसा, अम्ल, अमीनो एसिड, लेक्टिक एसिड, पाइरिमिडीन, पाइरीन्स बने जो जीवन के मुख्य कारक हैं। अब न्युक्लियोराइड्स–आरएनए व डीएनए (हार्मोन्स की तरह सक्रिय) तरल बने जो स्वऊर्जावान थे। हैल्डेन (1920) ने इसे प्राजैविक तरल (च्तवइपवजपब`वनच) कहा। चूंकि इन्हीं से सारे पदार्थों, यौगिकों, तरलों की आपसी तीव्र प्रतिक्रिया के फलस्वरूप प्रोटीन्स और न्यूक्लीइक अम्ल बने, जिनसे न्यूक्लियोप्रोटीन्स बन कर द्विगुणित होने लगीं। जीवों के लिए सर्वप्रथम कोशिकाभित्ति (ब्मसस ूंसस) का निर्माण हुआ जिसके बावत न्यूक्लियस का विभाजन संभव हुआ।

अब एक समान कार्य के लिए समान यौगिकों द्वारा ऊतकों का निर्माण होने लगा। कोशिकाद्रव को छानने वाली कोशिकाभित्ति का निर्माण हुआ। कालान्तर में स्वपोषी जीव बने जो अपना भोजन खुद ही बनाने–पचाने लगे। कुछ कोशिकाएं सूर्यप्रकाश की उपस्थिति में भोजननिर्माण एवं हरित पदार्थ (क्लोरोफिल) का निर्माण करने लगीं और वनस्पति (पेड़–पौधे) के विकास का शुभारम्भ हुआ। इसी अवस्था से प्राणियों का उद्भव व विकास प्रारम्भ हुआ। अब कोशिकाओं ने स्वपोषी न्यूक्लियस, माइटोकांड्रिया, क्लोरोप्लास्ट, गॉलगी कॉम्प्लेक्स, लीमोजोम्स आदि स्वतंत्ररूप से निर्माण कर लिए और इस प्रकार वनस्पति के समानांतर एककोशीय प्राणी (जन्तु) का विकास संभव हो सका जैसे पैरामिशियम व अमीबा। कालान्तर में बहुकोशीय प्राणियों का उद्भव होता गया, साथ में धरती के वातावरण और आपस की विसम परिस्थितियों में जीने के लिए प्राणियों ने जीवन–संघर्ष प्रारंभ किया।

पहले एक–कोशिकीय (अमीबा, पैरामीशियम) जीव बने, जिनसे लाखों वर्ष में मछली आदि में उद्भव हुआ। बिना रीढ़ के जन्तुओं से रीढ़ वाले जन्तुओं का विकास हुआ जिन्हें समूहों में बांटा गया जैसे मत्स्य, पक्षी, सरीसृप, स्तनधारी, कृन्तक, उभयचर आदि। स्तनधारी प्राणियों में जंगली पशु आते हैं जैसे शेर, चीता, तेंदू, भेड़िया, बिल्ली, कुत्ता, ऊंट, हाथी, गाय, भैंस, मनुष्य आदि। यह निश्चित है कि ये सभी प्रारंभ में किसी एक पूर्वज से लाखों वर्ष में विकसित हुए हैं। सभी पक्षियों के भी एक पूर्वज रहे होंगे। इसी प्रकार स्तनधारी जीवों का दूसरा समूह गाय, भैंस, घोड़ा, गधा, बकरी, बन्दर, भालू, चिम्पांजी, गोरिल्ला, वनमानुष आदि के भी पूर्वज एक ही रहे होंगे जिनसे लाखों वर्ष में रूपांतरण होने से नये व आधुनिक प्राणी विकसित हुए होंगे जिनमें एक मनुष्य है। आधुनिक मनुष्य आदि से ऐसा ही नहीं था क्योंकि फॉसिल के अध्ययन से वह भिन्न था। समय के साथ उसने अपना शरीर, आवश्यकताएं, आवास, भोजन, यात्रा के साधन तथा सुरक्षा में विकास किया और आधुनिक मनुष्य बन गया। अर्वाचीन मानव पशु से पाषाण, ताम्र, रजत–स्वर्ण, मशीन, अस्त्र–शस्त्र युग पार करता हुआ अत्याधुनिक सभ्य, सुंदर, शिक्षित, वैज्ञानिक व ज्ञानी–ध्यानी बन गया।

इससे हम यह सिद्ध नहीं कर सकते कि मनुष्य किसी एक स्थान से पैदा होकर पूरे विश्व में फैला है, क्योंकि विश्व का मनुष्य एक स्थान पर पैदा होता तो वह एक तरह का होता, भिन्न–भिन्न नहीं होता जैसे नीग्रो, जापानी, एंग्लोइंडियन, द्रविड़, रेडइंडियन आदि।

निष्कर्ष :

यदि मनुष्य बन्दर से विकसित है तो आज के बन्दर मनुष्य होने चाहिए थे, बन्दर आज नहीं होने चाहिए थे। मनुष्य चिम्पांजी, गोरिल्ला, ओरंगुटान, गिब्बन, जलमानुष या वनमानुष से विकसित होता तो ये प्राणी आज नहीं होते, क्योंकि वो पूर्व में कभी मनुष्य में रूपांतरित हो गये होते। अब स्पष्ट है कि मनुष्य जिससे भी विकसित हुआ है वह प्राणी सिर्फ मनुष्य जैसा ही रहा होगा, परन्तु अविकसित, असभ्य, असामाजिक, अशिक्षित, अभाषीय और अपूर्ण। चूंकि विश्व में मनुष्य की कई प्रकातियाँ व भाषाएँ हैं, इसलिए मनुष्य एक बार में एक ही भूभाग में उत्पत्ति का स्थान नहीं रख सकता। वह भिन्न–भिन्न भूभागों पर अपने ही पूर्वजों से विकसित हुआ है।

पृथ्वी पर मानव कि उत्पत्ति कैसे हुई?

मानव की उत्पत्ति अभी भी अनबूझा सवाल है। मनुष्य की उत्पत्ति कहाँ शरू हुई थी, कैसे हुई थी, और कैसे विश्व में फैली? इसके आदिपूर्वज (चतपउंजमे) कौन थे? क्या मनुष्य ऐसा ही आदि में था जैसा आज है? ये सवाल अमानव प्राणियों के लिए भी मनुष्य की उत्पत्ति के बराबर महत्व रखते हैं। गाय, घोड़ा, हाथी, कबूतर, चमगादड़, सर्प, मछली कैसे, कब और कहाँ उत्पन्न हुए? हम मनुष्य हैं इसलिए मनुष्य से संबंधित हर जानकारी के लिए जिज्ञासु, व्याकुल व उत्सुक ज्यादा होते हैं। मेरी उत्पत्ति तो मेरे माता–पिता से हुई, माता–पिता की उत्पत्ति उनके माता पिता से हुई, ऐसा हीं वंशानुगत, क्रमनुसार होते आ रहा है।

भारतीय पुलिस का इतिहास

सिंधू काल के इतिहास में दंडधारी शब्द का उल्लेख आता है। भारतवर्ष में पुलिस शासन के विकासक्रम में उस काल के दंडधारी को वर्तमान काल के पुलिस जन के समकक्ष माना जा सकता है। प्राचीन भारत का स्थानीय शासन मुख्यतरू ग्रामीण पंचायतों पर आधारित था। गाँव के न्याय एवं शासन संबंधी कार्य ग्रामिक नामी एक अधिकारी द्वारा संचलित किए जाते थे। इसकी सहायता और निर्देशन ग्राम के वयोवृद्ध करते थे। यह ग्रामिक राज्य के वेतनभोगी अधिकारी नहीं होते थे वरन् इन्हें ग्राम के व्यक्ति अपने में से चुन लेते थे। ग्रामिकों के ऊपर 5–10 गाँवों की व्यवस्था के लिए 'गोप' एवं लगभग एक चौथाई जनपद की व्यवस्था करने के लिए 'स्थानिक' नामक अधिकारी होते थे। प्राचीन यूनानी इतिहास वेतताओं ने लिखा है कि इन निर्वाचित ग्रामीण अधिकारियों द्वारा अपराधों की रोकथाम का कार्य सुचारु रूप से होता था और उनके संरक्षण में जनता अपने व्यापार उद्योग–निर्भय होकर करती थी।

भारतीय पुलिस

सल्तनत और मुगल काल में भी ग्राम पंचायतों और ग्राम के स्थानीय अधिकारियों की परंपरा अक्षुण्ण रही। मुगल काल में ग्राम के मुखिया मालगुजारी एकत्र करने, झगड़ों का निपटारा आदि करने का महत्वपूर्ण कार्य करते थे और निर्माण चौकीदारों की सहायता से ग्राम में शांति की व्यवस्था स्थापित रखे थे। चौकीदार दो श्रेणी में विभक्त थे– (1) उच्च, (2) साधारण। उच्च श्रेणी के चौकीदार अपराध और अपराधियों के संबंध में सूचनाएँ प्राप्त करते थे और ग्राम में व्यवस्था रखने में सहायता देते थे। उनका यह भी कर्तव्य था कि एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक यात्रियों को सुरक्षापूर्वक पहुँचा दें। साधारण कोटि के चौकीदारों द्वारा फसल की रक्षा और उनकी नापजोख का कार्य करता जाता था। गाँव का मुखिया न केवल अपने गाँव में अपराध शासन का कार्य करता था वरन् समीपस्थ ग्रामों के मुखियों को उनके क्षेत्र में भी अपराधों के विरोध में सहायता प्रदान करता था। शासन की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों की देखभाल फौजदार और नागरिक क्षेत्रों की देखभाल कोतवाल के द्वारा की जाती थी।

मुगलों के पतन के उपरांत भी ग्रामीण शासन की परंपरा चलती रही। यह अवश्य हुआ कि शासन की ओर से नियुक्त अधिकारियों की शक्ति क्रमशः लुप्तप्राय होती गई। सन् 1765 में जब अंग्रेजों ने बंगाल की दीवानी हथिया ली तब जनता का दायित्व उनपर आया। वारेन हेस्टिंग्ज ने सन् 1781 तक फौजदारों और ग्रामीण पुलिस की सहायता से पुलिस शासन की रूपरेखा बनाने के प्रयोग किए और अंत में उन्हें सफल पाया। लार्ड कार्नवालिस का यह विश्वास था कि अपराधियों की रोकथाम के निमित्त एक वेतन भोगी एवं स्थायी पुलिस दल की स्थापना आवश्यक है। इसके निमित्त जनपदीय मजिस्ट्रेटों को आदेश दिया गया कि प्रत्येक जनपद को अनेक पुलिसक्षेत्रों में विभक्त किया जाए और प्रत्येक पुलिसक्षेत्र दारोगा नामक अधिकारी के निरीक्षण में सौंपा जाय। इस प्रकार दारोगा का उद्भव हुआ। बाद में ग्रामीण चौकीदारों को भी दारोगा के अधिकार में दे दिया गया।

इस प्रकार मूलतः वर्तमान पुलिस शासन की रूपरेखा का जन्मदाता लार्ड कार्नवालिस था। वर्तमान काल में हमारे देश में अपराधनिरोध संबंधी कार्य की इकाई, जिसका दायित्व पुलिस पर है, थाना अथवा पुलिस स्टेशन है। थाने में नियुक्त अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा इन दायित्वों का पालन होता है। सन् 1861 के पुलिस ऐक्ट के आधार पर पुलिस शासन प्रत्येक प्रदेश में स्थापित है। इसके अंतर्गत प्रदेश में महानिरीक्षक की अध्यक्षता में और उपमहानिरीक्षकों के निरीक्षण में जनपदीय पुलिस शासन स्थापित है। प्रत्येक जनपद में सुपरिटेंडेंट पुलिस के संचालन में पुलिस कार्य करती है। सन् 1861 के ऐक्ट के अनुसार जिलाधीश को जनपद के अपराध संबंधी शासन का प्रमुख और उस रूप में जनपदीय पुलिस के कार्यों का निर्देशक माना गया है।,श

भारत और चीन की तुलना करने के लिए 13 पैरामीटर

भारत और चीन की तुलना करने के लिए 13 पैरामीटर

भारत और चीन की तुलना करने के लिए 13 पैरामीटर

आइए एक तुलनात्मक अध्ययन करें कि भारत और चीन के बीच रक्षा क्षेत्र में कौन अधिक शक्तिशाली है। हम चीन के रक्षा बजट, चीन की वायुसेना और भारत–चीन युद्ध पर चर्चा करेंगे.

भारत बनाम चीन रक्षा तुलना,भारत बनाम चीन एयरफोर्स

1962 का भारत–चीन युद्ध

चीनी सरकार ने वित्तीय वर्ष 2022 के लिए रक्षा बजट 1.45 ट्रिलियन डॉलर (23 बिलियन अमेरिकी डॉलर) करने की घोषणा की है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 7.1 प्रतिशत अधिक है। आज, सरकारी स्वामित्व वाली चाइना डेली ने उस मसौदे में बजट प्रस्ताव का हवाला देते हुए रिपोर्ट दी, जिसे मंत्री ली केकियांग ने देश की संसद नेशनल पीपुल्स कांग्रेस (एनपीसी) को भेजा था। वृद्धि का मतलब है कि चीन का रक्षा बजट भारत के मुकाबले तीन गुना से अधिक होगा, जो 2022 में 5.25 लाख करोड़ (लगभग 70 बिलियन अमेरिकी डॉलर) होगा। चीन में पिछले साल, रक्षा व्यय पहली बार 200 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया। . 2021 में चीन का रक्षा बजट 6.8 प्रतिशत बढ़कर 209 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। चीन के पास संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरी सबसे बड़ी वायु सेना है।

भारत बनाम चीन रक्षा तुलना श्रमशक्ति

भारत।	चीन
सक्रिय कार्मिकः	
1, 455, 552,	185, 000
रिजर्व कार्मिकः	
1,155,000	8,000,000
सेना के लिए उपलब्धः भूमि सेना	
319,129,420	385,821,101

भारत चीन टेंकः

4,614 5,750
बख्तरबंद लड़ाकू वाहनः
8,600 14,130

कुल तोपखानेः

2,799 7,094

स्व–चालित तोपखानेः
100 2,720

रॉकेट तोपखानेः
960 3,140

वायु सेना
भारत चीन
कुल विमानः
2,263 4,630

लड़ाकू विमानः
173 1,049

बहुउद्देशीय विमानः
405 1,130

आक्रमण विमानः
120 120

हेलीकाप्टरः
729 1,355

यूसीएवी (लड़ाकू ड्रोन):
12 151

नौसेना
भारत चीन
कुल नौसैनिकः
267 742

हवाई जहाज वाहकः
1 4

विध्वंसकः
11 38

फ्रिगेट्सः

13 54

कार्वेटः
23 73

पनडुब्बियाँः
16 74

भारत बनाम चीन एयरफोर्स

पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एयर फोर्स (**PLAAF**), अपने बेड़े और रणनीतिक सूची के मामले में भारतीय वायु सेना (ए।थ) की तुलना में अधिक शक्तिशाली है।

हालाँकि, **IAF** रणनीतिक उद्देश्यों और अनुभवी सैनिकों के लिए अपने प्लेटफार्मों और ठिकानों में अधिक विश्वसनीय है

चीन

चीन के पास विश्व स्तर पर दूसरी सबसे बड़ी वायु सेना है , जबकि ए।थ विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर है।

च्स्।।थ के विशाल लड़ाकू विमान और आधुनिक वायु रक्षा प्रणालियाँ **IAF** के बेड़े के आकार को चुनौती देती हैं।

च्स्।।थ के पास 2,000 से अधिक युद्धक विमान हैं, जो **IAF** के 900 लड़ाकू विमानों से दोगुने से भी अधिक हैं।

PLAAF एक रणनीतिक लंबी दूरी का बमवर्षक बेड़ा है और इसके पास **IAF** की तुलना में अधिक रणनीतिक संपत्तियां हैं, जिनमें हवाई चेतावनी और नियंत्रण प्रणाली (**AWACS**) विमान और लड़ाकू ड्रोन शामिल हैं।

भारत

भारतीय वायुसेना के पायलटों के पास ऊंचाई पर युद्ध अभियानों का व्यावहारिक अनुभव है।

एलएसी के नजदीक बेस का स्थान भारत की हवाई संपत्तियों के लिए निर्बाध समर्थन की गारंटी देता है।

हवाई युद्ध के लिए युद्ध–परीक्षणित प्लेटफॉर्म, जैसे कि एएच–64ई एएयरक्राफ्टडी सीएच–47 एफ चिनूक, संघर्ष के दौरान विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। परिवहन विमानों का आधुनिक बेड़ा परिचालन क्षेत्रों में

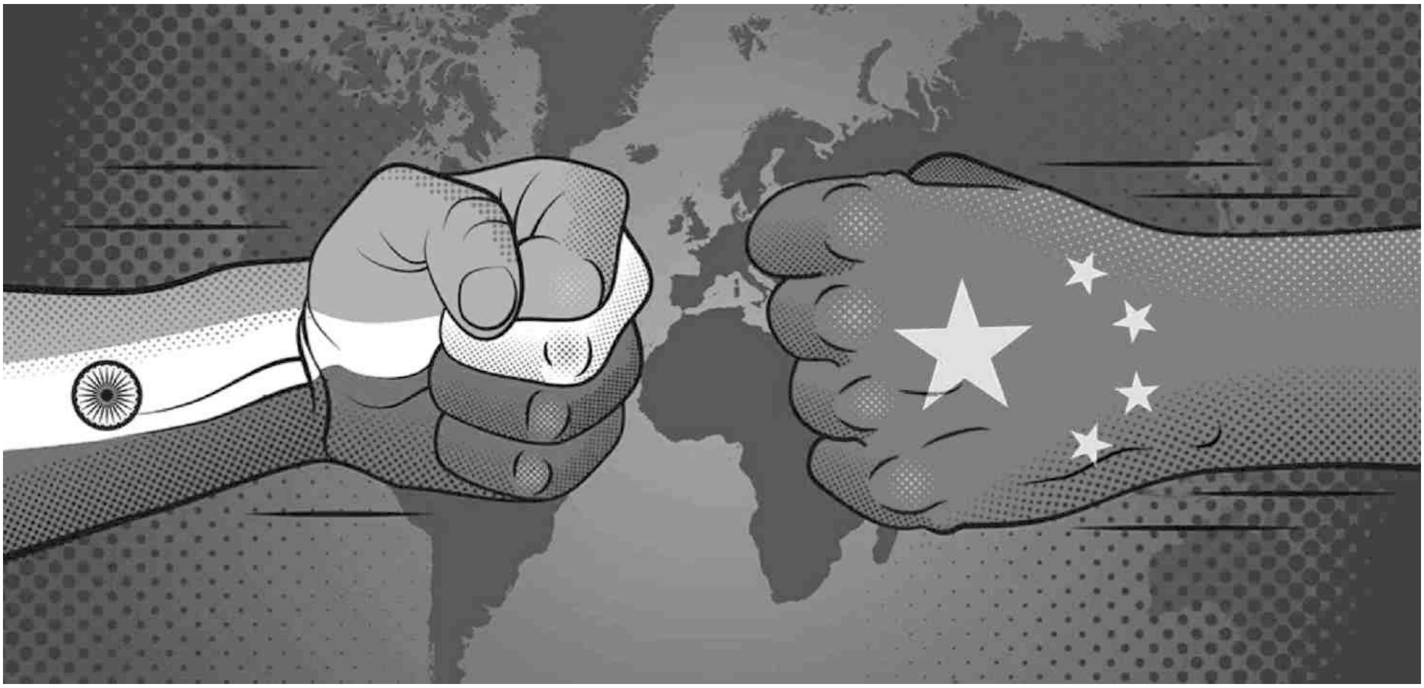

उपकरण और आपूर्ति के त्वरित हस्तांतरण की अनुमति देता है।

जबकि **PLAAF J-20** को पेश करने की तैयारी कर रहा है, इसकी गुप्त विशेषताओं के कारण इसे पांचवीं पीढ़ी कहा गया था। इसे **IAF** राफेल से कमतर माना जाता है, जो 4. 5—पीढ़ी का विमान है।

1962 का भारत—चीन युद्ध

भारत को इस बात की आशा नहीं थी कि चीन कभी उस पर आक्रमण करेगाय हालाँकि, ऐसा हुआ।

20 अक्टूबर 20, 1962 को भारत को हमले का सामना करना पड़ाय यह 1962 में चीन—भारत या भारतीय चीन युद्ध बन गया । चीन के हमले का सामना न करने के विचार ने भारतीय सेना को तैयार नहीं होने दिया और इसके परिणामस्वरूप 10,000 से 20,000 भारतीय सैनिकों और 80,000 चीनी सैनिकों के बीच टकराव हुआ। युद्ध लगभग एक महीने तक चला और अंततः 21 नवंबर को समाप्त हुआ, जिस दिन चीन ने युद्धविराम की घोषणा की।

गलवान घाटी में क्या हुआ था?

2020 में चीन और भारत के बीच सीमा संघर्ष 15 जून को गलवान घाटी में छह घंटे तक भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच हुई हिंसक झड़प का परिणाम था।

हालाँकि लड़ाई का सटीक कारण ज्ञात नहीं है, दोनों पक्षों ने एक—दूसरे पर लड़ाई भड़काने का आरोप लगाया।

लड़ाई तीव्र थी और गोलीबारी के साथ नहीं था। भारतीय मीडिया के अनुसार, 43 चीनी मौतों के अलावा बीस भारतीय भी थे।

चीनी राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने हताहतों की संख्या की पुष्टि की लेकिन हताहतों की संख्या का खुलासा करने से इनकार कर दिया।

1962 और 2020 के बीच छह दशकों के अंतराल और 1976 में राजनयिक गतिविधि में लौटने के बाद समझौतों की एक श्रृंखला के बावजूद, दोनों घटनाओं में कुछ समानताएं हैं।

निष्कर्ष

बजट में बढ़ोतरी की उम्मीद दो कारकों से है. पहला, चीन का आधुनिकीकरण कार्यक्रम पूरे जोरों पर है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) द्वारा निर्धारित शताब्दी उद्देश्यों के तहत 2027 तक आधुनिकीकरण किया जाएगा। सीपीसी ने निर्णय लिया है कि भविष्य में ष्राष्ट्रीय रक्षा और सशस्त्र बलोंष के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। 2035 में पूरा होगा। चीन के रक्षा बजट खर्च में बढ़ोतरी का भारत पर बड़ा असर पड़ेगा। खर्च में बढ़ोतरी से सेना में चीनी और भारतीय क्षमताओं के बीच बड़ा अंतर हो जाएगा। चीन के आधुनिकीकरण पर जोर देने और सेना के भीतर उच्च तकनीक प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर देने के साथ, भारत के पास हार्ड पावर के क्षेत्र को भरने के लिए एक महत्वपूर्ण कमी है।

एक नजर में भारत

सामान्य जानकारी

भारत विश्व की सबसे पुरानी सम्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने–आप को बदलते समय के साथ ढ़ालती भी आई है। आजादी पाने के बाद भारत में बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है। भारत कृषि में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब दुनिया के सबसे औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में भी इसकी गिनती की जाती है। साथ ही उन चंद देशों में भी इसका शुमार होने लगा है, जिनके कदम चांद तक पहुंच चुके हैं। भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग कि.मी. है, जो हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से शुरू होकर दक्षिण के विषुवतीय वर्षा वनों तक फैला हुआ है। विश्व का सातवां बड़ा देश होने के नाते भारत शेष एशिया से अलग दिखता है जिसकी विशेषता पर्वत और समुद्र ने तय की है और ये इसे विशिष्ट भौगोलिक पहचान देते हैं। उत्तर में बृहत् पर्वत श्रृंखला हिमालय से घिरा यह कर्क रेखा से आगे संकरा होता जाता है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर इसकी सीमा निर्धारित करते हैं। पूरी तरह उत्तरी गोलार्ध में स्थित भारत की मुख्यभूमि 8 डिग्री 4 मिनट और 37 डिग्री 6 मिनट उत्तरी अक्षांश और 68 डिग्री 7 मिनट तथा 97 डिग्री 25 मिनट पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है । उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिकतम लंबाई 3,214 कि.मी. और पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम चौड़ाई 2,933 कि.मी. है। इसकी जमीनी सीमाओं की लंबाई लगभग 15,200 कि.मी. है। जबकि मुख्यभूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है।

भूगोल

भारत के बारे में भौगोलिक जानकारी ब्यौरे विवरण

स्थान हिमालय द्वारा भारतीय पेनिसुला का मुख्य भूमि एशिया से अलग किया गया है। देश पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण में हिन्द महासागर से घिरा हुआ है।

भौगोलिक समन्वय यह पूर्ण रूप से उत्तरी गोलार्ध मे स्थित है, देश का विस्तार 8.4 और 37.6 स अक्षांश पर इक्वेटर के उत्तर में, और 68.7 और 97.25 देशान्तर पर है।

स्थायी मान समय जी एम टी. 05:30 क्षेत्र 3.3 मिलियन वर्ग किलोमीटर देश का टेलीफोन कोड. 91 सीमाओं में स्थित देश उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान और पाकिस्तान, भूटान और नेपाल उत्तर मेंय म्यांमार पूरब में, और पश्चिम बंगाल के पूरब में बंगलादेश। श्रीलंका भारत से समुद्र के संकीर्ण नहर द्वारा अलग किया जाता है जो पाल्क स्ट्रेट और मनार की खाड़ी द्वारा निर्मित है।

समुद्रतट 7,516.6 किलोमीटर जिसमें मुख्य भूमि, लक्षद्वीप, और अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह शामिल हैं।

जलवायु भारत की जलवायु को मोटे तौर पर उष्णकटिबंधीय मानसून के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। परन्तु भारत का अधिकांश उत्तरी भाग उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के बाहर होने के बावजूद समग्र देश में उष्णकटिबंधीय जलवायु है जिसमें अपेक्षाकृत उच्च तापमान और सूखी सर्दी पड़ती है। चार मौसम हैः

सर्दी (दिसम्बर–फरवरी)

गर्मी (मार्च–जून)

दक्षिण पश्चिम मानसून का मौसम (जून–सितम्बर)

मानसून पश्च मौसम (अक्तूबर–नवम्बर)

भूभाग मुख्य भूमि में चार क्षेत्र हैं नामतः ग्रेट माउन्टेन जोन, गंगा और सिंधु का मैदान, रेगिस्तान क्षेत्र और दक्षिणी पेनिंसुला।

प्राकृतिक संसाधन कोयला, लौह अयस्क, मैगनीज अयस्क, माइका, बॉक्साइट, पेट्रोलियम, टाइटानियम अयस्क, क्रोमाइट, प्राकृतिक गैस, मैगनेसाइट, चूना पत्थर, अराबल लेण्ड, डोलोमाइट, माऊलिन, जिप्सम, अपादाइट, फोसफोराइट, स्टीटाइल, फ्लोराइट आदि।

प्राकृतिक आपदा मानसूनी बाढ़, फ्लेश बाढ़, भूकम्प, सूखा, जमीन खिसकना।

पर्यावरण – वर्तमान मुद्दे वायु प्रदूषण नियंत्रण, ऊर्जा संरक्षण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, तेल और गैस संरक्षण, वन संरक्षण, आदि।

पर्यावरण–अंतर्राष्ट्रीय करार पर्यावरण और विकास पर रीयो की घोषणा, जैव सुरक्षा पर कार्टाजेना प्रोटोकॉल, जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राज्य ढांचागत कार्य सम्मेलन के लिए क्योटो प्रोटोकॉल, विश्व व्यापार करार, नाइट्रोजन ऑक्साइड के सल्फर उत्पसर्जन को कम करने सर उनके ट्रांस बाउन्ड्री फ्लेक्सेस (नोन प्रोटोकॉल) पर एल आर टी ए पी हेन्सिंकी प्रोटोकॉल, वोलाटाइल ऑरगनिक समिश्रण या उनके ट्रांस बाऊन्ड्री फलाक्सेस (वी वो सी प्रोटोकॉल) के उत्सर्जन से संबंधित एल आर टी ए पी के लिए जेनेवा प्रोटोकॉल।

भूगोल–टिप्पणी भारत दक्षिण एशिया उप महाद्वीप के बड़े भूभाग पर फैला हुआ है।

भारत के विभिन्न नक्शे डाउनलोड करें शारीरिक, राजनीतिक, जनसंख्या, वर्षा गिरावट, रेलवे और सागर मार्ग, सड़क, मिट्टी, आदि के नक्शे

व्यक्ति

भारतीय नागरिकों के बारे में सूचना ब्यौरे विवरण

(आबादी) जनसंख्या 1 मार्च, 2011 की स्थिति के अनुसार भारत की जनसंख्या 1,210,193,422 (623.7 मिलियन पुरुष और 586.4 मिलियन महिला) की।

जनसंख्या वृद्धि दर औसत वार्षिक घातांकी वृद्धि दर वर्ष 2001–2011 के दौरान 1.64 प्रतिशत है।

जन्म दर वर्ष 2009 तक अनुमानित जन्म दर 7.3 है।

मृत्यु दर वर्ष 2009 तक अनुमानित मृत्यु दर 18.3 है।

संम्भावित जीवन दर 65.8 वर्ष (पुरुष) 68. 1 वर्ष (महिला) (सितम्बर 2006–2011 की स्थिति के अनुसार)

लिंग अनुपात 2011 की जनगणना के अनुसार 940

राष्ट्रीयता भारतीय

जातीय अनुपात सभी पांच मुख्य प्रकार की जातियां, ऑस्ट्रेलियाड, मोंगोलॉयड, यूरोपॉयड, कोकोसिन और नीग्रोइड को भारत की जनता के बीच प्रतिनिधित्व मिलती है।

धर्म वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 1,028 मिलियन देश की कुल जनसंख्या में से 80.5 प्रतिशत के साथ हिन्दुओं की अधिकांशता है दूसरे स्थान पर 13.4 प्रतिशत की जनसंख्या वाले मुस्लिम इसके बाद ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और अन्य आते हैं।

भाषाएं भारतीय संविधान द्वारा 22 विभिन्न भाषाओं को मान्यता दी गई है, जिसमें हिन्दी आधिकारिक भाषा है। अनुच्छेद 343 (3) भारतीय संसद को विधि के अधीन कार्यालयीन उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी के उपयोग को जारी रखने का अधिकार देता है।

साक्षरता 2011 की जनसंख्या के अनंतिम परिणाम के अनुसार देश मे साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। 82.14 प्रतिशत पुरुषों के लिए और महिलाओं के लिए 65.46 है।

सरकार

भारत सरकार के बारे में सूचना ब्यौरे विवरण

देश का नाम रिपब्लिक ऑफ इंडियाय भारत गणराज्य

सरकार का प्रकार संसदीय सरकार पद्धति के साथ सामाजिक प्रजातांत्रिक गणराज्य।

राजधानी नई दिल्ली

प्रशासनिक प्रभाग 28 राज्य और 8 संघ राज्य क्षेत्र।

आजादी 15 अगस्त 1947 (ब्रिटिश उपनिवेशीय शासन से)

संविधान भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।

कानून प्रणाली भारत का संविधान देश की न्याय प्रणाली का स्रोत है।

कार्यपालिका शाखा भारत का राष्ट्रपति देश का प्रधान होता है, जबकि प्रधानंत्री सरकार प्रमुख होता है और मंत्रिपरिषद् की सहायता से शासन चलाता है जो मंत्रिमंडल मंत्रालय का गठन करते हैं।

विधायिका शाखा भारतीय विधायिका में लोक सभा (हाउस ऑफ दि पीपल) और राज्य सभी (राज्य परिषद्) संसद के दोनों सदनों का गठन करते हैं।

न्यायपालिका शाखा भारत का सर्वोच्च न्यायालय भारतीय कानून व्यवस्था का शीर्ष निकाय है इसके बाद अन्य उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालय आते हैं।

झण्डे का वर्णन राष्ट्रीय झण्डा आयताकार तिरंगा है जिसमें केसरिया ऊपर है, बीच में सफेद, और बराबर भाग में नीचे गहरा हरा है। सफेद पट्टी के केन्द्र में गहरा नीला चक्र है जो सारनाथ में अशोक चक्र को दर्शाता है।

राष्ट्रीय दिवस 26जी जनवरी (गणतंत्र दिवस)

15जी अगस्त (स्वतंत्रता दिवस)

2दक अक्तूबर (गांधी जयंती, महात्मा गांधी का जन्म दिवस)

व्यावहारिक प्रेम

व्यावहारिक प्रेम के बारे में तो सब बात करते हैं। आपको पहले से ही इस बारे में पता होगा। पति—पत्नी, भाई—बहन, माता—पिता, बाप बेटे, के बीच में जो प्यार होता है वह व्यवहारिक प्यार कहलाता है।

जबकि आध्यात्मिक प्रेम का मतलब सिर्फ और सिर्फ समर्पण होता है। वहां पर सिर्फ दूसरों की खुशियों की बात की जाती है, खुद को भुला देना होता है। उदाहरण के लिए एक वृक्ष और इंसानों के बीच जो संबंध है उसको आध्यात्मिक प्रेम बोल सकते हैं। वहां पर वृक्ष अपने लिए अपने मुंह से कुछ भी नहीं मांगता है। इंसान खुद वृक्ष की जरूरत को समझते हुए खाद पानी देता है और उसके बदले में वृक्ष अपने सारे फल किसी को भी तोड़ने देता है। अपनी ऑक्सीजन हर किसी को प्रदान करता है। अपने वृक्ष की लकड़ी किसी को भी ले जाने देता है।

पेड़ इस चीज की फिक्र नहीं करता कि जिसने मुझे पाल पोस कर बड़ा किया है। मैं सिर्फ उसी को अपने संसाधनों का उपयोग करने दूं। एक बच्चा, बूढ़ा, जवान, अनजान इंसान उस वृक्ष के फल को तोड़ कर खा सकता है यहां तक कि जानवर भी उस पेड़ की पत्तियों को कभी भी खाते रहते हैं। वहां पर पेड़ अपने बारे में सोचकर किसी को मना नहीं करता है कि इस वक्त मैं तुम्हें फल, पत्तियां या लकड़ी देने के लायक नहीं हूं। तो यहां पर वृक्ष आध्यात्मिक प्रेम प्रदान कर रहा है।

इंसानों के बीच में आध्यात्मिक प्रेम थोड़ा मुश्किल है। एक मां अपने बच्चे से अधिकतर आध्यात्मिक प्रेम निभाती है क्योंकि वह बिना कुछ वापसी की उम्मीद के अपने बच्चे की परवरिश करती है और हमेशा उसकी खुशियों के बारे में सोचती है। बाद में बच्चे बड़े हो जाने पर बूढ़े मां बाप को अनदेखा करने लगते हैं। तो यहां पर मां बाप ही आध्यात्मिक प्रेम को निभा पाते हैं। लेकिन कहीं—कहीं देखने को मिलता है की मां बाप हंड्रेड परसेंट समर्पित नहीं होते, कभी मां—बाप के नजरियों से हमें अपनी जिंदगी को चुनना होता है। कैरियर के फैसले लेने होते हैंय शादी के लिए पति पत्नी को उनके हिसाब से चुनना पड़ता है। लेकिन 90 परसेंट तो मां—बाप आध्यात्मिक प्रेम निभाते ही हैं। मनोवैज्ञानिकता के अनुसार सभी पुरुषों को सुन्दरी से प्रेम करने की इच्छा रहती है,और स्त्रियों को अमीर घरानों के राजकुमारों से, इसी कारण प्रेम संबंधों को सफलता प्राप्त नहीं हो रही है।

प्रधान संपादक

'जन सुराज अभियान' बिहार में एक नई क्रांति की लहर

आज ''जन सुराज'' अभियान बिहार में काफी तेजी से विस्तार कर ऊपरी शिखर पर है,परिणाम हर जनता के दिलों में एक नई क्रांति भर आया है।

'जय जन सुराज, जय जय बिहार' यह नारे बिहार के चारों दिशाओं में गूंज रही है। आदरणीय श्री प्रशांत किशोर जी का पदयात्रा और नई सोच बिहार के हर दिलों और दिमाग में जोश बनाकर छाए हुए हैं। ' जन सुराज का क्या अर्थ है?

जन सुराज का अर्थ श्जनश यानी श्जनताश श्सुराजश सु=सुन्दर,सुराज यानी श्सुंदर राजश ष्जनता का सुंदर राजष आदरणीय श्री प्रशांत किशोर सर का उद्देश्य जन सुराज के माध्यम से जनता का सुंदर राज लाना चाह रहे हैं ताकि हर नागरिक को उनके अधिकार मिल सके।जन सुराज की पहली प्राथमिकता बिहार से पलायन कर चुके लोगों को अपने गृह राज्य में बुलाकर रोजगार की समुचित व्यवस्था करना एवं पलायन को रोकना है क्योंकि बिहार के कर्मठ मेहनती व्यक्ति चंद पैसों की खुशी में जीवन यापन कर मजदूरी के साथ मजबूरी में जी रहे हैं।बिहार के मजदूरों के मेहनत के फल से दूसरा राज्य मजबूत और आर्थिक ताकतवर होकर आगे बढ़ रहा है और बिहार आगे से पीछे कि तरफ खिसक रहा है क्योंकि यहां की सरकार अपना खजाना भरने में लगे हैं रोजगार के नाम पर अधिकतर युवा बेरोजगार सडकों पर भटक रहे हैं और जीवन में आर्थिक तंगी से परेशान हो कर दूसरे राज्यों और देशों में पलायन कर रहे हैं ।वहीं फायदा उठा कर दूसरा राज्य आगे बढें जा रहें हैं लेकिन आपके बच्चों का भविष्य वही

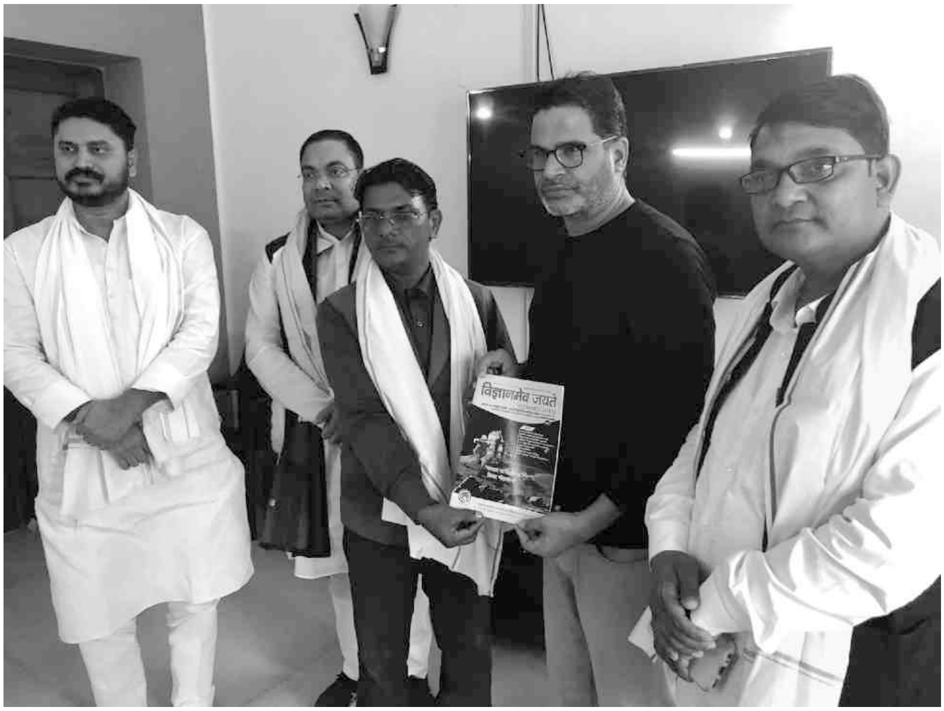

मजदूरी और नौकरी और नौकर बनने के लिए अग्रसर हो रहा है और आपका राज्य पिछड़ा राज्य बना जा रहा है इसलिए आपको जागना जरूरी है अपने बच्चों के भविष्य के लिए आपको आगे आना जरूरी है। अपने गृह राज्य के लिए भी आपके अपने कुछ कर्तव्य है अगर वह कर्तव्य आप नहीं निभाएंगे तो आने वाला आपकी पीढ़ी ऐसे ही जीवन जीते रहेगी, गुलामी के तले दबकर दूसरों के नौकरी और नौकर बनकर। अगर आज आप नहीं उठाते हैं तो इससे भी भयावह भविष्य आपके बच्चों का होगा।अपने अधिकार को जानिए समझिए और जनसुरज अभियान में कम से कदम मिलाकर आगे बढ़िया।आप जिस भी राज्य में मेहनत मजदूरी करने जाते हैं वहां आपको हेय दृष्टि से बिहारी शब्द के साथ हेय भावनाओं से प्रताड़ित और शर्मिंदगी दिया जाता है,वहां भी आप चुप्पी साधे रहते हैं। आखिर क्यों? इसकी क्या वजह है? क्या कभी आप सब इन बिंदुओं पर चिंतन मंथन किये?नहीं! और हर पीड़ा झेलते हुए दूसरे राज्यों में मेहनत कर आपना जीवन यापन करते आ रहे हैं।दूसरे राज्यों में लोग आपकी मजाक इसलिए बनाते हैं कि आप अपने परिवार को आगे बढ़ाने में शरीर का इस्तेमाल करते हैं दिमाग का नहीं। (अखाड़े में वही पहलवान जीता है जो बल के साथ बुद्धि का प्रयोग करता है) अगर आज आप नहीं संगठित होंगे तो यह सत्ताधारी लोग ऐसे ही हमारे राज्य को पिछड़ा राज्य बनाकर अपनी राजनीति रोटी सकते रहेंगे।

श्री प्रशांत किशोर सर का हीं नहीं मेरा भी मानना है कि बिहार को हम बिहार के लोग ही सुधार सकते हैं इसके लिए श्रीमान ने बिहार वासियों का साथ मांगा है।अगर बिहार में भ्रष्टाचार खत्म करनी है और बिहार को आगे बढ़ाना है तो सबसे

पहले जातिवाद और धर्म वाद का मैल साफ करना होगा, क्योंकि बिहार को पीछे ले जाने में यह सबसे गंदी राजनीति है। इसलिए खुद को जातिवाद के दलदल से निकालकर आगे बढिए और बिहार को भी आगे बढाइये ।

’ बिहार में व्यवस्था परिवर्तन कर जन सुराज स्थापित करने के संकल्प के साथ चुनावी राजनीतिग्य आदरणीय श्री प्रशांत किशोर जी ने 2 अक्टूबर 2022 को पश्चिमी चंपारण के भितिहरवा गांधी आश्रम से पदयात्रा की शुरुआत की थी।

’ जन सुराज अभियान के तहत अब तक बिहार में दस हजार से अधिक पीके यूथ क्लब खुल चुके हैं।हर यूथ क्लब में 25 से 100 युवा सदस्य होते हैं। इसके अलावा हर जिला एवं प्रखंड में जन सुराज अभियान के सौ से अधिक संस्थापक सदस्य बन गए हैं। जिला एवं प्रखंड कार्यवाहक समितियों का गठन पूरा हो चुका है,पंचायत एवं वार्ड स्तर पर संगठन को मजबूत करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है।

’ राजनीति पसंद करने वाले नौकरशाहों में होड दिख रही है। प्रशांत किशोर जी पिछले मई महीने के पहले ही हफ्ते में 18 रिटायर्ड आईएएस आईपीएस को अपने साथ जोड़ चुके हैं। इसमें सेवानिवृत्त आईपीएस आरके मिश्रा, उमेश सिंह, शिवा किशोर झा, आईएएस एके द्विवेदी भी शामिल है। शिक्षाविद आलोक शर्मा, डॉ मंजर नसीम, इंजीनियर राणा रंजीत सिंह, किसान नेता राय सुंदर देव शर्मा, शिक्षक से विधान पार्षद बने अफाक अहमद और निर्दलीय विधान पार्षद सच्चिदानंद राय जैसे लोगों के खुला समर्थन और दमदार उपस्थिति के साथ हर तरह से सहयोग जन सुराज अभियान को मिल रहा है।

’ आने वाले समय में जनसुरज पार्टी के रूप में बिहार में मजबूत राजनीतिक विकल्प बनेगा।

’ श्री प्रशांत किशोर जी श्महात्मा गांधीश के बाद दूसरा ऐसे व्यक्ति हैं जिसने अभी तक 3500 किलोमीटर की पद यात्रा कर करीब 4000 गांवों में पहुंच लोगों की समस्याओं को अपनी नजर से देखा है। आदरणीय प्रशांत किशोर के कुशल नेतृत्व में जनसुराज से ही बिहार के लोगों का भविष्य बेहतर हो सकेगा । उन्होंने आरोप लगाया कि अब तक राजद,जदयू और भाजपा ने मिलकर बिहार को रसातल में पहुंचाने का काम किया है तथा गरीबों की हकमारी इन राजनीतिक दलों की फितरत है।

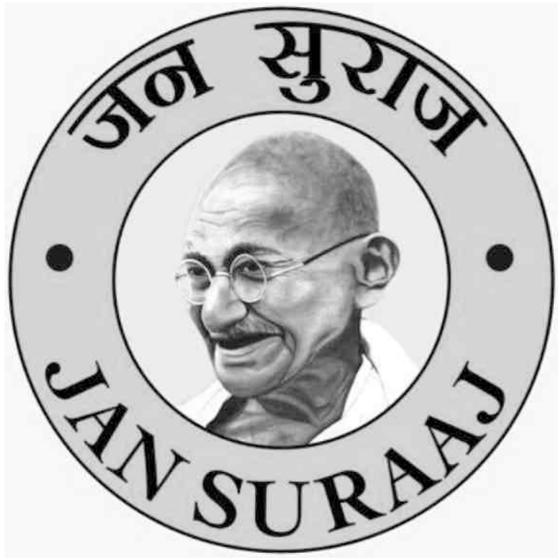

’ प्रशांत किशोर जी लगातार अपना कुनबा बढ़ा रहे हैं। उनके कुनबे में इस बार बिहार के वरिष्ठ नेता राजद सरकार में मंत्री रहे पांच बार के विधायक और जदयू में सांसद रहे दलित समाज के नेता ष्पूर्णमासी रामष भी शामिल हो गए हैं।

प्रदेश के दलित और मुस्लिम समुदाय के लोगों के हक में आवाज बुलंद करने वाले बड़े नेता पूर्णमासी राम ने जन सुराज की सदस्यता ले ली है। पूर्णमासी राम साल 1990 से लगातार पांच बार बगहा सीट से बिहार विधानसभा के लिए चुने जाते रहे हैं।

’ जन सुराज संस्थापक और पदयात्रा अभियान के प्रणेता श्री प्रशांत किशोर जी का कहना है कि जनसुराज महात्मा गांधी के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है जिस तरह आजादी के संघर्षों के जमाने में महात्मा गांधी के नेतृत्व में हिंदू, मुसलमान, सिख, इसाई, किसान, मजदूर अमीर–गरीब,बच्चे–बूढ़े,महिलाएं सभी शामिल थे और सभी लोगों का मकसद अंग्रेजों से देश को आजाद करना था। ठीक उसी प्रकार रास्ते पर जनसुराज चल रहा है जिसमें सभी जाति,धर्म और संप्रदाय के लोगों को एक जुट करने में सक्रिय है।

’ जन सुराज का मकसद बिहार को भ्रष्टाचार,जातिवादी और धर्म वादी राजनीतिक दलों से आजादी दिलाना है।

’ जन सुराज अभियान महात्मा गांधी की विचारधारा और बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के संविधान में बताए गए कानून व्यवस्था और लोकतंत्र को पुनर्स्थापित करने के जज्बे के साथ जनता के बीच आया है।जनसुराज का उद्देश्य फिलहाल बिहार में बसने वाले सभी बिहारियों को संगठित कर बिहार को भ्रष्टाचारी सत्ता और व्यवस्था को समाप्त कर एक लोकतांत्रिक एवं इमानदार व्यवस्था सुनिश्चित करना है।

आदरणीय श्री प्रशांत किशोर सर ने बिहार के पिछड़ेपन की हर मुद्दों पर पहल कर जनता को प्रेरित करने के लिए जनसुराज अभियान लेकर पदयात्रा कर बिहार में एक नई क्रांति फैलाए हैं।इस क्रांति से जुड़कर बिहार के लोगों में आशा हीं नहीं पूर्ण विश्वास हो गई है कि अगर जन सुराज के साथ कदम से कदम मिलाकर हर बिहारी चलेंगे तो जरूर बिहार में एक नई बहार आएगी।।

‘जिन्दगी’ / The Life

हार–जीत का नाम नहीं जिन्दगी ।
कुछ नया सीखने का काम है जिन्दगी ।।

खुदा का दिया खुबसूरत इनाम है जिन्दगी।
दर्द में भी मुस्कान ला दे ऐसा एहसान है जिन्दगी ।।

जो दुखियों का भी साथ ना दे इतना शर्मनाक नहीं जिन्दगी ।
रोते हुए को हँसा दे ऐसा पूण्य काम है जिन्दगी ।।

जिंदा हो स्वार्थ बस ऐसी अभिमान नहीं जिन्दगी ।
जो जिंदा रखें इंसानियत सदा,ऐसी जान है जिन्दगी ।।

ठोकर खाकर हिम्मत तोडने का नाम नहीं जिन्दगी ।
जीवन में हर लक्ष्य पाने का काम है जिन्दगी ।।

खिलौना समझकर खेलने का नाम नहीं जिन्दगी ।
हर वादे को निभाने का काम है जिन्दगी ।।

कर्तव्य पथ पर रूक जानें का नाम नहीं जिन्दगी ।
चट्टानों को तोड़ कर आगे बढ़ जाने का काम है जिन्दगी ।।

जिंदा हो बस जिंदा हो ऐसा नाम नहीं जिन्दगी ।
जीवन में कुछ कर दिखाने का काम है जिन्दगी ।।

जन्म और मृत्यु का नाम नहीं जिन्दगी ।
अमर इतिहास लिखने का काम है जिन्दगी।

मोनिका कुमारी
(पत्रकार एवं समाजशास्त्री)

विज्ञानमेव जयते पत्रिका/पत्रकारिता सदस्यता हेतु स्वीकृत नियम एवं शर्ते -

01. 14–25 वर्ष तक के अध्ययनरत छात्र छात्राओ को प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल करना,एवं उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को दो वर्ष तक शिक्षावृति प्रदान करना। परीक्षा शुल्क–50–रुपये, एक पत्रिका निशुल्क देय। सभी स्तर के चयनित सदस्य दुर्घटना बीमा के अन्तर्गत बीमित होंगें।

2. उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को प्रशस्तिपत्र मेडल से सम्मानित कर निर्धारित शिक्षावृति 250–2000–रुपये तक दो वर्षो तक प्रदान करना। इसके लिए उन्हें सप्ताहिक समाचार लिखना अनिवार्य है। लेखध्कहानी, कविता, स्थानीय समस्या पर समाचार नहीं लिखने पर शिक्षावृति नहीं दी जायगी।

3. चयनित छात्र–छात्रा पत्रिका का आजीवन सदस्य बन सकते है। आजीवन सदस्यता शुल्क 11000–रूपये है।आजीवन पत्रिका प्राप्त होती रहेगी, यह राशि वापस नहीं किया जायगा। छात्र छात्रा तीन बार प्रतियोगिता परीक्षा में निशुल्क सम्मिलित हो सकते है,उत्तीर्ण होने पर शिक्षावृति प्रदान की जायगी।

4. चयनित छात्र छात्रा सक्रिय आजीवन पत्रकारिता सहयोगी सदस्य बन सकते है। सदस्यता शुल्क राशि 26100–रुपये है।यह राशि पत्रकारिता शिक्षा अध्ययन शुल्क है। दस वर्षो बाद पत्रिका का आयोजन सदस्यता शुल्क छोड्कर, अधिकतम राशि वापस कर दिया जायगा, सेवा देने वाले सदस्यों को पूर्ण राशि वापिस कर दिया जायगा। पत्रिका संचार पर कार्य करने वाले को प्रत्येक पत्रिका सदस्यता शुल्क पर 20ः , विज्ञापन पर 40ः , एवं अन्य पर 05ः की कमीशन राशि के अलावें निर्धारित शिक्षावृति प्रदान की जायगी।

5. समान्य नागरिक जिनका उम्र 18–35 वर्ष तक के है, वे उत्कृष्ट सक्रिय पत्रकारिता आजीवन सहयोगी सदस्य बनकर, अपने योग्यतानुसार उच्च स्तरीय ब्यूरो के पद पर नियुक्त होकर सेवा प्रदान कर सकते है। इसकी आजीवन सदस्यता शुल्क 126000– एक लाख छब्बीस हजार रूपए है। यह राशि दस वर्षो बाद वापस ले सकते है, यदि सेवानिवृत्त उपरांत लेना चाहते है तो यह राशि बैंकिंग नियमानुसार गुणक में वापस कर दी जायगी। क्रमांक 04 के अनुसार सभी सुव्यवस्थित सुविधाएं एवं मानदेयध्वेतन, कमीशन प्राप्त होते रहेंगे, सप्ताहिक प्रगति प्रतिवेदन समर्पित नहीं करने पर किसी प्रकार की सुविधायें प्रदान नहीं की जायगी। न्यायालय के द्वारा घोषित शपथ–पत्र के आधार पर सेवा ली जायगी। अश्लील एवं असंवैधानिक कार्यों में शामिल या लिप्त होने पर जॉचोपरान्त आपके सदस्यता को समाप्त कर आजीवन सदस्यता सुरक्षित राशि वापस नहीं किया जायगा, साथ हीं आप पर न्यायालय में मुकदमा दर्ज कर दी जायगी। कोई भी सदस्य बिना सूचनार्थ के अनुपस्थित रहता है तो प्रत्येक दिवस का 2000ध– दो हजार रूपए आर्थिक दण्ड स्वरूप उसके मानदेय से काट दिया जाएगा , यदि विज्ञानमेव जयते के किसी पद पर नियुक्त नहीं हैं तो उसके सुरक्षित राशि से काट लिया जायगा।

6. सभी स्तर के सदस्यों को स्थायी सेवा केअधीन सेवा देने हेतु विभागीय परीक्षा देना अनिवार्य है। उत्तीर्ण उपरांत प्रशिक्षण प्रदान किए जायेंगे तथा पत्रकारिता अधिनियम के अंतर्गत वेतन, भत्ता, सुविधाएं प्रदान की जायगी। परीक्षा उत्तीर्ण नहीं होने पर निर्धारित विज्ञानमेव जयते के सरकारी सुविधा से बंचित रखा जायगा।

7. विज्ञानमेव जयते भारत गणराज्य का राष्ट्रीय हिन्दी अंग्रेजी वैज्ञानिक मासिक पत्रिका, त्छप् भारत सरकार के नियमानुसार कार्य करती है। विज्ञानमेव जयते की सभी चल–अचल संपति भारत सरकार की है, इसका कोई मालिक नहीं है। प्रकाशक, मुद्रक, संपादक ये भारत सरकार की संवैधानिक पद है, इसी पद के आधार पर पत्रकारिता की बुनियाद मजबूत है, भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के नियमानुसार मीडिया हाउस संचालित होते है, सरकारी पत्रकारिता के मुख्य संरक्षक प्रत्येक जिला के जिलाधिकारी होते है।

8. विज्ञानमेव जयते के प्रत्येक स्तर के सदस्यों, पत्रकार, ब्यूरो को प्रत्येक वर्ष वेबसाइट शुल्क 4500– रूपयें, बीमा शुल्क, पहचान पत्र शुल्क देना अनिवार्य है।

9. विज्ञानमेव जयते भारत गणराज्य का राष्ट्रीय हिन्दी अंग्रेजी वैज्ञानिक मासिक पत्रिका, स्वरोजगारयुक्त स्थायी सेवा प्रदान करती हैं उपलब्ध कराती है, सरकारीकरण हेतु कम से कम त्रिस्तरीय पत्रकारिता शिक्षा अनिवार्य है।

10. विज्ञानमेव जयते भारत सरकार की संपति हैं, इसे संरक्षित एवं सुरक्षित रखें, विज्ञानमेव जयते में अपना भविष्य सुरक्षित करें। निर्धारित नियमावली संसोधन के अधीन है।

प्रधान संपादक

विज्ञानमेव जयते भारत सरकार

लोकसभा निर्वाचन की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने की प्रेस वार्ता

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी पूर्वी चंपारण श्री सौरभ जोरवाल एवं पुलिस अधीक्षक श्री कांतेश कुमार मिश्रा के द्वारा लोकसभा निर्वाचन 2024 के अवसर पर जिला प्रशासन द्वारा की गई तैयारी के संबंध में प्रेस वार्ता कर मीडिया के प्रतिनिधियों को जानकारी दी गई। जिलाधिकारी ने बताया कि 16 मार्च 2024 को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किए गए प्रेस नोट के साथ ही संपूर्ण देश में आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई। पूर्वी चंपारण एवं शिवहर लोकसभा का निर्वाचन छठे चरण में निर्धारित था जिसके लिए आज भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा अधिसूचना जारी की गई है। अधिसूचना जारी होने के साथ ही आज से नाम– निर्देशन की प्रक्रिया शुरू हो गई। 03 पूर्वी चंपारण संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के लिए नामांकन इसके निर्वाची पदाधिकारी– अपर समाहर्ता पूर्वी चंपारण के कार्यालय कक्ष में तथा 04–शिवहर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के लिए नामांकन इसके निर्वाची पदाधिकारी– जिलाधिकारी के कार्यालय कक्ष में किया जाएगा। जिलाधिकारी ने कहा कि नामांकन की प्रक्रिया 29.4.2024 से 06.05.2024 तक चलेगी। सात मई, 2024 को नामांकन पत्र की संविक्षा की जाएगी। 09.05.2024 को अभ्यर्थिता वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित है। उस दिन 3रू00 बजे अपराह्न तक नाम वापसी लिया जा सकता है। 25 मई 2024 को मतदान की तिथि तथा 4 जून 2024 को मतगणना की तिथि निर्धारित है।

जिलाधिकारी ने बताया कि 03– पूर्वी चंपारण संसदीय निर्वाचन क्षेत्र अंतर्गत 13– हरसिद्धि, 14– गोविंदगंज ,15– केसरिया, 16– कल्याणपुर, 17–पिपरा एवं 19– मोतिहारी विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इस संसदीय क्षेत्र अंतर्गत कुल 1743 मतदान केंद्र बनाए गए हैं जहां कुल 1789619 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इन मतदाताओं में 939494 पुरुष मतदाता तथा 850104 महिला मतदाता शामिल हैं। इस संसदीय क्षेत्र अंतर्गत 18 से 19 आयु वर्ग वाले 29506 युवा मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। दिव्यांगजन मतदाताओं की संख्या 16721 है जबकि 85 प्लस आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या 27997 है। जिलाधिकारी के द्वारा पूर्वी चंपारण संसदीय क्षेत्र के विधानसभावार मतदाताओं की संख्या भी बताई गई और विधानसभा वार बनाए गए मतदान केंद्रों की संख्या भी बताई गई। जिलाधिकारी ने कहा कि प्रत्येक विधानसभा में तीन फ्लाइंग स्क्वाड और तीन एसएसटी की टीम गठित की गई है। उन्होंने कहा कि अंतर राज्य एवं अंतर जिला सीमा पर कुल 15 चेक पोस्ट बनाए गए हैं।

डीएम ने कहा कि जिला प्रशासन भय मुक्त वातावरण में शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं समावेशी चुनाव संपन्न कराने हेतु कृत संकल्पित है।

उन्होंने कहा कि 04–शिवहर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र अंतर्गत 18– मधुबन, 20– चिरैया, 21– ढाका, 22– शिवहर,23– रीगा एवं 30– बेलसंड विधानसभा क्षेत्र आते हैं। इस संसदीय क्षेत्र में कुल 1825237 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे जिसमें 963973 पुरुष मतदाता तथा 740035 महिला मतदाता शामिल हैं। इस संसदीय क्षेत्र में 18 से 19 आयु वर्ग वाले 28568 युवा मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि इस संसदीय निर्वाचन क्षेत्र अंतर्गत 18975 दिव्यांगजन मतदाता तथा 85 प्लस आयु के 31369 मतदाता हैं।यहां पर कुल 1807 मतदान केंद्र बनाए गए हैं।

भय मुक्त वातावरण में शांतिपूर्ण एवं पारदर्शी चुनाव कराने को लेकर पुलिस अधीक्षक के द्वारा बताया गया कि विधि व्यवस्था के मद्देनजर जिला में कुल 3964 गिरफ्तारी अभी तक की गई है। 49 हजार लीटर शराब एवम 61849 लीटर स्प्रिट बरामद किया गया है। 88 अवैध आर्म्स एवं 225 कारतूस भी बरामद किए गए हैं।

जिला के सीमावर्ती क्षेत्र और जिला अंतर्गत सभी चिन्हित जगहों पर विशेष चौकसी वरती जा रही है। जिसमे 90 किलोग्राम चरस, 668 किलोग्राम गांजा, 425 ग्राम अफीम, ब्राउन शुगर एवं स्मैक सहित 4.5 लाख कैश, 15 ग्राम सोना और 1.5 ाह चांदी बरामद की गई है।

जिला में अभी तक 126 सीसीए का प्रस्ताव पारित किया गया है और इन सभी मामलों में संबंधित व्यक्ति को क्षेत्र बदर किया गया है और उन्हें निर्देश दिया गया है कि प्रत्येक सप्ताह संबंधित थाना में जाकर हाजिरी लगाएंगे। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिला को पर्याप्त संख्या में केंद्रीय पैरामिलिट्री फोर्स और जिला पुलिस के जवान मिल रहे हैं। चुनाव कराने में फोर्स की कमी नहीं होगी।सभी मतदान केंद्रों पर बल की प्रतिनियुक्ति रहेगी। संवेदनशील मतदान केंद्रों पर विशेष नजर रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि फोर्स के ठहराव के लिए आवासन स्थल पर सभी सुविधाएं मुहैया कराई जाएगी। आदर्श आचार संहिता का पूरे जिले में दृढ़ता के साथ पालन कराया जा रहा है। ट्रैफिक व्यवस्था के लिए भी अलग से निर्देश दिया गया है। उन्होंने मीडिया के प्रतिनिधियों से अपील की की भ्रामक खबर से बचा जाए और उसे फैलने से रोका जाए। आयोग के दिशा निर्देश का अनुपालन किया जाए। पेड न्यूज से भी बचने की पुलिस अधीक्षक ने मीडिया के लोगों को परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि जो भी सूचना मीडिया के माध्यम से मिलेगी उस पर भी त्वरित कार्रवाई की जाएगी।

प्रधान संपादक

प्रसिद्ध आधुनिक भारतीय वैज्ञानिक और उनकी उपलब्धियाँ

आधुनिक युग में भारत में विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए–नए प्रयोग लगातार होते रहे, किन्तु कुछ भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन हुआ। प्रमुख वैज्ञानिकों में जगदीश चंद्र बोस, सी.वी. रमण, होमी जहाँगीर भाभा, शांतिस्वरूप भटनागर, एम. एन. साहा, प्रफुल्लचंद्र राय, हरगोविंद खुराना आदि नाम उल्लेखनीय हैं। जगदीश चंद्र बोस ने उचित साधनों और उपकरणों के अभाव में भी अपना कार्य जारी रखा। उन्होंने लघु रेडियो तरंगों का निर्माण किया। विद्युत चुंबकीय तरंगों के प्रयोग उन्होंने मारकोनी से पहले ही पूरे कर लिए थे। पौधों में जीवन के लक्षणों की खोज उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सी.वी. रमण एक प्रतिभावान वैज्ञानिक थे। उन्होंने प्रकाश किरणों की गुणधर्मिता तथा आकाश और समुद्र के रंगों की व्याख्या पर विशेष शोध किया। अपने शोध के लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार भी मिला। एस. रामानुजम असाधारण प्रतिभावान गणितज्ञ थे। गणितीय सिद्धान्तों के क्षेत्र में उनके अनुसन्धान के कारण उन्हें बहुत यश और ख्याति मिली। इसी विद्वत–शृंखला में एक प्रसिद्ध वनस्पति और भूभर्ग शास्त्री बीरबल साहनी भी थे।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का शिखर छूने वाले वैज्ञानिकों में एम. एन. साहा, एस.एन. बोस, डी. एन. वीजिया और प्रफुल्लचंद्र राय के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियाँ।

स्वाधीनता के बाद जहाँ भारत ने समाज के हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया वहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं। स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार में विज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का एक पृथक मंत्रालय बनाया गया। यह मंत्रालय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने अधीन रखा था। नेहरू जी भारत के बहुमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सब तरह के साधन और सुविधाए उपलब्ध करवाने की व्यवस्था के आदेश जारी किये थे ।

उपलब्ध क्षमता और प्रोत्साहन के कारण 59 वर्षों में ही भारत ने विश्व की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी की महानतम शक्तियों में तृतीय स्थान प्राप्त कर लिया है। परिणामस्वरूप भारत कच्चे माल के निर्यात से अब विश्व की सर्वाधिक मजबूत औद्योगिक अर्थव्यवस्था में से एक बन गया है।

भारत ने विज्ञान के अन्य विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। खगोल विज्ञान में प्राचीन अध्ययनों के आधार पर ही भारत के वैज्ञानिक अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यों में लगे हैं। आज भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिक अपने बलबूते पर उपग्रह बनाकर और अपने ही शक्तिशाली रॉकेटों से उन्हें अंतरिक्ष में स्थापित करने में समर्थ हैं। पूर्णतः स्वदेश में निर्मित ध्रुवीय प्रक्षेपण यान पी.एस.एल.वी.सी. 2 ने 26 मई 1999 को 11 बजकर 52 मिनट पर श्रीहरिकोटा से एक सफल उड़ान भरी और एक भारतीय उपग्रह तथा दो विदेशी उपग्रहों को अंतरिक्ष में निर्धारित कक्षा में स्थापित कर दिया। अंतरिक्ष कार्यक्रमों में भारत काफी आगे पहुँच चुका है। इसके साथ ही भारत के दूर संवेदी नेटवर्क में 634 ग्रह शामिल हो गए हैं। हमारा यह दूर संवेदी नेटवर्क संसार का सबसे बड़ा दूरसंवेदी नेटवर्क है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों का विकास संचार माध्यमों तथा रक्षा मामले संबंध सफलताओं में महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध हुआ है। आज भारत विभिन्न दूरियों तक प्रहार करने वाले प्रक्षेपास्त्र बनाने में समर्थ है। प्रतिरक्षा के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय सफलताएँ मिली हैं।

भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक प्रगति की है। परमाणु ऊर्जा का मुख्यतः उपयोग कृषि और चिकित्सा जैसे शांतिपूर्ण कार्यों के लिए किया जा रहा है। परमाणु और अंतरिक्ष से जुड़ा विषय इलैक्ट्रॉनिकी है। भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परम 10000 सुपर कंप्यूटर बनाकर हम इस क्षेत्र में अग्रणी देशों की पंक्ति में आ गए हैं। हम अब सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित उपकरणों का निर्यात विकसित देशों को भी कर रहे हैं। भारत के सूचना प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित इंजीनियरों की अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी और जापान जैसे विकसित देशों में भारी माँग है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों के बलबूते पर भारत ने जलयान निर्माण, रेलवे उपकरण, मोटर उद्योग, कपड़ा उद्योग आदि में आशातीत सफलता प्राप्त की है। आज हम भारत की उद्योगशालाओं में बनी अनेक वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

राम मंदिर उद्घाटन और उत्साह

भारत हीं नहीं पुरा विश्व में गुंज उठा जय श्री राम का नारा ।

22 जनवरी, 2024 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन किया, जो भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवसर था। उद्घाटन में राम लला की मूर्ति का 'प्राण प्रतिष्ठा' (प्रतिष्ठापन) समारोह शामिल था, जो एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम था जो मूर्ति में जीवन के संचार का प्रतीक है। यह कार्यक्रम, जिसमें 7,000 से अधिक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, न केवल एक धार्मिक समारोह था बल्कि भारत के लिए एक सांस्कृतिक मील का पत्थर भी था।

प्रधानमंत्री की समारोह में आगमनः—

समारोह में प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी अहम रही। उन्होंने दोपहर 12रू29रू03 बजे से 12रू30रू35 बजे तक राम लला की मूर्ति की 'प्राण प्रतिष्ठा' में भाग लिया, जो 'अभिजीत मुहूर्त' के दौरान एक संक्षिप्त लेकिन अत्यधिक शुभ 84 सेकंड की खिड़की थी। उनकी अयोध्या यात्रा लगभग चार घंटे तक चली, जो उद्घाटन से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों और अनुष्ठानों से भरी हुई थी।

रामलला की मूर्ति :—

कर्नाटक के प्रसिद्ध मूर्तिकार अरुण योगीराज द्वारा तैयार की गई राम लल्ला की मूर्ति, पांच साल के बच्चे के रूप में भगवान राम की 51 इंच की काले रंग की छवि है। इसे 18 जनवरी को प्रारंभिक अनुष्ठानों के हिस्से के रूप में मंदिर के गर्भगृह के अंदर स्थापित किया गया था। यह मंदिर अपने आप में एक वास्तुशिल्प चमत्कार है, जिसकी लंबाई 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट और ऊंचाई 161 फीट है, जो वास्तुकला की पारंपरिक नागर शैली का प्रतीक है।

व्यापक सुरक्षा व्यवस्थाः

अयोध्या को सुरक्षित और उत्सवी क्षेत्र में तब्दील कर दिया गया. एआई—संचालित ड्रोन और 13,000 सुरक्षा कर्मियों सहित एक व्यापक सुरक्षा नेटवर्क तैनात किया गया था। शहर को फूलों और रोशनी से सजाया गया था, रामायण के नारों और छंदों से गूंज रहा था।

यह उत्सव अयोध्या से आगे तक बढ़ा, जिसमें विभिन्न राज्यों के लोगों ने विभिन्न उपहार और भेंटें दीं।

अयोध्या में 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले राम मंदिर के लिए भेजे गए विशेष उपहारों में 108 फुट अगरबती, 2100 किलोग्राम का घंटा, 1100 किलोग्राम वजन का एक विशाल दीपक, सोने के खड़ाउं, 10 फुट उंचा ताला चाभी और 8 देशों को समय एक साथ बताने वाली घड़ी भी शामिल है। जो भारतीय इतिहास के पन्नों में युगांतर तक याद रखा जायेगा।

मोनिका कुमारी
(पत्रकार एवं समाजशास्त्री)

आजाद भारत के प्रधान मंत्री की सूची

भारत के प्रधानमंत्री भारत गणतन्त्र की सरकार के मुखिया हैं। भारत के प्रधानमन्त्री, का पद, भारत के शासन प्रमुख (शासनाध्यक्ष) का पद है। संविधान के अनुसार, वह भारत सरकार के मुखिया, भारत के राष्ट्रपति का मुख्य सलाहकार, मंत्री परिषद का मुखिया, तथा लोकसभा में बहुमत वाले दल का नेता होता है। वह भारत सरकार के कार्यपालिका का नेतृत्व करता है। भारत की राजनैतिक प्रणाली में, प्रधानमन्त्री, मन्त्रिमण्डल में का वरिष्ठ सदस्य होता है।

01ः जवाहरलाल नेहरू =
’कार्यकाल =
15 अगस्त 1947 से 27 मई 1964 ।
राजनैतिक दल=
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस।
’जन्म स्थान = इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश।
’शिक्षा = हैरो स्कूलय ट्रीनीटी कॉलेज, कैम्ब्रीज
’चुनाव क्षेत्र = इलाहाबाद, उत्तर प्रदेशय
फूलपूर (इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश ।

—गुलजारीलाल नंदा=
’कार्यकाल=
27 मई 1964—09 जून 1964
’राजनैतिक दल=
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस।
’जन्म स्थल=
सियालकोट, पंजाब ’शिक्षा = इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद। ’चुनाव क्षेत्र = मुंबई महाराष्ट्र ।

02 ः— लालबहादुर शास्त्री
’कार्यालय=
9 जून 1964 से 11 जनवरी 1966
’राजनैतिक दल = भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस।
’जन्म स्थल=
मुगलसराय, उत्तर प्रदेश
’शिक्षा = काशीविद्यापीठ, वाराणसी।
’चुनाव क्षेत्र = इलाहाबाद उत्तर प्रदेश ।
—गुलजारीलाल नंदा=
’कार्यकाल =
11 जनवरी 1966 से 24 जनवरी 1966

03ः—इन्दिरा गान्धी=
’कार्यकाल=
24 जनवरी 1966 से 24 मार्च 1977
’राजनैतिक दल =
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
’जन्म स्थल =
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
’शिक्षा = शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगालय ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
’चुनाव क्षेत्र = रायबरेली, उत्तर प्रदेशय मेडक, आंध्र प्रदेश।

04ः—मोरारजी देसाई=
’कार्यकाल=
24 मार्च 1977 से 28 जुलाई 1979
’राजनैतिक दल =
जनता पार्टी।
’जन्म स्थल =
भदेली, गुजरात।
’शिक्षा =
’चुनाव क्षेत्र =
सूरत, गुजरात।

05ः—चौधरी चरण सिंह=
’कार्यकाल =

28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980
’राजनैतिक दल =
जनता पार्टी
’जन्म स्थल =
मेरठ, उत्तर प्रदेश
’शिक्षा = आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
’चुनाव क्षेत्र =
बागपत, उत्तर प्रदेश।

06ः—राजीव गान्धी=
’कार्यकाल =
31 अक्टूबर 1984 से 2 दिसम्बर 1989
’राजनैतिक दल = भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
’जन्म स्थल =
मुंबई, महाराष्ट्र
’शिक्षा =
इलाहाबाद
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
’चुनाव क्षेत्र = अमेठी, उत्तर प्रदेश।

07ः—विश्वनाथ प्रताप सिंह
’कार्यकाल =
2 दिसम्बर 1989 से 10 नवंबर 1990
’राजनैतिक दल =
जनता दल
’जन्म स्थल =
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
’शिक्षा = इलाहाबाद विश्वविद्यालयय
पुणे विश्वविद्यालय ।
’चुनाव क्षेत्र = फतेहपुर, उत्तर प्रदेश।

08ः—चंद्रशेखर
’कार्यकाल =
10 नवंबर 1990 21 जून 1991
’राजनैतिक दल =
जनता दल
’जन्म स्थल =
इब्राहिमपट्टी, बलिया, उत्तर प्रदेश
’शिक्षा =
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
’चुनाव क्षेत्र=
बलिया, उत्तर प्रदेश

09ः—नरसिंह राव
’कार्यकाल =
21 जून 1991 से 16 मई 1996।
’राजनैतिक दल =
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
’जन्म स्थल =
करीमनगर, आंध्र प्रदेश
’शिक्षा =
ओसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबादय
मुंबई विश्वविद्यालयय
नागपुर विश्वविद्यालय
’चुनाव क्षेत्र = नंडयाल, आंध्र प्रदेश।

10ः—अटल बिहारी वाजपेयी
’कार्यकाल=
16 मई 1996 से 1 जून 1996
’राजनैतिक दल =
भारतीय जनता पार्टी
’जन्म स्थल =
ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
’शिक्षा = लक्ष्मीबाई कॉलेज, ग्वालियरय
डीएवी कॉलेज, कानपुर
’चुनाव क्षेत्र = लखनऊ उत्तर प्रदेश

11ः—एच डी देवगौड़ा
’कार्यकाल=
1 जून 1996 से 21 अप्रैल 1997
’राजनैतिक दल =
जनता दल
’जन्म स्थल =
हरदानाहल्ली, कर्नाटक।
’शिक्षा = हसन, कर्नाटक
’चुनाव क्षेत्र =
कनकपुराय हसन, कर्नाटक।

(10) अटल बिहारी वाजपेयी=
’कार्यकाल =
19 मार्च 1998 से 19 अक्टूबर 1999
19 अक्टूबर 1999 से 22 मई 2004

13ः—मनमोहन सिंह
’कार्यकाल =
22 मई 2004 से 22 मई 2009।
22 मई 2009 से 17 मई 2014।
’राजनैतिक दल =
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
’जन्म स्थल =
पंजाब प्रान्त के एक गाँव (अब पाकिस्तानमें)
’शिक्षा =पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढय
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयय
ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
’चुनाव क्षेत्र =
असम राज्यसभा से

14ः—नरेन्द्र मोदी’’
’कार्यकाल=
26 मई 2014 से 30 मई 2019
30 मई 2019 से पदस्थ
’राजनैतिक दल =
भारतीय जनता पार्टी
’जन्म सलि =
वड़नगर, गुजरात, भारत।
’शिक्षा =
दिल्ली विश्वविद्यालय, गुजरात विश्वविद्यालय ।
’चुनाव क्षेत्र =
वाराणसी, उत्तर प्रदेश,
वडोदरा, गुजरात, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

आजाद भारत के राष्ट्रपति

भारत का राष्ट्रपति देश का मुखिया और भारत का प्रथम नागरिक होता है। राष्ट्रपति के पास भारतीय सशस्त्र सेना की भी सर्वोच्च कमान होती है। भारत का राष्ट्रपति लोक सभा, राज्यसभा और विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा चुना जाता है। भारत के राष्ट्रपति का कार्यकाल 5 वर्षों का होता है।

भारत की स्वतंत्रता से लेकर अब तक 14 राष्ट्रपति हो चुके हैं।भारत के राष्ट्रपति पद की स्थापना भारतीय संविधान के द्वारा की गयी है। इन 14 राष्ट्रपतियों के अलावा 3 कार्यवाहक राष्ट्रपति भी हुए है जो पदस्थ राष्ट्रपति की मृत्यु के बाद बनाये गए है।भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद थे।

7 राष्ट्रपति निर्वाचित होने से पूर्व राजनीतिक पार्टी के सदस्य रह चुके है। इनमे से 6 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और 1 जनता पार्टी के सदस्य शामिल है, जो बाद राष्ट्रपति बने। दो राष्ट्रपति, जाकिर हुसैन और फख़रुद्दीन अली अहमद, जिनकी पदस्थ रहते हुए मृत्यु हुई। भारत के 13वे राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी है जो 25 जुलाई 2012 को भारत के राष्ट्रपति के तौर पर निर्वाचित हुए राष्ट्रपति रहने से पूर्व वे भारत सरकारमें वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री और योजना आयोग के उपाध्यक्ष रह चुके है। वे मूल रूप से पश्चिम बंगाल के निवासी है इसलिए वे इस राज्य से पहले राष्ट्रपति हैं। इससे पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल भारत की पहली महिला राष्ट्रपति है। 25 जुलाई 2017 को राष्ट्रपति का पद रामनाथ कोविंद को प्राप्त हुआ जो भारत के 14वे राष्ट्रपति थे। वर्तमान में द्रौपदी मुर्मू भारत की

दूसरी महिला राष्ट्रपति है। 25 जुलाई 2022 को भारत की पन्द्रहवीं राष्ट्रपति बनी है।

राष्ट्रपति की सूची :–

01.–डॉ राजेन्द्र प्रसाद
´कार्यकाल=
26 जनवरी 1950 से लेकर
13 मई 1962 तक ।
राजेंद्र प्रसाद, जो कि बिहार से थे, भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने ।वे स्वतंत्रता सेनानी भी थे। वे एकमात्र राष्ट्रपति थे जो कि दो बार रष्ट्रपति बने।

02:–डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन
´कार्यकाल =
13 मई 1962 से लेकर
13 मई 1967तक।
राधाकृष्णन मुख्यतः दर्शनशास्त्री और लेखक थे। वे आन्ध्र विश्वविद्यालयऔर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति भी थे।

03:–डॉ जाकिर हुसैन
´कार्यकाल 4
13 मई 1967 से लेकर
3 मई 1969 तक।

जाकिर हुसैन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति और पद्म विभूषण और भारत रत्न के भी प्राप्तकर्ता थे।

रुवराहगिरि वेंकट गिरि :–
´कार्यकाल =
3 मई 1969 से लेकर
20 जुलाई 1969तक
वी.वी. गिरि पदस्थ राष्ट्रपति जाकिर हुसैन की मृत्यु के बाद कार्यवाहक राष्ट्रपति बने.

मोहम्मद हिदायतुल्लाह
´कार्यकाल =
20 जुलाई 1969से लेकर
24 अगस्त 1969तक।
हिदायतुल्लाह भारत के सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और आर्डर ऑफ ब्रिटिश इंडिया के प्राप्तकर्ता थे

04:–वराहगिरि वेंकट गिरि
´कार्यकाल =

24 अगस्त 1969से लेकर
24 अगस्त 1974तक।
गिरि एकमात्र व्यक्ति थे जो कार्यवाहक राष्ट्रपति और राष्ट्रपति दोनों बने। वे भारत रत्न से सम्मानित हो चुके थे।

05ः—फखरुद्दीन अली अहमद
'कार्यकाल =
24 अगस्त 1974से लेकर
11 फरवरी 1977तक
फख़रुद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति बनने से पूर्व मंत्री थे। उनकी पदस्थ रहते हुए मृत्यु हो गयी। वे दूसरे राष्ट्रपति थे जो अपना कार्यकाल पूरा कर सके.

दासप्पा दानप्पा जट्टी
'कार्यकाल =
11 फरवरी 1977से लेकर
25 जुलाई 1977तक।
बी.डी. जत्ती, फख़रुद्दीन अली अहमद की मृत्यु के बाद भारत के कार्यवाहक राष्ट्रपति बने . इससे पहले वह मैसूर राज्य के मुख्यमंत्री थे।

06ः—नीलम संजीव रेड्डी
'कार्यकाल =
25 जुलाई 1977से लेकर
25 जुलाई 1982तक
नीलम संजीव रेड्डी आन्ध्र प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री थे। रेड्डी आन्ध्र प्रदेश से चुने गए एकमात्र सांसद थे। वे 26 मार्च 1977 को लोक सभा के अध्यक्ष चुने गए और 13 जुलाई1977 को यह पद छोड़ दिये और भारत के छठे राष्ट्रपति बने।

07ः—ज्ञानी जैल सिंह
'कार्यकाल =
25 जुलाई 1982से लेकर
25 जुलाई 1987 तक।
जैल सिंह मार्च 1972 में पंजाबराज्य के मुख्यमंत्री बने और 1980 में गृहमंत्री बने।

08ः—रामास्वामी वेंकटरमण
'कार्यकाल =
25 जुलाई 1987से लेकर
25 जुलाई 1992तक।
वेंकटरमण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में जेल भी गए। जेल से छुटने के बाद वे कांग्रेस पार्टी के सांसद रहे। इसके अलावा वे भारत के वित्त एवं औद्योगिक मंत्री और रक्षा मंत्री भी रहे।

09ः—शंकर दयाल शर्मा
'कार्यकाल =
25 जुलाई 1992से लेकर
25 जुलाई 1997तक ।
शर्मा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री और भारत के संचार मंत्री रह चुके थे। इसके अलावा वे आन्ध्र प्रदेश, पंजाब और महाराष्ट्र के राज्यपाल भी थे।

10ः—कोचेरिल रामन नारायणन
'कार्यकाल =
25 जुलाई 1997से लेकर
25 जुलाई 2002तक
नारायणन चीन, तुर्की, थाईलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के राजदूत रह चुके थे। उन्हें विज्ञान और कानून में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त थी। वे जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके हैं ।

11ः—डॉ एपीजे अब्दुल कलम
'कार्यकाल =
25 जुलाई 2002से लेकर
25 जुलाई 2007तक।
कलाम मुख्यतः वैज्ञानिक थे जिन्होंने मिसाइल और परमाणु हथियार बनाने मुख्य योगदान दिया । इस कारण उन्हें भारत रत्न भी मिला। उन्हें भारत का मिसाइल मैन भी कहा जाता है।

12ः—प्रतिभा पाटिल
'कार्यकाल =
25 जुलाई 2007से लेकर
25 जुलाई 2012तक।
प्रतिभा पाटिल भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनी। वह राजस्थान की भी प्रथम महिला राज्यपाल थी।

13ः—प्रणव मुखर्जी
'कार्यकाल =
25 जुलाई 2012से लेकर
25 जुलाई 2017तक।
प्रणब मुखर्जी भारत सरकार में वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री और योजना आयोग के उपाध्यक्ष रह चुके है।

14ः—श्री राम नाथ कोविंद
'कार्यकाल =
25 जुलाई 2017 से लेकर
24 जुलाई 2022 तक।
कोविंद जी राज्यसभा सदस्य तथा बिहार राज्य के राज्यपाल रह चुके हैं।

15ः—द्रौपदी मुर्मू
'कार्यकाल =
25 जुलाई 2022 से लेकर
अभी तक पदस्थ ।
द्रौपदी मुर्मू मई 2015 में झारखंड की 9वीं राज्यपाल बनाई गई थीं। द्रौपदी मुर्मू जी ने साल 1997 में राइरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद चुनाव में जीत दर्ज कर अपने राजनीतिक जीवन का आरंभ किया था। ओडिशा के मयूरभंज जिले की रायरंगपुर सीट से 2000 और 2009 में भाजपा के टिकट पर दो बार जीती और विधायक बनीं। 2000 और 2004 के बीच वाणिज्य, परिवहन और बाद में मत्स्य और पशु संसाधन विभाग में मंत्री बनाया गया था।
वडोदरा, गुजरात, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भारत रत्न पुरस्कार

भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है यह सम्मान राष्ट्र सेवा के लिए दिया जाता है।
प्रारंभ = 2 जनवरी 1954 को 3 व्यक्तियो को दिया गया था
राधाकृष्णन को
राजगोपालाचारी को
सी. वी. रमन को
क्षेत्र = कला , शिक्षा, साहित्य ,विज्ञान, समाज सेवा ,खेल आदि के लिए दिया जाता है।
अलंकरणकर्ता = भारत सरकार द्वारा।
राशि = शून्य
देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान श्भारत रत्नश की शुरुआत 1954 से हुई। अब तक विभिन्न क्षेत्रों की 53 हस्तियों को भारत रत्न के सम्मान से नवाजा जा चुका है। पहला भारत रत्न का सम्मान देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को 1954 में प्रदान किया।

भारत रत्न पुरस्कार विजेताओं की सूची

1954ः—डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(05 सितंबर, 1888—17 अप्रैल, 1975)

1954ः—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
(10 दिसंबर 1878 — 25 दिसंबर 1972)

1954ः—डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमण
(07 नवंबर1888 — 21 नवंबर1970)

1955ः—डॉ. भगवान दास
(12 जनवरी1869 —18 सितंबर1958)

1955ः—सर डॉ० मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या
(15 सितंबर1860 — 12 अप्रैल1962)

1955ः—पंडित जवाहर लाल नेहरु
(14 नवंबर1889 — 27 मई1964)

1957ः—गोविंद वल्लभ पंत
(10 सितंबर1887 — 07 मार्च1961)

1958ः—डॉ० धोंडो केशव कर्वे
(18 अप्रैल1858 — 09 नवंबर1962)

1961ः—डॉ० बिधन चंद्र रॉय
(01 जुलाई1882 — 01 जुलाई1962)

1961ः—पुरूषोत्तम दास टंडन
(01 अगस्त1882 — 01 जुलाई1962)

1962ः—डॉ० राजेंद्र प्रसाद
(03 दिसंबर1884 — 28 फरवरी1963)

1963ः—डॉ० जाकिर हुसैन
(08 फरवरी1897 — 03 मई1969)

1963ः—डॉ० पांडुरंग वामन काणे
(07 मई 1880 — 08 मई 1972)
1966ः—लाल बहादुर शास्त्री
(02 अक्टूबर1904 — 11 जनवरी1966), मृत्यु के बाद ।

1971ः—इंदिरा गाँधी
(19 नवंबर1917 — 31 अक्टूबर1984)

1975ः—वराहगिरी वेंकट गिरी
(10 अगस्त 1894 — 23 जून 1980)

1976ः—के. कामराज
(15 जुलाई1903 —1975), मरणोपरांत।

1980ः—मदर टेरेसा
(27 अगस्त1910 — 05 सितंबर1997)

1983ः—आचार्य विनोबा भावे
(11 सितंबर1895—15 नवंबर1982) मरणोपरांत।

1987ः—खान अब्दुल गफ्फार खान
(06 फरवरी1890 —20 जनवरी1988), पहले गैर—भारतीय।

1988ः—एम जी आर।
(17 जनवरी1917 — 24 दिसम्बर 1987)
मृत्यु के बाद।

1990ः—डॉ० भीमराव आंबेडकर
(14 अप्रैल1891— 06 दिसम्बर1956) मृत्यु के बाद।

1990ः—नेल्सन मंडेला
(18 जुलाई1918 — 05 दिसम्बर 2013), दूसरे गैर—भारतीय

1991ः—राजीव गांधी
(20 अगस्त1944 — 21 मई1991),
मृत्यु के बाद।

1991ः—सरदार वल्लभ भाई पटेल
(31 अक्टूबर1875 —15 दिसम्बर 1950), मृत्यु के बाद।

1991ः—मोरारजी देसाई
(29 फरवरी1896—10 अप्रैल1995)

1992ः—मौलाना अबुल कलाम आजाद
(11 नवंबर1888 — 22 फरवरी1958), मरणोपरांत।

1992ः—जे. आर. डी. टाटा
(29 जुलाई1904 — 29 नवंबर1993)

1992ः—सत्यजीत राय
(02 मई, 1921—23 अप्रैल, 1992)

1997ः—ऐ. पी. जे. अब्दुल कलाम
(15 अक्टूबर1931— 27 जुलाई2015)

1997ः—गुलजारी लाल नंदा
(04 जुलाई1898 —15 जनवरी1998)

1997ः—अरुणा आसफ अली
(16 जुलाई1909 —29 जुलाई 1996), मरणोपरांत।

1998ः—एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी
(16 सितंबर1916 —11 दिसम्बर 2004)

1998ः—सी. सुब्रामनीयम
(30 जनवरी 1910 — 07 नवंबर2000)

1998ः—जयप्रकाश नारायण
(11 अक्टूबर1902—08 अक्टूबर1979), मृत्यु के बाद।

1999ः—पंडित रवि शंकर
(07 अप्रैल 1920—12 दिसम्बर 2012)

1999ः—अमर्त्य सेन
(03 नवंबर 1933—अब तक)

1999ः—गोपीनाथ बोरदोलोई
(1890—1950), मरणोपरान्त।

2001ः—लता मंगेशकर
(28 सितंबर1929 — 6 फरवरी 2022)

2001ः—उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ां
(21 मार्च 1916 — 21 अगस्त2006)

2008रू—पंडित भीमसेन जोशी
(04 फरवरी1922 —05 जनवरी 2011)

2014ः—सी० एन० आर० राव
(30 जून, 1934—अब तक)

16 नवंबर 2014 घोषित

2014ः—सचिन तेंदुलकर
(24 अप्रैल1973 —अभी तक)

16 नवंबर 2014 घोषित
2015ः—अटल बिहारी वाजपेयी
(25 दिसंबर1924 —16 अगस्त 2018)

25 दिसंबर, 2015 को घोषित
2015ः—मदन मोहन मालवीय
(25 दिसंबर1861— 12 नवंबर1946) मृत्यु के बाद।

25 दिसंबर 2015 को घोषित
2019ः—प्रणब मुखर्जी
(11 दिसम्बर 1935 — 31 अगस्त 2020)

2019ः—नानाजी देशमुख
(11अक्टूबर 1916 — 27 फरवरी 2010) मरणोपरांत।

2019ः—भूपेन हजारिका
(8 सितंबर 1926 — 5 नवंबर 2011), मरणोपरांत।

2024ः—जननायक कर्पूरी ठाकुर
(24 जनवरी1924 — 17 फरवरी1988), मरणोपरांत।

2024ः—लालकृष्ण आडवाणी
(8 नवंबर 1927—अभी तक)

2024ः—चौधरी चरण सिंह
(23 दिसंबर 1902 — 29 मई 1987) मरणोपरांत।

2024ः—पी.वी. नरसिम्हा राव
(28 जून 1921— 23 दिसम्बर 2004), मरणोपरांत।

2024ः—डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन
(7 अगस्त 1925 — 28 सितंबर 2023), मरणोपरांत।

महत्वपूर्ण तथ्यः—

- भारत रत्न 26 जनवरी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिया जाता है।
- सबसे पहला पुरस्कार प्रसिद्ध वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन को दिया गया था। तब से अनेक विशिष्ट जनों को अपने—अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता पाने के लिए यह पुरस्कार प्रस्तुत किया गया है।
- जनता पार्टी द्वारा इस पुरस्कार को 1977 में बंद कर दिया गया था, किंतु 1980 में कांग्रेस सरकर ने इसे फिर से दोबारा शुरू किया।
- जब साल 1980 में भारत रत्न पुरस्कार फिर से शुरू हुआ तो, इसे सर्वप्रथम मदर टेरेसा ने प्राप्त किया था।
- हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति, वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को भी 1997 में यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया।
- इसका कोई लिखित प्रावधान नहीं है कि 'भारत रत्न' केवल भारतीय नागरिकों को ही दिया जाएगा।
- यह पुरस्कार स्वाभाविक रूप से भारतीय नागरिक बन चुकी 'एग्नेस गोंखा बोजाखियू', जिन्हें हम मदर टेरेसा के नाम से जानते हैं, को दिया गया।
- दो अन्य गैर—भारतीय दृ ख़ान अब्दुल गफ्फार ख़ान को 1987 में और नेल्सन मंडेला को 1990 में यह पुरस्कार दिया गया।
- यह भी अनिवार्य नहीं है कि भारत रत्न सम्मान प्रतिवर्ष दिया जाएगा।
- एक वर्ष में अधिकतम तीन व्यक्तियों को ही भारत रत्न दिया जा सकता है।
- मरणोपरांत सर्वप्रथम लालबहादुर शास्त्री को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

भारत के नोबेल पुरस्कार विजेता

भारत के नोबेल पुरस्कार विजेता में भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता का नाम है। नोबेल पुरस्कार नोबेल फैडरेशन के द्वारा स्वीडनके वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की याद में दिया जाता है। जो शांति, साहित्य, भौतिकी, चिकित्सा विज्ञान, अर्थशास्त्र, रसायन के क्षेत्र में दिया जाता है।

भारत में नोबेल पुरस्कार विजेताः—

➲ ब्रिटिश भारत नागरिक =
निम्नलिखित नोबेल पुरस्कार विजेता हैं जो उस समय ब्रिटिश भारत के नागरिक थे जब उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

➲ 1913ः—रवीन्द्रनाथ टैगोर
क्षेत्र :— 'साहित्य तकः—
ष्उनकी संवेदनशीलता, नयापन लिये हुये और सुन्दर कविता के लिए जिसमें उन्होंने अपने परिपूर्ण कौशल से उन्होंने अपने काव्यात्मक विचारों को अपने अंग्रेजी शब्दों में व्यक्त किया, जो कि पश्चिम के साहित्य का भाग है।ष

➲ 1930ः—चन्द्रशेखर वेंकटरमन
क्षेत्ररू—ष्भौतिक विज्ञानष
तकर्रू—
ष्उनके प्रकाश के प्रकीर्णन पर कार्य और खोज के लिए जिसे बाद में उनके नाम से जाना जाता है।ष

➲ भारत गणराज्य के नागरिकः—
निम्नलिखित नोबेल पुरस्कार विजेता हैं जो उस समय भारत गणराज्य के नागरिक थे जब उन्हें नोबेल से सम्मानित किया गया था।

➲ 1998ः—अमर्त्य सेन
क्षेत्रः—''अर्थशास्त्र''
तकर्रू—
''कल्याणकारी अर्थशास्त्र में उनके कार्य के लिए।''

➲ 2014ः—कैलाश सत्यार्थी
क्षेत्रः—शांति
तर्कः—
''बच्चों और युवाओं के दमन के विरुद्ध उनके संघर्ष तथा सभी बच्चों के शिक्षा के अधिकार के लिए।''

➲ भारतीय मूल के प्रवासी नागरिक :—
निम्नलिखित भारतीय मूल के नोबेल पुरस्कार विजेता हैं जो भारत में पैदा हुए थे लेकिन बाद में भारत के गैर—नागरिक थे। हालाँकि, वे अभी भी अक्सर भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेताओं की सूची में शामिल होते हैं।

➲ 1968ः—हरगोविन्द खुराना
निवास का देशः—
संयुक्त राज्य अमेरिका
(जन्मरू रायपुर, ब्रितानी भारत, वर्तमानपाकिस्तान)
क्षेत्रः—चिकित्सा
तकर्रू—'आनुवांशिक कोड और इसके प्रोटीन संश्लेषण में कार्य पर शोध के लिए।'

➲ 1983ः—सुब्रह्मण्यन् चन्द्रशेखर
निवास का देशः—
संयुक्त राज्य अमेरिका
(जन्मरूलाहौर, ब्रितानी भारत, वर्तमान पाकिस्तान)
क्षेत्ररू— भौतिकी
तर्कः—''तारों के विकास और संरचना के महत्त्व के भौतिक प्रक्रियाओं का सैद्धान्तिक अध्ययन के लिए।''

➲ 2009 :— वेंकटरामन रामकृष्णन
निवास का देश :—
यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका
(जन्मः चिदंबरम, भारत)
क्षेत्रः—रसायन विज्ञान
तकर्रू—''राइबोसोम की संरचना और कार्य का अध्ययन के लिए।''

➲ 2019ः—अभिजीत बनर्जी
निवास का देशः—
संयुक्त राज्य अमेरिका
(जन्म : मुम्बई, भारत)
क्षेत्रः— अर्थशास्त्र
तकर्रू—''वैश्विक गरीबी को दूर करने के लिए उनकी प्रायोगिक कार्य के लिए।''

➲ विदेशी मूल के भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेताः—
निम्नलिखित विदेशी मूल के नोबेल पुरस्कार विजेता हैं जो या तो भारत में पैदा हुए थे या भारत में निवासी थे जब वे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले थे लेकिन भारतीय नागरिक नहीं थे।

➲ 1989ः—14वें दलाई लामा
निवास का देशः—
भारत (तिब्बत के तक्तेसेर में जन्म।)
क्षेत्रः—शान्ति
तर्कः—उनके लोगों स्वाधीनता को पुनः प्राप्त करने के लिए उनके लगातार अहिंसक प्रतिरोध के लिए।''

➲ 1902ः—रोनाल्ड रॉस
निवास का देश :—

यूनाइटेड किंगडम
(इवतद पदअल्मोड़ा,ब्रिटिश भारत)
क्षेत्रः—चिकित्सा
तकर्रू—'मलेरिया पर उनके कार्य के लिए, जिसमें उन्होंने इसके शरीर में प्रवेश को समझाया और इससे इसपर शोध कार्य करके रोग उन्मूलन पर काम आरम्भ हुआ।'

- 1907ः—रुड्यार्ड किपलिंग

निवास का देशः—
यूनाइटेड किंगडम
(ब्रिटिश भारत के बम्बई में जन्म)
क्षेत्ररू—साहित्य
तकर्रू—''प्रेक्षण की शक्ति, कल्पना की वास्तविकता, विचारों का साहसीपन और आख्यान की उल्लेखनीय प्रतिभा जिसने उन्हें विश्व में प्रसिद्ध लेखक बनाया।''

- 24 नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय कौन था?

=सही उत्तर रवींद्रनाथ टैगोर है। रवींद्रनाथ टैगोर सम्मानित होने वाले पहले भारतीय नागरिक थे और पहले एशियाई भी थे।

- दो बार नोबेल पुरस्कार पाने वाले व्यक्ति कौन है?

=शॉक्ले भी थे। मैरी क्यूरी को सबसे पहले 1903 में उनके पति पियरे और हेनरी बेकरेल के साथ रेडियोधर्मिता की खोज के लिए भौतिकी में पुरस्कार दिया गया था। बिना किसी और के साथ साझा करने के लिए दो नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले एकमात्र व्यक्ति लिनुस पॉलिंग थे।

- सबसे कम उम्र में नोबेल पुरस्कार विजेता कौन है?

= मलाला यूसुफजई महिला शिक्षा के लिए एक पाकिस्तानी कार्यकर्ता हैं। 2014 में, उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वह सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें 17 साल की उम्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

- वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1901 से 2021 तक 400 के साथ सबसे अधिक नोबेल पुरस्कार जीते हैं।

- विश्व में नंबर 1 पुरस्कार कौन सा है?

=नोबेल पुरस्कारों को व्यापक रूप से अपने संबंधित क्षेत्रों में उपलब्ध सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार माना जाता है।

- इंडिया को कितने नोबेल पुरस्कार मिले हैं?

=नोबेल पुरस्कार विजेताओं में से दो (टैगोर और रमन) पुरस्कार दिए जाने के समय ब्रिटिश भारत के नागरिक थे। नोबेल पुरस्कार विजेताओं में से तीन (टेरेसा, सेन और सत्यार्थी) भारत के नागरिक हैं और चार (खोराना, चंद्रशेखर, रामकृष्णन और बनर्जी) जन्म से भारतीय थे लेकिन बाद में भारत के गैर—नागरिक थे।

- 1 साल में कितने नोबेल पुरस्कार दिए जाते हैं?

=अर्थशास्त्र पुरस्कार बाद में उनकी स्मृति में जोड़ा गया था। प्रत्येक वर्ष कुल छह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार के रूप में दिए जाते हैं।

- जीन हेनरी डुनेंट शांति में नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले व्यक्ति थे।

- प्रथम नोबेल पुरस्कार पाने वाली प्रथम महिला कौन थी?

= नोबेल पाने वाली पहली महिला मैरी को 1903 में यह पुरस्कार (फिजिक्स) उनके पति पियरे क्यूरी के साथ रेडिएशन के क्षेत्र में कार्य के लिए मिला था।

- विश्व का पहला पुरस्कार कौन सा है?

=पहला नोबेल पुरस्कार 1901 में प्रदान किया गया था। रसायन विज्ञान, भौतिकी, भौतिक विज्ञान या चिकित्सा, साहित्य और शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिए जाते हैं।

- दुनिया का पहला व्यक्ति कौन था जिसे नोबेल पुरस्कार मिला था?

एक्स—रे की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार जीतने वाले पहले व्यक्ति विलियम रोएंटजेन थे। उन्होंने इसे 1901 में जीता था। उसी वर्ष वान्ट हॉफ और बेह्रिंग को क्रमशः रसायन विज्ञान और चिकित्सा के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।

- मदर टेरेसा जी को सन् 1979में शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

भारत के लोक सभा अध्यक्ष

लोकसभा अध्यक्ष, भारतीय संसद के निम्नसदन, लोकसभा का सभापति एवं अधिष्ठाता होता है। उसकी भूमिका वेस्टमिंस्टर प्रणालीपर आधारित किसी भी अन्य शासन–व्यवस्था के वैधायिकीय सभापति के सामान होती है। उसका निर्वाचन लोकसभा चुनावों के बाद, लोकसभा की प्रथम बैठक में ही कर लिया जाता है। वह संसद के सदस्यों में से ही पाँच साल के लिए चुना जाता है। उससे अपेक्षा की जाती है कि वह अपने राजनितिक दल से इस्तीफा दे दे, ताकि कार्यवाही में निष्पक्षता बनी रहे। वर्त्तमान लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला है, जोकि अपनी पूर्वाधिकारी, सुमित्रा महाजन के बाद, इस पद पर आसीन हैं। यह 18वीं लोकसभा के अध्यक्ष है।

लोक सभा अध्यक्ष की सूचीः–

लोकसभा अध्यक्ष व उनके कार्यकालः–

01ः–गणेश वासुदेव मावलंकर
15 मई 1952 – 27 फरवरी 1956

02ः–अनन्त शयनम् अयंगार
8 मार्च 1956 – 16 अप्रॅल 1962

03ः–सरदार हुकम सिंह
17 अप्रॅल 1962 – 16 मार्च 1967

04रू–नीलम संजीव रेड्डी
17 मार्च 1967 – 19 जुलाई 1969

05ः–जी. एस. ढिल्लों
8 अगस्त 1969 – 1 दिसंबर 1975

06ः–बलि राम भगत
15 जनवरी 1976 – 25 मार्च 1977

07ः–नीलम संजीव रेड्डी
26 मार्च 1977 – 13 जुलाई 1977

08ः–के एस हेगड़े
21 जुलाई 1977 – 21 जनवरी 1980

09ः–बलराम जाखड़
22 जनवरी 1980 – 18 दिसंबर 1989

10ः–रवि राय
19 दिसंबर 1989 – 9 जुलाई 1991

11ः–शिवराज पाटिल
10 जुलाई 1991 – 22 मई 1996

12ः–पी. ए. संगमा
25 मई 1996 – 23 मार्च 1998

13ः–जी एम सी बालयोगी
24 मार्च 1998 – 3 मार्च 2002

14ः–मनोहर जोशी
10 मई 2002 – 2 जून 2004

15ः–सोमनाथ चटर्जी
4 जून 2004 – 30 मई 2009

16ः–मीरा कुमार
4 जून 2009 दृ 4 जून 2014

17ः–सुमित्रा महाजन
6 जून 2014 दृ 17 जून 2019

18ः–ओम बिरला
19 जून 2019 – पदस्थ

➲ कांग्रेस के बलराम जाखड़ सबसे लंबे समय तक सेवारत वक्ता, जो 9 साल 10 महीने और 27 दिन है।

➲ शपथ ग्रहणः–

लोकसभा अध्यक्ष अन्य लोकसभा सदस्यों की ही तरह एक सदस्य के रूप में शपथ लेता है। उसका शपथ भी कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा कराया जाता है। कार्यकारी अध्यक्ष सबसे वरीष्ठ सदस्यों को बनाया जाता है।

➲ शक्तियाँ और कार्यः–

लोकसभा–अध्यक्ष लोकसभा के सत्रों की अध्यक्षता करता है और सदन के कामकाज का संचालन करता है। वह निर्णय करता है कि कोई विधेयक, धन विधेयक है या नहीं। वह सदन का अनुशासन और मर्यादा बनाए रखता है और इसमें बाधा पहुँचाने वाले सांसदों को दंडित भी कर सकता है। वह विभिन्न प्रकार के प्रस्ताव और संकल्पों, जैसे अविश्वास प्रस्ताव, स्थगन प्रस्ताव, सेंसर मोशन, को लाने की अनुमति देता है और अटेंशन नोटिस देता है। अध्यक्ष ही यह तय करता है कि सदन की बैठक में क्या एजेंडा लिया जाना है।

➲ वेतन और भत्तेः–

लोकसभा अध्यक्ष को राज्यसभा के सभापति (उपराष्ट्रपति) के समान मासिक वेतन एवं अन्य भत्ते मिलते हैं। मई, 2002 को संसद द्वारा पारित एक संशोधन विधेयक के अनुसार यदि लोकसभा के अध्यक्ष की मृत्यु उसके पद पर रहने की अवधि में ही हो जाती है तो उसके परिवार यानी पति या पत्नी को पेंशन, आवास और स्वास्थ्य सुविधाएँ मिला करेंगी। ध्यातव्य है कि यह सुविधा अब तक राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति पदों के लिए ही थीं। साथ ही लोकसभाध्यक्ष को केन्द्रीय मंत्री के समान भत्ता देने का भी प्रावधान किया गया है। 4 लाख `मससतल।

➲ कार्यकाल अवधि और पदमुक्तिः–

अध्यक्ष का कार्यकाल लोकसभा विघटित होने तक होता है। कुछ स्थितियों में वह इससे पहले भी पदमुक्त हो सकता है–लोकसभा अध्यक्ष को लोकसभा के प्रभावी बहुमत द्वारा हटाया जा सकता है। परंतु 14 दिन पहले इसकी सूचना लोक सभा अध्यक्ष को देनी आवश्यक है।

पैकिंग आटा में क्या मिलाया जाता है, जिससे वह ज्यादा दिन खराब नहीं होता?

पैकिंग आटा में क्या मिलाया जाता है, जिससे वह ज्यादा दिन खराब नहीं होता?

सावधान...!!!

पैकिंग आटा लम्बे समय तक खराब क्यो नही होता ??

आंखें खोल देने वाला सच –

एक प्रयोग करके देखें –

गेहूं का आटा पिसवा कर उसे 2 महीने स्टोर करने का प्रयास करें।

आटे में कीड़े पड़ जाना स्वाभाविक हैं, आप आटा स्टोर नहीं कर पाएंगे।

फिर ये बड़े बड़े ब्रांड आटा कैसे स्टोर कर पा रहे हैं?

यह सोचने... वाली बात है..??

एक केमिकल है– बेंजोयल पर ऑक्साइड (ठमदद्रवलस च्मतव•पकम)

जिसे श्फ्लौर इम्प्रूवरश भी कहा जाता है।

इसकी पेरमिसीबल लिमिट 4 मिलीग्राम है, लेकिन आटा बनाने वाली फर्में 400 मिलीग्राम तक मिला देती हैं।

Benzoyl Perovide के बारे में आप गूगल पर पढ सकते है

कारण क्या है?

रु आटा खराब होने से लम्बे समय तक बचा रहे।

रु बेशक उपभोक्ता की किडनी का बैंड बज जाए।

रु कोशिश कीजिये खुद सीधे गेहूं खरीदकर अपना आटा पिसवाकर खाएं।

नियमानुसार आटे का समय..

रुठंड के दिनों में 30 दिन'

रुगरमी के दिनों में 20 दिन

रुबारिस के दिनों में 15 दिन का बताया गया है।

रुताजा आटा खाइए.

रुस्वस्थ रहिये...

केवल 3 बदलाव कर के देखें –

(1) नमक सेंधा प्रयोग करे ।

(2) आटा चक्की से पिसवा कर लाये।

(3) पानी मटके का पिये।

रु सुबह गर्म पानी पिये।

आधी से ज्यादा बीमारियों से छुटकारा अपने आप पा जायेंगे.!!

धन्यवाद

सभी धम्म बंधुओं को नमो बुद्धाय, जय भीम!!

सर्वप्रथम ये कि बिहार में पहली बार जनगणना में बौद्धों की संख्या 111000 से ऊपर का आंकड़ा आया है जो कि सभी बौद्धों के लिए बहुत ही सराहनीय है, उत्साहवर्धक है। बौद्धों ने बिहार में हजारों वर्षों बाद अपनी उपस्थिति पुनः दर्ज करा दी है। हम जानते हैं कि बिहार में जन्मे विश्व के महान सम्राट अशोक ने बिहार ही नहीं बल्कि पूरे मौर्य साम्राज्य जो अफगानिस्तान से लेकर बांग्लादेश तक फैला था, में बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। एशिया के कई देशों यथा लंका, बर्मा, इंडोनेशिया, पर्सिया, तिब्बत, चीन, जापान, आदि में धम्म दूत भेजकर बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया था। अशोक महान ने 84000 स्तूप बनवाए, हजारों स्तंभों, गुफाओं में बुद्ध और बौद्धमय जीवन के संदेश लिखवाए थे। बौद्ध धर्म के कारण ही भारत विश्व गुरु कहलाता है। आज भी दुनिया के लोग बुद्ध के कारण ही भारत को अपना गुरु,आदर्श मानते हैं। हम जानते हैं कि जब भारत के लोग विदेशों में जाते हैं तो कहते हैं कि मैं बुद्ध के देश से आया हूं । वे किसी अन्य देवी, देवता का नाम नहीं लेते क्योंकि उनका नाम लेने से उन्हें विदेशों में प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। आज पूरी दुनिया ये महसूस कर रही है कि विश्व को क्रोध, हिंसा, द्वेष, अंधविश्वास, अहम, आदि मानसिक त्रासदियों से अगर कोई बचा सकता है तो वो सिर्फ और सिर्फ बौद्ध धर्म ही है।

परंतु भारत का दुर्भाग्य है कि जिस देश में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति हुई उसी देश में बौद्ध धर्म की स्थिति आज बेहद ही निराशाजनक है,उपेक्षित है। यहां प्राचीन बौद्ध विहारों को खंडित कर ब्राह्मणवादी मंदिरों में तब्दील कर दिया गया है। बौद्ध विरासत को पूर्णतः समाप्त करने की साजिश लगातार होती रहती है। जो कुछ बचे हैं उन्हें षड्यंत्र द्वारा हथियाने की कोशिश हो रही है, कभी बुद्ध को विष्णु का अवतार बता कर तो कभी बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म का अंग बता कर। किंतु जो धूर्त लोग बुद्ध को विष्णु का अवतार बताते हैं उन्होंने पूरे भारत में कहीं भी बुद्ध की कोई मूर्ति स्थापित नहीं की बल्कि बुद्ध की मूर्तियों को अगड़म बगड़म नाम देकर उनका ब्रह्मणीकरण करते रहे हैं।

भारत के तमाम बौद्ध विहारों में सर्वोपरी बोधगया का महाबोधि महाविहार जो पूरे विश्व के बौद्ध अनुयायियों की आस्था का प्रतीक है वह भी ब्राह्मणवादी साजिश का शिकार है। करीब दो सौ सालों तक स्थानीय सनातनी हिंदू महंत के कब्जा में रहने के कारण इसकी न सिर्फ उपेक्षा की गई बल्कि यहां उपस्थित हजारों बेस्किमती मूर्तियों को गायब कर, कुछ ब्राह्मणी देवताओं की मूर्तियां लगा दी गई। शुक्र है अंग्रेजी सरकार के जनरल कनिंघम का जिन्होंने महाबोधि महाविहार का जीर्णोद्धार किया। इस महाविहार को बौद्धों के हाथ में लेने के लिए पिछले सौ सालों से विभिन्न बौद्धों ने समय समय पर आंदोलन किए जिससे आंशिक रूप से कुछ अधिकार मिले पर आज भी महाविहार बौद्धों के हाथ में नहीं है। आंदोलन करने वाले लोगों में श्रीलंका के अनागारिक धर्मपाल, जापानी मूल के भिक्षु नागार्जुन सुरई ससाई, आदि प्रमुख हैं। धर्मपाल जी के आंदोलन के कारण भारत सरकार के निर्देश पर बिहार सरकार द्वारा बोधगया मंदिर प्रबंधकारिणी समिति कानून 1949 (ठज्ड़ै ।ब्ज 1949) बनाया गया जिसके तहत 4 हिंदू और 4 बौद्ध को सदस्य मनोनित किया जाता है। गया के जिला पदाधिकारी इसके अध्यक्ष होते हैं।

बौद्धों की मांग है कि जिस प्रकार से विश्व के सभी मस्जिदों का संचालन मुस्लिमों के हाथ में, सभी चर्चों का संचालन ईसाइयों के हाथ में, सभी गुरुद्वारों का संचालन सिक्खों के हाथ में और सभी मंदिरों का संचालन हिंदुओं के हाथ में होता है उसी प्रकार बौद्ध विहारों का संचालन बौद्धों के हाथ में होना चाहिए। ये बौद्धों का संवैधानिक, सांस्कृतिक अधिकार है। इसलिए बोधगया के महाबोधि महाविहार का संचालन हेतु बीटीएमसी एक्ट में संशोधन किया जाए और सारे सदस्य सिर्फ बौद्ध हों, अन्य किसी दूसरे धर्म का सदस्य नहीं हो। भारत की सरकार बहुमत के आगे नतमस्तक है। अनुनय, विनय करने से जब कुछ हासिल नहीं हुआ, सुप्रीम कोर्ट ने भी बौद्धों की अपील को ठंडे बस्ते में डाल दिया तो फिर बौद्धों के पास एक ही विकल्प बचा रू आंदोलन! इसलिए भारत के बौद्धों ने पुनः एक बार बोधगया के महाबोधि महाविहार को बौद्धों के हाथ में लेने के लिए आंदोलन का रास्ता अपनाने का निश्चय किया है। ऑल इंडिया बुद्धिस्ट फोरम के नेतृत्व में भारत के तमाम बौद्ध संगठनो ने मिलकर आगामी 26 नवंबर 2023 को बोधगया में विशाल धम्म समागम का निश्चय किया है जिसके तहत बोधगया में दोमुहान से लेकर कालचक्र मैदान तक शांति मार्च का आयोजन किया जाएगा और कालचक्र मैदान में एक सभा की जाएगी।

अतः भारत के सभी बौद्ध अनुयायियों, महायान, हीनयान, थेरवाद , बज्रयान अंबेडकर, फुले, पेरियार, कबीर, रैदास के समर्थकों और अल्पसंख्यक समुदाय के भाइयों, बहनों से अनुरोध है कि इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए तन, मन, धन से सहयोग कर इतिहास में की गई गलतियों को सुधारने में अपना रोल अदा करें।

जब जब बहुमत के समर्थन से अकड़ी सरकार सत्ता में अंधी होकर अल्पसंख्यकों के हितों का दमन, उपेक्षा करती है तब तब अल्पसंख्यकों को अपने अधिकारो, सम्मान को पाने के लिए सड़कों पर उतरना पड़ता है!

धन्यवाद!

आयोजक

'ऑल इंडिया बुद्धिस्ट फोरम'

' संपर्क सूत्ररू आकाश लामा 99071 16005, जम्बू लामा 747–7323699, ए के जिम्बा 98 320 744 89, राजेश बौद्ध 9431271992६ 8789205613, एडवोकेट के के बौद्ध 88253 31877, भंते प्रज्ञाशील महाथेरो 70283 07756, भंते विनय रखित 91436 13612, रमेश बैंकर 9998733336

पत्रकार एवं पत्रकारिता

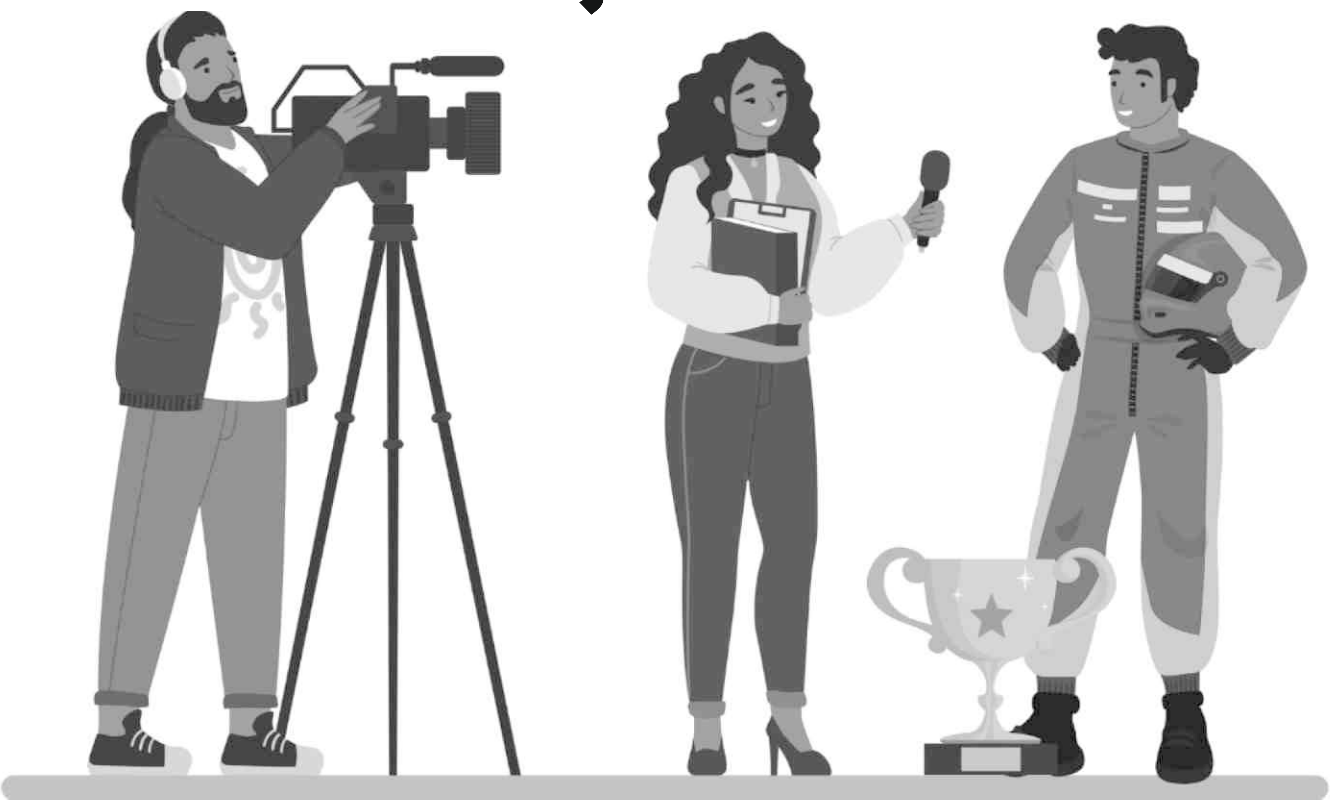

हाल ही में राष्ट्रपति ने महाराष्ट्र विधानसभा द्वारा पारित पत्रकार एवं पत्रकारिता संस्थान (हिंसा और संपत्ति की क्षति की रोकथाम) 2017 को स्वीकृति दे दी।

प्रमुख बिंदु:

इस अधिनियम में पत्रकारों या पत्रकारिता संस्थानों के मामले में नुकसान पहुँचाने वाले को 3 साल की सजा और 50000 रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

संस्थानों को किसी भी तरह की क्षति पहुँचाने या पत्रकारों के इलाज का व्यय अभियुक्त द्वारा ही वहन किया जाएगा।

इस अधिनियम के अनुसार, पत्रकारों पर हमला करना गैर– जमानती अपराध की श्रेणी में आएगा।

इसके तहत संविदा पर काम करने वाले पत्रकारों को भी सुरक्षा प्रदान की गई है। साथ ही पत्रकारों की सुरक्षा के लिये इस तरह के कानून को पारित करने वाला महाराष्ट्र पहला राज्य बन गया है।

अधिनियम के तहत इस तरह के मामलों की जाँच पुलिस उपाधीक्षक या उससे उच्च स्तर का अधिकारी द्वारा ही किये जाने का प्रावधान है।

झूठी शिकायतों या अधिनियम का गलत इस्तेमाल किये जाने पर पत्रकारों के विरुद्ध भी दंडात्मक कार्रवाई का प्रावधान किया गया है।

पत्रकार सुरक्षा अधिनियम की आवश्यकता क्यों?

हाल ही में देश भर में पत्रकारों पर हमलों की संख्या तेजी से बढ़ी है, फलस्वरूप कई पत्रकार संगठन लंबे समय से इस तरह के कानून की मांग कर रहे थे।

अंतर्राष्ट्रीय संगठन रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स (**Reporters Without Borders**) के प्रेस फ्रीडम इंडेक्स (**World Press Freesom index**) 2019 में भारत को 180 देशों में 140वाँ स्थान दिया गया था।

इस सूचकांक में 2017 में भारत 136वें स्थान पर था, वहीं 2018 में इसे 138वें स्थान पर रखा गया था।

इस सूचकांक के अनुसार नॉर्वे, फिनलैंड और स्वीडन क्रमशः पहले दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

पत्रकारों की सुरक्षा के इस अंतर्राष्ट्रीय सूचकांक में सबसे निचले पायदानों पर क्रमशः इरिट्रिया (178), उत्तरी कोरिया (179) और तुर्किस्तान (180) हैं। दुनिया में पत्रकारिता अधिनियम को नये ढ़ंग से लागू करने के लिए दुनिया के सरकारों को विचार करना चाहिए ताकि पत्रकारों का कल्याण हो सके।

प्रधान संपादक

राजेश रंजन उर्फ पप्पु यादव का इतिहास

राजेश रंजन (जन्म 24 दिसंबर 1969), जिन्हें श्पप्पू यादवश् के नाम से जाना जाता है, एक राजनीतिज्ञ हैं। उन्होंने 1991, 1996, 1999, 2004 और 2014 में बिहार के कई निर्वाचन क्षेत्रों से निर्दलीय, सपा, लोक जनता पार्टी, राजद Archived 2021–05–16 ंज जीम वेबैक मशीन उम्मीदवार के रूप में लोकसभा (भारत की संसद का निचला सदन) का चुनाव जीता। पप्पू यादव 2015 में श्सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनख्1, करने वालेश सांसदों में से एक बने वर्तमान में श्री पप्पू यादव जन अधिकार पार्टी (लोकतांत्रिक) के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। वे एक भारतीय (बिहारी) राजनीतिज्ञ तथा भारत की सोलहवीं लोकसभा के सांसद थे पप्पू यादव ने 2014 के आम चुनावों में शरद यादव को हराया था।ख्2, उनकी पत्नी रंजीत रंजन सुपौल से सांसद थीं, लेकिन 2019 के आम चुनाव में जद(यू) से हार गईं,ख्3, और वो अब एक कांग्रेस नेत्री हैं। उनके बेटे सार्थक रंजन एक क्रिकेटर हैंख्4, और दिल्ली टीम के लिए खेलते हैं। 2015 के बिहार चुनावों में उन्होंने अपनी जन अधिकार पार्टी बनाई और 40 सीटों पर चुनाव लड़ा। हालांकि, पार्टी कोई प्रभाव डालने में विफल रही और मुश्किल से 2 प्रतिशत वोट हासिल कर सकी।ख्5, महामारी और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान अपने धर्मार्थ कार्यों के लिए जाना जाता है। पप्पू यादव बिहार के बाहुबली नेता होने के साथ ही गरीबों के मसीहा के रूप में भी जाने जाते हैं।

Advertiyment Seales

Cover Back (colour)	full page	60,000/-
Cover Inner (B/W)	Full page	50,000/-
Cover Back (Colour)	Half page	30,000
Cover Back (B\W)	Half page	25,000
Cover Back (Colour)	1/4 page	15,000
Cover Back (B\W)	1/4 page	12,500
Cover Back (Colour)	4/4 Inch	7,500/-
Cover Back (B/W)	4/4 Inch	6250/-
Cover Inner (B/W)	4/4 Inch	5000/-

Any Advertigment printing Cost squir
1 inch Rs. 1000/- Colour and B/W 500/-

Squair Inch

Advertigment Director
Vigyamev Jayate.
National Hindi English Monthly Scientific Magazine of India

एमएलसी महेश्वर सिंह को सम्मानित करते
श्री भूवन पटेल एवं मो. एहतेशाम

चम्पारण के गांधी ब्रजकिशोर सिंह एवं
साथ में रायसुनरदेव शर्मा

डा. मन्तोष कुमार सहनी को
सम्मानित करते जनसुराज नेता

पुर्णिया में नामांकन करते राजेश रंजन उर्फ पप्पु यादव

**पुर्व केन्द्रीय मंत्री एवं पुर्वी चम्पारण के निर्वतमान सांसद
श्री राधामोहन सिंह नामांकन करते हुए**

डा. राजेश कुमार पुर्वी चम्पारण को एमपी का सिम्बल
प्रदान करते वीआईपी नेता श्री मुकेश सहनी जी

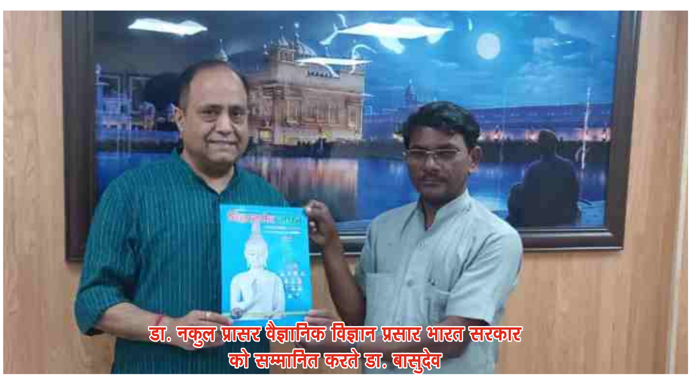

डा. नकुल प्रासर वैज्ञानिक विज्ञान प्रसार भारत सरकार
को सम्मानित करते डा. वासुदेव

श्री समीर सौरव उप विकास अयुक्त पुर्वी चम्पारण को, चम्पारण प्रतिष्ठा रत्न सम्मान
से सम्मानित करते हुए डा. वासुदेव कुमार शर्मा, प्रधान संपादक

विज्ञान मेव जयते की बिहार टीम

सदगुरुः 2015 में मैं दिल्ली में था

एक प्रसिद्ध प्रबंधन एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण कॉलेज के छात्र छात्राओ को संबोधित करने जा रहा था। मैं लगातार एक के बाद एक कार्यक्रम कर रहा था, तो उस कॉलेज में प्रवेश करने से पहले मैंने आयोजकों से पूछा, 'मेरा संबोधन किस बारे में है, मुझे क्या कहना है'? वे बोले, 'नेतृत्व के बारे में कुछ कहिये'। मैं जब वहाँ प्रवेश कर रहा था तो मैंने एक बैनर देखा, जिस पर लिखा था, 'भारत के एक प्रेरणादायी वक्ता का नेतृत्व पर संबोधन'।

भौतिकतावादी व्यक्ति उस कुत्ते की तरह है जिसके आगे हड्डी लटका कर उसे रेस जीतने के लिये प्रेरित किया जाता है। बस हड्डी पाने के लिये कुत्ता तेज गति से भागता है पर वो उसे नहीं मिलती। एक भौतिकतावादी व्यक्ति हमेशा बाहरी परिस्थितियों से प्रेरित होता है।

तो मैंने बस ये सोचा कि वे कौन सी बातें हैं जो लोगों को कुछ करने के लिये प्रेरणा देती हैं, लोगों को कब और कहाँ प्रेरणा की आवश्यकता पड़ती है? आप को प्रेरणा की जरूरत तभी होती है जब आपके जीवन में कोई ऐसी चीज न हो, जो आप वाकई करना चाहते हैं। अगर आप वाकई कुछ करना चाहते हैं तो आप को किसी प्रेरणा की कोई जरूरत नहीं है। क्या भोजन करने जाने के लिए आपको प्रेरणा की जरूरत होती है? लेकिन, हाँ, आप में से कुछ लोगों को साधना करने के लिये, सुबह जल्दी उठने के लिये प्रेरणा अवश्य देनी पड़ती है।

जब लोग बहुत ज्यादा प्रेरित हो जाते हैं तो वे कोई महान कार्य कर सकते हैं दृ या वे बिल्कुल मूर्खतापूर्ण काम भी कर सकते हैं। प्रेरणा हमेशा बुद्धिमानी के साथ नहीं आती। जब हमें कोई अत्यंत उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्य–केन्द्रित काम करना हो, तो हमें ज्यादा समझदार, ज्यादा लक्ष्य केंद्रित लोगों की आवश्यकता होती है। ऐसे लोग जिन्हें किसी के द्वारा प्रेरणा दिये जाने की कोई जरूरत ना हो, जो स्पष्ट रूप से जानते हों कि उन्हें क्या करना है। अगर हममें यह स्पष्टता है कि हम क्या करना चाहते हैं तो हम जो चाहते हैं उसे रचने की हमारी योग्यता, प्रेरित लोगों की योग्यता से कहीं बेहतर होगी। प्रेरित लोगों का समूह किसी कम समय तक चलने वाली गतिविधि के लिये तो ठीक है, पर यदि कोई दीर्घकालीन कार्य करना हो तो ऐसे लोगों की जरूरत होगी जो हर हाल में वो काम करना चाहते हैं। बस ध्यान केंद्रित रखना नेतृत्व करने वाले लोगों पर,सिद्धांतविहिन राजनीति हीं आज के आर्थिक युग में सर्वश्रेष्ठ है।

बिहार की नाययिका
मैथली ठाकुर

श्रीमती सोनिया गाँधी जी के साथ श्री मुरारीलाल मिना,
विधायक, जिला– दौसा, राजस्थान

इडिया गठबंधन के महानायक
राहुल जी, तेजस्वी जी, अखिलेश जी एवं अन्य

Reg. विज्ञानमेव जयते धारावाहिक का उद्घाटन एवं विज्ञानमेव जयते पत्रिका के लोकार्पण हेतु
1 message

Office of PS to President <pspoffice@rb.nic.in>	Thu, 14 Apr 2022 at 6:13 pm
To: vigyanmevajayateworld@gmail.com

सं.9/वैय.कक्ष/2022
13.04.2022

डॉ. बासुदेव कुमार शर्मा,
राष्ट्रीय प्रधान संपादक,
विज्ञानमेव जयते,
साइंस हाउस, बखरी वार्ड न. १२,
कल्याणपुर, ईस्ट चम्पारण
बिहार
<vigyanmevajayateworld@gmail.com>

महोदय,

राष्ट्रपति भवन को आपका 04.04.2022 का पत्र मिला है, जिसमे आपने राष्ट्रपति जी को २२ अप्रैल २०२२ को विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर विज्ञानमेव जयते धारावाहिक का उद्घाटन एवं विज्ञानमेव जयते पत्रिका के लोकार्पण हेतु आमंत्रित किया है।

आपके अनुरोध पर विचार किया गया लेकिन इसे स्वीकार करना संभव नहीं हो सका है ।

सादर,
भारत के राष्ट्रपति के निजी सचिव
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-110004

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

राज्यसभा सांसद श्री रामनाथ ठाकुर जी को सर्वोच्य नागरिक सम्मान भारत रत्न सम्मान बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जन्नायक कर्पुरी ठाकुर के लिए प्रदान करते हुए।

मनुष्य अपनी क्षमताओं की कदर नहीं करता। वह हमेशा उस वस्तु की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। अपने क्षमताओं को पहचाननें और मेहनत से घबराए नहीं। आसमान की बुलंदियों को तभी आप छू सकते हैं जब आप कठिन परिश्रम करेंगे। अगर महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, वीर चंद्रशेखर आजाद, वीर भगत सिंह, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, डॉक्टर राजेंद्र बाबू इत्यादि वीर सपूतों ने हाथ पर हाथ रख कर बैठे होते तो आज हम गुलामी की जंजीर में जकड़े होते हैं । आजादी का जश्न नहीं मनाते, तिरंगा झंडा नहीं पफहराते। भारत के वीर सपूतों ने अपने क्षमता को पहचाना, अपने शत्तिफ को पहचाना और भारत माता को आजादी दिलाई, उनकी सोच बहुत हीं ऊंचा था, उनका सोंच विशाल था, इसलिए उन्हें हम याद करते हैं । आप भी ऐसे कार्य करें, ताकि आने वाला समय,आने वाला कल,आपको याद करता रहे। आप मुझे २०२५ तक वैज्ञानिक भारत के नवनिर्माण में सहयोग, सहायता प्रदान करेंगे। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है आपके ऊपर। आज का भारत डिजिटल भारत हैं और इस भारत के गाँधी श्री नरेन्द्र मोदी एवं लौह पुरूष राजनाथ सिंह एवं चाणक्य श्री अमित शाह जी है।

जय हिंद, वंदे मातरम, भारत माता की जय।

डॉ. वासुदेव कुमार शर्मा
प्रधान संपादक

NEW PARLIAMENT OF INDIA

OLD PARLIAMENT OF INDIA

Dr. Basudeo Kumar Sharma (Prime Editor) **Vigyanmev Jayate**

(National Hindi English Scientific Magazine of India)

Website : www.vigyanmevjayate.org | **Email :** vigyanmevjayateworld@gmail.com

Contect No.: +91 9470880005 (All India)